तुझको चलना होगा

सीमा जैन 'भारत'

सीमा जैन 'भारत'

2016 से लेखन शुरू किया है।

एक स्वतंत्र लेखक, मेरी लघुकथाएं, कहानी, आलेख, कविता और बाल साहित्य से जुड़ी रचनाएं, (दैनिक भास्कर, नईदुनिया, दिल्ली प्रेस, कादम्बिनी, बच्चों का देश, बाल भास्कर, देवपुत्र) और अन्य कई साहित्यिक पत्रिकाओं में और समाचार- पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

अब तक प्रकाशित किताबें :

- **लम्हों की गाथा** (लघुकथा-संग्रह, भोपाल साहित्य अकादमी से प्रकाशित) 2018
- **पहले कदम का उजाला** (उपन्यास) 2019
- **उपन्यास आँचल में धूप** (उपन्यास) 2021 (शिक्षाविद् पृथ्वीराज भान साहित्य सम्मान - 2022)
- **पड़ाव और पड़ताल** (संपादक - मधुदीप गुप्ता अंक 19) में 11 लघुकथाएं शामिल

कुछ पुरस्कार :

- अंतर्राज्यीय लघुकथा- किरण पुरस्कार-2016
- कथादेश लघुकथा पुरस्कार-2018
- शब्द निष्ठा लघुकथा पुरस्कार-2018
- स्वतंत्रता सेनानी ओंकार लाल शास्त्री स्मृति सम्मान तृतीय-2019
- शब्द निष्ठा बाल साहित्य पुरस्कार-2019
- निर्मला स्मृति हिंदी साहित्य पुरस्कार 2021, (उपन्यास) पहले कदम का उजाला।
- हिंदी साहित्य भारती मध्यप्रदेश, इकाई झाबुआ द्वारा विश्व स्तरीय यात्रा वृतांत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान-2022
- अखिल भारतीय डॉ. कुमुद टिक्कू कहानी प्रतियोगिता में विशेष कहानी पुरस्कार-2022
- कथा समवेत द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित 2022 माँ धनपती देवी कथा साहित्य में प्रथम पुरस्कार।
- कई कहानियां, सम्मानित और संग्रह में प्रकाशित हुई हैं।
- बाल प्रहरी (बाल पत्रिका) द्वारा आयोजित पुष्पा जोशी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता 2021 में द्वितीय स्थान।

तुझको चलना होगा

(उपन्यास)

सीमा जैन 'भारत'

बोधि

साहित्य जन-जन के लिए

बोधि

साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
फोन : 0141-2213700, 9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © सीमा जैन

प्रथम संस्करण : जनवरी, 2023

ISBN : 978-93-5536-307-7

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर

मूल्य : ₹ 150/-

TUJHAKO CHALANA HOGA (NOVEL) by Seema Jain 'Bharat'

यह किताब समर्पित है मेरे गुरु, मार्गदर्शक
आदरणीय श्री जगदीश तोमर जी को,
जिन्होंने मुझे मेरी हर कृति के प्रकाशन में
संबल दिया है! उनका स्नेह और आशीर्वाद
सदा मेरे साथ रहा है।

मेरी बात

जीवन सुख और दुख से मिलकर बना है। इनके आने और जाने से जीवन में बहुत सारे बदलाव भी आते हैं। बिलकुल वैसे ही जैसे फूलों की महक के पास से गुजरना या कांटे की चुभन को महसूस करना।

खुशबू या दर्द से हमने क्या सीखा? स्वयं को कैसे रूपांतरित किया? क्या इन दोनों के आने और जाने से हम अविचलित रह पाए? क्या अपने अंदर समता, सहजता को बचा सके? यही एक अग्नि परीक्षा है, जो हर इंसान देता है और इसके परिणाम भी भोगता है। जैसा मन वैसा प्रतिबिंब! यही जीवन है।

सिर्फ फूल या कांटे तो किसी के हिस्से में नहीं आते हैं। मगर कांटों पर चलते हुए मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना आसान नहीं है। इस उपन्यास में मैंने राम शास्त्री जैसे शिक्षक के जीवन मूल्यों को लिखा है तो राजीव शर्मा जैसे कोचिंग सेंटर चलाने वाले व्यापारी को भी चित्रित किया है।

आज पैसे के पीछे भागते युवा और संस्कारों के साथ अपनी जड़ों को सींचते युवा भी समाज में हैं। नारी के या कहें हर इंसान के अनेक रूप हैं। जितने इंसान हैं, उतनी ही विविधता उनकी सोच में भी होती है।

ऐसे ही नारी पात्रों को मैंने चुना है जिनमें एनजीओ चलाने वाली महिला हैं तो अपनी भतीजी को घर से निकाल देने वाली सरला भी है। शादी को झूठ की नींव पर रखने वाली रुबी तो बिना शादी किए भी अपने प्रेम को सहेजने वाली वसुधा भी है।

मेरी बात में कुछ आभार भी शामिल हैं। डॉक्टर अखिलेश पालरिया जी, जिन्होंने मेरी स्क्रिप्ट को पढ़कर उसमें मात्राओं के सुधार के साथ मुझे भेजा था। हर किताब प्रकाशित होने से पहले मन में यह बात आती ही है कि क्या मैंने ठीक-ठाक

लिखा है? मैं जो कहना चाहती थी, उसे कह पाई? इसका जवाब अखिलेश जी ने अपनी समीक्षा के माध्यम से दिया था। उसने मेरा मनोबल बढ़ाया।

बोधि प्रकाशन के नाम की गरिमा को स्थापित किया है-सिर्फ प्रकाशक नहीं, एक वरिष्ठ संवेदनशील लेखक श्री मायामृग जी ने। उनके सान्निध्य में किताब का प्रकाशित होना सुखद है! मैं उनकी भी आभारी हूं!

मेरे दो उपन्यासों को आपने अपना स्नेह दिया, अब मैं आपको अपना तीसरा उपन्यास सौंपती हूं। आपकी प्रतिक्रिया के इंतजार में...

-सीमा जैन 'भारत'

कबीर और रुबी

गाडरवारा के सरकारी स्कूल में जब कबीर की नौकरी लगी तो उसने पायोनियर कोचिंग को छोड़ने का मन बना लिया था। यह बात जब उसने रुबी को बताई तो वह गुस्से से पागल हो गई!

''क्या जरूरत है, तुम्हें अब इस नौकरी की?'' सुनते ही रुबी का दिमाग घूम गया।

''यह तो मैंने कोचिंग ज्वॉइन करते समय ही बोला था।'' कबीर ने उसे याद दिलाया। यह बात उसने नौकरी ज्वॉइन करते समय और शादी से पहले भी कही थी।

''हां, पर तब हमारी शादी नहीं हुई थी। एक सैटल्ड लाइफ के बाद यहां से जाने की बात करना तो बेवकूफी लग रही है।'' रुबी ने नाराज़गी के साथ कहा।

''शादी से मेरे विचार तो नहीं बदल सकते हैं!'' कबीर इस बहस को बढ़ाना नहीं चाहता था। पर अपनी सोच भी नहीं बदल सकता था।

''जबलपुर जैसा शहर और हमारी कोचिंग में एक बड़ी पोस्ट, एक बिजनेस जितना पैसा, यह क्या कम है, यहां रुकने के लिए?'' रुबी ने सीधे वही दिखाया, जो यहां रुकने का कारण हो सकता है।

''पैसा, वह भी शिक्षा से, व्यापार की तरह! यह तो कभी मेरी इच्छा नहीं रही। यहां मेरा दम घुटता है!'' कबीर ने साफ जवाब दिया।

''दम गरीबी में घुटता था या...'' अब तो रुबी सुलग उठी। रुबी उसे वह सब याद दिलाना चाहती थी, जो उसकी बहन के इलाज के लिए उसके पापा ने किया था।

''वह मेरी ज़िंदगी का सबसे बुरा दौर था। तुम सब जानती हो!'' एक आह भरते हुए उसने कहा।

''हां, पर आज तुम मेरे पति हो और तुम्हारी मेरे प्रति भी कोई जिम्मेदारी है!''

रुबी को यह समझ नहीं आ रहा था कि वह कौनसा तीर मार कर कबीर को रोक ले।

''जिम्मेदारी से तो मैं अभी भी मना नहीं कर रहा हूं! तुम्हारी जिम्मेदारी, पूरी तरह से उठाने को तैयार हूं।'' कबीर ने भी बात को ख़तम करने के मन से कहा। अब वह इस जगह से दूर जाने को बेताब था। वह ज्यादा बहस करना नहीं चाहता था।

''मैं गाडरवारा नहीं जा सकती हूं!'' रुबी ने हाथ में पकड़ी हुई किताब को फेंकते हुए कहा।

जमीन पर पड़ी किताब को कबीर ने उठा कर ऊपर रखा और पूछा ''ऐसी क्या मजबूरी है? गाडरवारा भी कोई छोटी जगह नहीं है और जबलपुर के पास ही तो है। तुम जब चाहो, यहां आ सकती हो!''

''तुम पापा से बात करना। वही तुम्हें बताएंगे कि मैं गाडरवारा क्यों नहीं जा सकती हूं!'' कमरे से बाहर निकलते हुए रुबी ने कहा। दरवाज़े पर अपना गुस्सा निकालकर वह बाहर चली गई। रुबी के गुस्से को दरवाजे ने अपने जिस्म पर सहा।

एक भड़ाक की आवाज़ हुई और रुबी तेजी से बाहर निकल गई। जब कबीर ने मिस्टर शर्मा को अपनी नौकरी की बात बताई तो वह भी रुबी की तरह असहज हो गए।

राजीव शर्मा, कबीर के ससुर और रुबी के पिता हैं। जिन्होंने तीन बार यूपीएससी में असफल होने के बाद बच्चों को मैथ्स पढ़ाना शुरू किया था। एक कमरे में गणित पढ़ाने वाले शर्मा सर, बहुत ही जल्द एक कोचिंग सेंटर के मालिक बन गए थे। यह बात अलग है कि उन्होंने इस सफलता के कारण बहुत कुछ खोया भी था। पचास के आसपास की उम्र, एकदम दुबले पतले, काले रंगे बाल, सुनहरी चश्मा, महंगे कपड़े, चमकते जूते पहनने वाले कबीर के ससुर की आवाज़ उनकी दौलत और सफलता जितनी ही वजनदार थी।

अपने भव्य ऑफिस में बैठे वह किसी से फोन पर बात कर रहे थे। कबीर के

सामने बैठे रहने के बाद भी, उन्होंने अपनी बात इत्मीनान से खत्म की। कबीर के सवाल के बदले उन्होंने भी वही सवाल किया जो रुबी ने किया था।

''क्या जरूरत है जाने की? यहां जो है, वो सब भी तो तुम दोनों का ही है!''

''मैं शिक्षा को व्यवसाय नहीं, एक धर्म समझता हूं। जो मानव का उत्थान कर सके। जो कमज़ोर हैं, वो इतनी महंगी शिक्षा नहीं ले सकते हैं। मैं अब उनके लिए काम करना चाहता हूं! बच्चों को स्कूल में ही समुचित मार्गदर्शन मिल जाए ताकि उन्हें ट्यूशन की जरुरत ही नहीं हो!'' कबीर ने अपनी बात कही।

''यह सिद्धांत उस दिन कहां गए थे जब ...'' राजीव ने ऊंचे और रूखे स्वर में पूछा।

''वो दिन मेरी मजबूरी के थे। पर तब भी मैंने अपनी बात रखी थी। उस समय आपने मेरी जो सहायता की उसके लिए मैं आपका एहसानमंद हूं। पर अभी रुबी ने मुझे आपके पास भेजा है। यह समझने के लिए कि वह मेरे साथ गाडरवारा क्यों नहीं जा सकती है?'' कबीर को उसकी मजबूरी की याद दिला कर कमजोर किया जा रहा था। जो उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचा रहा था।

आज तक तो ऐसी कोई स्थिति ही नहीं आई, जब ये बाप-बेटी कबीर से इस कदर नाराज़ होते। हां, लाइफ स्टाइल से जुड़ी तकरार उनके वैवाहिक जीवन का हिस्सा ही रही थी। आज पहली बार कबीर वह कर रहा था, जो इन दोनों को मंजूर नहीं था।

राजीव ने अपनी बात कहना शुरू किया-''मेरी बच्ची के साथ धोखा हुआ था। रुबी की शादी गाडरवारा के एक इंजीनियर से हुई थी। वह शादी रुबी ने अपनी पसंद से की थी। लड़का बहुत सामान्य परिवार का था। हमारी कोचिंग में ही पढ़ने आता था। किसी संस्था ने उसकी शिक्षा का खर्च उठाया था। जिसके कारण वह यहां पढ़ पाया था। रुबी की पसंद के आगे मैं झुक गया। वह भी अजीब पागल लड़का ही था। एक मल्टी-नेशनल कम्पनी में काम करने की जगह उसने अपना व्यवसाय शुरू करना पसंद किया था। वह भी अपने गांव गाडरवाडा में। उसे फाइबर ग्लास का काम करना था। मैकेनिकल इंजीनियरिंग के बाद एक अच्छी नौकरी को छोड़कर यदि कोई गरीब,

गांव में अपना व्यवसाय शुरू करे तो उसकी हालत मजदूरों जैसी ही होगी। जिनके पास पूंजी हो, वो सफल हो जाएं यह भी जरूरी नहीं होता है तो फिर बिना पैसों के कोई कैसे सफल होता? उसने घर में ही अपने व्यवसाय की शुरुआत की थी। उसके पिता भी उसके साथ काम करते थे। एकदम मजदूरों जैसा हाल था उनका। उसने फाइबर ग्लास (एक बेहतर प्लास्टिक) के कूलर बनाने से अपना काम शुरू किया था और खुद्दारी इतनी कि मुझसे कोई सहायता लेने को तैयार नहीं था। ग़रीबी और उसकी अपने व्यापार की जिद ने मेरी बेटी को बहुत दुख दिए थे। ऐसी हालत में रुबी उस घर में चार महीने भी न रह पाई थी। वह लड़का जैसा दिखता था वैसा था ही नहीं! उसके घर के लोग रुबी को बहुत परेशान करते थे! उसके बूढ़े माता-पिता की सेवा करके भी रुबी उनको खुश नहीं रख सकी थी। चार महीने बाद ही वह यहां आ गई और उनका तलाक हो गया था।'' राजीव ने ठंडी सांस लेते हुए कहा।

''इतनी बड़ी बात आपने मुझसे छिपाई कि यह रुबी की दूसरी शादी है?'' कबीर को समझ नहीं आया कि वह अब क्या कहे? कैसे अपना गुस्सा जाहिर करे।

''यह बात हमने तुमसे शादी के समय छिपाई थी, सिर्फ इसलिए क्योंकि वह शादी भी क्या कोई शादी थी?'' उन्हें अपनी बात छुपाने का कोई मलाल नहीं था। उन्होंने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया। वैसे भी इंसान की बैचेनी उसकी कमजोरी से जुड़ी होती है। किसी कमजोर के सामने, अमीर कब बेचैन हुआ है?

''मैं गरीब, जरूरतमंद और तकलीफ में था। आपने मेरा साथ दिया। साथ ही रुबी से मेरी शादी हुई। यह सच्चाई क्या उससे छिपाई जा सकती थी जो अमीर और ताकतवर होता? आप दोनों ने मुझे धोखा दिया है! उसके बावजूद मैं एक पति से जुड़े हर फर्ज को पूरा करूंगा। पर अब यहां नहीं रह सकता हूं। मैं कल सुबह ही यहां से चला जाऊंगा!'' कहकर कबीर उठ गया। कबीर ने अपने आगे बढ़ते कदम रोकते हुए कहा ''हां, एक बात कहना चाहूंगा!''

''क्या?'' राजीव ने बेरूखी से पूछा।

''रुबी ने आज तक एक कप चाय नहीं बनाई है। मैंने उसको हमेशा नौकरों को डांटते या उनके काम में मीनमेख निकालते हुए ही देखा है। विश्वास नहीं होता कि

उसने अपने सास-ससुर की सेवा की होगी। यह बात झूठी लगती है।'' कहता हुआ कबीर जवाब की प्रतीक्षा किये बिना ही बाहर निकल गया।

आज पहली बार उसने इस घर में अपने ससुर से कुछ कड़वा कहा था। आज इसे सच कहना भी अजीब लगता है क्योंकि कल जिसे बेईमानी कहते थे, वह आज की स्मार्टनेस बन चुकी है।

और कल जिसे सच कहते थे, वह आज सिर्फ कड़वाहट का काम ही करता है। तो क्या जीवन सच से दूर और झूठ के साए में ही पनप रहा है?

नहीं, आज भी जीवन अपने पूरे सौंदर्य के साथ सांस ले रहा है। बस उसके दायरे थोड़े घटने लगे हैं। कल वो राम में और कबीर में था। आज वो कबीर के पिता और कबीर में जीता है। इन जैसे और भी कई लोग होंगे, जिनमें राम जीते हैं।

कबीर को लगा कि आज वह एक राहत महसूस कर रहा है। इस जगह से बाहर जाने का उसे वो बहाना मिल गया, जिसके बारे में वह भूल चुका था।

कोचिंग सेंटर में शिक्षा के नाम पर किस तरह से अमीर ही नहीं, गरीब को भी बेवकूफ बनाया जाता है। उनको ठगा जाता है। बच्चा कुछ बन जाए, इस अरमान पर माता-पिता कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। जहां सबके बच्चे भाग रहे हैं वहां तो सबको भागना ही होता है।

यही दौड़ कितनों के जीवन को बर्बाद कर देती है। आज शिक्षा से बड़ा कोई व्यवसाय नहीं। यह बात कही जा रही है। कबीर जैसे लोग चाहकर भी यहां वह स्थापित नहीं कर पाएंगे जो कभी शास्त्री जी ने अपनी ज़िंदगी में किया था।

आज कबीर को बहुत अच्छा लगा कि अब वह भी वही काम करेगा जो कभी उसके पिता ने किया था। सरकारी स्कूल में बच्चों को शिक्षा देना उसे बहुत सुकून देगा।

कबीर और रुबी की शादी वैसे भी कबीर के लिए एक समझौता ही थी। पिछले एक साल में कबीर ने सिर्फ समझौते ही किए हैं। उसे जो पसंद था, जो उसकी चाहत थी; वह सब उससे छूट गया था। रुबी की पसंद की लाइफ स्टाइल ने, उसे एक चाबी का खिलौना बना कर रख दिया था।

शादी के बाद जब एक बार रुबी उससे बोली ''चलो, थोड़ी शॉपिंग करनी है!''

कबीर उसके साथ गया था। पर जब उसकी 'थोड़ी शॉपिंग' देखी तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि घर में अलमारी में कपड़े रखने की जगह नहीं है। उसके बावजूद इतनी शॉपिंग? पर कबीर क्या कहता? जब रुबी ने उसके लिए एक जगह से कपड़े पसंद किए तो कबीर बोल उठा ''रुबी, मुझे तो अभी कपड़ों की कोई जरूरत नहीं है! मेरे पास बहुत कपड़े हैं!''

''कबीर, क्या कुछ शर्ट और दो जींस को, कपड़े हैं! ऐसा कह सकते हैं?''

''हां, मैं तो कह सकता हूं!'' कबीर ने सहज ही कह दिया था।

पर रुबी के जवाब ने उसे धक्का ही दिया था ''तुम्हारे लिए हो सकते हैं! हमारे लिए तो नहीं!'' रुबी, अब कबीर को अपने जैसा बनाना चाहती थी। रुबी का जीवन स्तर कबीर से बहुत अलग था। हां, देखने में यह जोड़ी बड़ी ही अच्छी लगती थी। रुबी, लंबी, दुबली-पतली सुंदर लगती थी। उसका रहन-सहन उसे और भी आकर्षक बना देता था। कबीर भी लंबा, चौड़े कंधे, हल्की कत्थई आंखों के साथ बहुत हैंडसम लगता था। कबीर एक बात कई बार सोचता कि रुबी उसे मोहित क्यों नहीं करती है? जबकि वह चमड़ी के रंग, नैन नक्श सबमें अच्छी ही है।

इसका जवाब उसे एक दिन मिल गया। जब वह अपनी खाना बनाने वाली अम्मा को बुरी तरह से डांट रही थी। उसकी आंखों में क्रोध था। तब कबीर के मन में यह बात उठी कि इंसान अपनी आंखों से सुंदर लगता है। उनमें बसे भाव ही उसके आकर्षण का हिस्सा बनते हैं। यदि मन कठोर और अहंकारी है तो आकर्षण खत्म हो जाता है। आकर्षण का रिश्ता लचीलेपन से होता है। और रुबी तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में लचीली नहीं हो सकती है। उसका यह तनाव ही उसकी आंखों को पत्थर-सा बना देता है।

जीवन के स्तर को मिलाने वाली रुबी यह नहीं समझ पाई कि जब तक मन न मिले रहन-सहन के स्तर मिलाने से कुछ भी नहीं हो सकता है। दूरियां उतनी ही रहेगी जितनी सूखी नदी के दो किनारे। जल से भरी नदी के दो किनारे, कभी मिलते तो नहीं पर उनके बीच का पानी ही उन दोनों को जोड़े रखता है। वह दूर होकर भी पास और साथ ही रहते हैं। पानी उन दोनों की बातों को प्रवाह देता है।

पर सूखी नदी के दो किनारे के बीच संवाद की सारी संभावना ही समाप्त हो जाती है। रुबी और कबीर का साथ, एक सूखी नदी जैसा ही था, जिसमें जल की कोई आस भी नहीं थी। अब यहां सावन भी नहीं आ सकता था। रिश्तों की जमीन का, यह एक ऐसा रेगिस्तान था, जहां पानी की बूंदे कभी बरस नहीं पाई।

जब कबीर ने लेट नाइट पार्टी में जाने से मना किया तो रुबी ने गुस्से से कहा ''तुम मेरे लाइफ पार्टनर हो! मैं अपनी इच्छा किसके साथ पूरी करूं? यह तो तुम्हारी भी चॉइस होनी चाहिए! नहीं तो इसे ड्यूटी समझकर ही पूरा करो!''

रुबी ने कबीर को जीवन साथी का फर्ज याद दिलाया था या कुछ और कहना चाहती थी, यह तो वही जाने। पर उस दिन के बाद कबीर ने कभी किसी पार्टी में जाने को मना नहीं किया था। हां, रूबी ही उसके ठंडे रवैये से बहुत जल्दी थक गई थी।

एक रात पार्टी से बाहर निकलते हुए उसने कहा ''तुम्हारे साथ पार्टी में जाने का कोई मतलब नहीं है। न ड्रिंक, न डांस और न ही कार्ड्स। यार, तुम लोग कैसी लाइफ जीते हो? तुम्हारे लुक्स और क्वालिफिकेशन से तुम्हारी सोच बिल्कुल मैच नहीं करती है। इट्स वेरी सफोकेटिंग!'' एक बहुत हैंडसम और क्वालीफाइड नौजवान इतना पिछड़ा हुआ कैसे हो सकता है? यह रुबी को समझ नहीं आता था। पैसा मिले जाए, तो इसी लाइफ स्टाइल के लिए दुनिया तरसती है। कबीर को यह सब आसानी से मिल रहा था, पर वह उसे छू ही नहीं पाता था। और कबीर की यही विरक्ति उसे आक्रोश से भर देती थी।

''फॉर मी अल्सो! मैं दिल से गरीब हूं। यह बात समझने का तुमको समय ही नहीं मिला!'' तड़प कर इतना ही कह पाया था कबीर। यह जीवन उसे भी कहां रास आ रहा था?! खुश होने के लिए न तो शराब की जरूरत है न ही जुआ खेलने की। मन की शांति से बड़ा कोई सुख नहीं है।

मन खुशी में नाच सकता है पर उसके लिए खुशी हो तब ना! और यदि वह हो तो बाहर भटकने की, रातों को जागकर सुबह बारह बजे उठने की कोई जरूरत नहीं होती है।

शराब से ज्यादा नशा तो जीवन की सहजता में मिल जाता है। उसके लिए मन में संतोष और दिल में प्यार होना चाहिए। जिसकी समझ इन लोगों को नहीं है। इसे

दौलत के पीछे भागने वाले कभी नहीं समझ सकते हैं। सब कुछ हो कर भी यह इतने बेचैन हैं कि किसी की गाड़ी का साइज़ तो किसी की ज्वेलरी इन्हें बीमार कर देती है। यह जानते ही नहीं हैं कि पेट की रोटी से बड़ी कोई जरूरत ही नहीं है।

यह लोग मनोचिकित्सक के पास जा सकते हैं। पर किसी गरीब को रोटी खिलाकर या किसी की सहायता करने से भी खुशी मिल सकती है, यह बात ये नहीं मानेंगे।

ड्राइवर को रात की दो बजे तक होटल के बाहर रोकना और उसकी भूख के बारे में भी नहीं सोचने वाली रुबी को एक दिन कबीर ने कहा था कि ''तेजसिंह को घर जाने दो! इसे रात तक रुकने की क्या जरूरत है? हम दोनों ड्राइव कर सकते हैं!''

''इसे यह बात बता कर ही नौकरी पर रखा था। यह इसकी ड्यूटी है।''

''हम अंदर खाना खाते हैं और यह बाहर भूखा...!''

''अपने घर से रात का खाना लेकर आए! इसका खाना हमारी जिम्मेदारी नहीं है!''

''सुबह की बनी रोटी-सब्जी रात को खाएगा तो वह बदबू मारने लगेगी!''

''यार, अब एक ड्राइवर की भूख डिस्कस नहीं हो सकेगी! ना ही मैं उसे होटल का खाना खिला सकती हूं! जहां एक रोटी की कीमत पांच सौ रूपए है!''

''अपने घर से कुछ तो दिया जा सकता है!''

''प्लीज, स्टॉप दिस नॉनसेंस!'' कहते हुए रुबी ने कबीर को उसकी हद समझा दी थी।

जीवन शैली अलग हो सकती है। दोनों ओर से बदलाव की चाहत हो, तो रिश्ता पनप सकता है। मगर जब सोच एक बुलंद, कभी न खुलने वाले दरवाजे में कैद हो तो प्रेम भी उस दरवाजे के बाहर ही दम तोड़ देता है।

उस ड्राइवर के लिए हुई बहस के बाद कबीर का रुबी के साथ आना-जाना लगभग बन्द हो गया था। वैसे भी कबीर खुद को कोचिंग सेंटर तक ही समेट कर रखना पसंद करता था।

कबीर इस घर में इतना भेदभाव देख चुका था कि वह यह सब देख कर परेशान हो जाता था। किसी के पिता मर जाएं और फीस, दस दिन देरी से आ जाए तो यह लोग उस मासूम को जलील करने से बाज नहीं आते हैं।

ऐसे ही एक लड़के की फीस एक बार कबीर ने जमा कर दी थी। जब उसे पता चला कि उसके परिवार के लोगों का एक्सीडेंट हो गया है। सब लोग अस्पताल में भर्ती हैं।

ऐसे में फीस जमा न होने पर इस बच्चे के साथ क्या हो सकता है? इसकी कल्पना करते ही कबीर घबरा गया था। एक प्रतिभाशाली लड़के का भविष्य सिर्फ इस कारण खराब हो जाएगा, यह सोचकर उसने उस लड़के की फीस जमा कर दी थी। जिसे एक महीने बाद उसके पिता ने आंसुओं में भिगो कर उसे वापस किया था।

उस दिन रुबी ने कबीर से पूछा था कि ''तुमने अपने अकाउंट दस हजार रुपये क्यों निकाले हैं?'' तब कबीर को पता चला कि उस पर किस कदर निगाह रखी जाती है। एकदम से कोई बहाना भी उसके दिमाग में नहीं आया।

तब कबीर ने सच ही कहा था कि ''अनिल की फीस जमा की है, नहीं तो उसे परेशान होना पड़ता या फिर वह बीच में ही क्लास छोड़ देता!''

''हम कोई चैरिटेबल ट्रस्ट नहीं चला रहे हैं! पायोनियर के फैकल्टी मेंबर, यदि ऐसे ही फीस जमा करते रहे तो फिर हम गुरुद्वारे पर कटोरा लेकर बैठ जाते हैं। यह करके तुम कहीं ना कहीं स्टूडेंट को बेईमानी करना सिखा रहे हो। कल हर लड़का, कोई ना कोई बहाना लेकर आएगा और तुम अपनी पूरी एक महीने की सैलेरी दान में उड़ा देना। वैसे भी तुम पर घर की कोई जिम्मेदारी तो है नहीं!''

''मैं क्या करूं? मेरी भी मजबूरी है! बच्चा जो देखता है, वही तो सीखता है। मैंने तो यही देखा कि मेरे बाबूजी अपनी तनख्वाह से लोगों की कैसे सहायता करते थे और कैसे अपने परिवार को चलाते थे। इसलिए सहायता करना मेरी फितरत है। सहायता लेने वाले बेईमान होते हैं, यह मैं सोच भी नहीं पाऊंगा। यह सच है कि यह सब तुम्हारा दिया हुआ है। यह पैसा मुझे कैसे खर्च करना है? इसका निर्णय तुम्हारा होगा और मेरा इस पर कोई जोर नहीं है। मेरे उस पहले खर्चे की जानकारी तुम्हारे पास है। मुझे लगता है कि मैं जब तक यहां हूं, मुझे मेरी बहन के लिए लिया हुआ उधार ही

चुकाना है। बिलकुल वैसे ही जैसे दो हजार रूपए के लिए एक व्यक्ति को बंधुआ मजदूर बना लिया जाता है। उसका सब कुछ गिरवी रखा जाता है और वह इंसान उस जमींदार के पास एक जानवर की तरह रहता है। जिसकी तीन पीढ़ियां भी उस कर्ज को नहीं चुका पाती है। आज उस अनपढ़ किसान में और मेरी हालत में कोई खास फर्क नहीं है। मैं भी बंधक ही हूं। आज पहली बार लगा कि हिसाब को समझने के लिए पढ़ा-लिखा नहीं, अमीर होना जरूरी है। नहीं तो मैथ्स का टॉपर भी, गंवार ही साबित हो जाता है। मुझे यह समझ नहीं आता कि तुमने मुझे खरीदा क्यों? तुम तो मुझसे बेहतर गुड्डा खरीद सकती थी।'' अपने कार्ड से पहली बार पैसे निकालने पर रुबी ने उसका जो अपमान किया, उससे वह तिलमिला उठा था। हर बार ऐसी ही तीखी बहस उन दोनों के बीच के फासले बढ़ा देती थी।

अब ऐसे ही इस रिश्ते से जुड़ी हर जरूरत पूरी होने लगी थी। उनकी सोच का फर्क हर जगह नजर आने लगा था। उन दोनों का सोचने का दायरा एकदम ही अलग था। एक के साथ कदम कदम पर मानवता जीती थी और दूसरा सिर्फ किसी को वसूलने में ही विश्वास रखता था।

जितनी चाहे क्लास लगवा लो! कबीर चुपचाप हर क्लास में चला जाता था। मिस्टर शर्मा ने भी उसका उपयोग करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। रेगुलर क्लास, एक्स्ट्रा क्लास के कोल्हू में उन्होंने कबीर को जोत दिया था और कबीर भी आँख पर पट्टी बांधे घूमना ही पसंद करता था। उन्हें भी समझ आ चुका था कि कबीर बेहद आकर्षक और शिक्षा में रुबी से बहुत आगे हैं। मगर उसकी आदतें रुबी के और उनके घर के स्तर तक नहीं पहुंच सकती है। वहां तो वह सचमुच का कबीर ही रह गया है।

शर्मा जी से बात करके कमरे में जाकर कबीर ने रुबी को इतना ही कहा ''किसी भी रिश्ते की बुनियाद, बेईमानी कैसे हो सकती है? तुम्हें एक बार भी नहीं लगा कि तुम अपने लाइफ पार्टनर से कुछ छुपा रही हो?''

''इतना दुखी होने की जरूरत नहीं है! हमने कौनसा तुमसे कुछ लिया है? इस घर ने तुमको दिया ही है! तुम्हारी बहन के इलाज के लिए तुमने कितने पैसे लिए थे? वह भूल गए क्या? इस कोचिंग के किसी भी एंपलाई को इतना पैसा नहीं मिला, जितना तुमको मिला था!''

‘‘मैं अपनी बहन और परिवार से इतना प्यार करता हूं कि उनके लिए कुछ भी कर सकता था। पर हमारी शादी तो उन सबके जाने के बाद हुई। तब तो तुम मुझे सच बता सकती थी। हां, तब मेरी हालत तो ऐसी थी कि मैं अपनी बहन के जीते जी भी तुमसे आंखें बंद करके शादी कर लेता। पैसे की चमक से झूठ नहीं छुप सकता है। वैसे एक बात और है कि यदि मुझे तुमसे प्यार मिल जाता तो मैं वसुधा को भूल जाता। वह शायद किस्मत को मंजूर नहीं था। जो हुआ, अच्छा ही हुआ!'' आज कबीर ने वह बात कही जो उसे भी याद नहीं थी। पिछला, बहुत कुछ वह भूल चुका था। आज सब एक बार फिर उसे याद आ गया।

‘‘तुम किसी से प्यार करते हो? यह तुमने पहले नहीं बताया? यह तो बेईमानी है! एक और बात याद रखना, सच से न तो पेट भरता है और ना ही बहन का इलाज हो सकता था।''

‘‘हां, मैं पैसे की अहमियत से इंकार नहीं कर सकता हूं। पर जब शादी छुपाई जा सकती है तो प्रेम क्यों नहीं? प्रेम तो सिर्फ एक एहसास है। जिसमें दो इंसान, एक अनजानी, अनाम डोर से बंधे रहते हैं। विवाह को तो एक बंधन कहा गया है। जब तुमने उसकी गरिमा को ही धूमिल कर दिया... किसी की मजबूरी का फायदा उठाकर हम उस रिश्ते को झूठ की चादर ओढ़ा दें? जो झूठ मैंने सहा वह तुम्हें सहना पड़ता तब भी तुम्हारा तर्क यही रहता क्या?''

‘‘तुम मुझे धोखा क्यों देते?'' रुबी ने अकड़ते हुए कहा।

‘‘क्यों, यदि तुम गरीब होती तब? गरीब के लिए रोटी और मजबूरी से बड़ा कुछ भी नहीं होता है। फिर यह धोखा तुम भी खा सकती थी।''

‘‘जो है नहीं, उसके बारे में क्या बात करना!''

‘‘जो है, वह आज बेमतलब हो गया! मेरे लिए ...'' अपनी बात अधूरी छोड़कर कबीर कमरे से बाहर निकला और बालकनी में चला गया। अपना परिवार ख़तम होने के बाद यह घर ही उसे अपना परिवार लगता था। आज उसे लगा, वह एक बार फिर बिल्कुल अकेला हो गया है।

बीते दिन

कबीर का मन दुखी था। अचानक उसे विश्वास की याद आई। उसने विश्वास को फोन लगाया। उसे याद आया कि उसे सबसे पहले उससे ही बात करनी थी। यह नौकरी उसे विश्वास के कारण ही मिली थी। विश्वास, जो यूपीएससी की कोचिंग में उसके साथ ही था।

दोस्ती और दिल के तार कब किससे जुड़ जाएं कोई नहीं जानता है। कहते हैं बचपन की दोस्ती ही हमेशा काम आती है। उसके बाद मिले दोस्त तो प्रोफेशनल दोस्त होते हैं। शायद शिक्षा के समय की दोस्ती में कहीं न कहीं संघर्ष, प्रेम और एक-दूसरे को समझने का जज़्बा रहता है।

वह इस रिश्ते को निर्मल कर देता है। वही रिश्ता विश्वास और कबीर के बीच रहा था। विश्वास के कहने पर ही कबीर ने उस फॉर्म पर सिग्नेचर कर दिए थे, जिसके कारण आज कबीर को यह नौकरी मिल गई।

विश्वास को फोन लगाकर कबीर ने कहा ‘‘यार, तूने उस दिन मेरा बहुत बड़ा काम किया था। जिसका फल मुझे आज मिला। मुझे सरकारी स्कूल में नौकरी मिल गई। मैं अब इस कोचिंग के एहसान से बाहर निकल गया!''

‘‘अरे, यह तो बहुत अच्छा हुआ कबीर! मगर तुझे क्या जरूरत है यह नौकरी करने की? तू चाहे तो फिर से यूपीएससी दे सकता है। पर तू तो अपनी कोचिंग में...''

‘‘नाम मत ले इन धोखेबाजों का! इन्होंने अपनी कोचिंग क्लास नहीं, लोगों को ठगने की संस्था खोली है। जिसमें उन्होंने पढ़ाई नहीं, ज़िंदगी से जुड़े झूठ के साथ मुझे बांध रखा था।''

‘‘क्यों ऐसा क्या हो गया?''

''रुबी की यह दूसरी शादी है। उसकी पहली शादी की बात उन्होंने मुझसे छुपाई थी। आज जब मैंने सरकारी नौकरी के कारण गाडरवारा जाने की जिद कि तब उसके पिता ने मुझे बताया। मेरी यह शादी एक साल भी नहीं चल सकी। अब मैं इन लोगों के साथ नहीं रह सकता हूं। हां, रुबी चाहे तो मेरे पास आ सकती है। वैसे यह मुमकिन नहीं कि वह मेरे पास आए। जो लड़की अपने पिता के घर में हर सुविधा के बाद भी खुश नहीं रह सकती है। वह गांव में क्या रहेगी?''

विश्वास को समझ नहीं आया कि वह कबीर को कैसे सांत्वना दे? उसे नौकरी की खुशी, शादी के झूठ के नीचे दबी हुई दिख रही थी।

फिर भी उसने कहा ''तू मेरे पास आ जा! दिल्ली में तेरी यूपीएससी की पढ़ाई भी हो जाएगी और तू आराम से हमारे साथ रह लेगा।'' विश्वास को लगा अब ऐसे ही वह अपने दोस्त के दर्द पर मरहम रख सकता है।

उसका भी यूपीएससी में सिलेक्शन तो नहीं हुआ था। पर उसकी दिल्ली में एक अच्छी नौकरी लग गई थी। दूसरी बार परीक्षा में बैठने से पहले ही परिवार की जरूरतें मुंह फाड़े खड़ी थी। जिसका मुंह उसकी नौकरी ही बंद कर सकती थी।

''नहीं, यार अब मुझसे वह सब नहीं होगा! अकेला ही तो रह गया हूं! मां-बाबूजी और तारा सब तो चले गए! वसुधा पता नहीं कहां अंधेरों में गुम हो गई है। अब किसके लिए पोस्ट और सुख चाहिए? तब सोचता था, सिस्टम में रहकर कुछ करूंगा। पर अब तो यह नौकरी मुझे वापस अपने गांव, अपनी जड़ों के पास ले जा रही है। मुझे भी अब अपना जीवन वैसा ही चाहिए जैसा मेरे बाबूजी का था। मैं कल ही गाडरवारा जाऊंगा। किराए का घर भी देखना होगा। मेरा मन वहां जाने के लिए एकदम तैयार हो गया है। यह सब तेरे ही कारण हो सका यार!'' कबीर ने बहुत भीगे मन से जवाब दिया।

''दोस्ती में कोई किसी के लिए कुछ नहीं करता है, जो होता है वह तो यह रिश्ता ही करवा लेता है।'' विश्वास ने कहा

कबीर बोला ''यार तू ही तो है, जिसे मैं अपना कह सकता हूं। अभी नौकरी ज्वाइन करता हूं। फिर हम जल्दी ही मिलेंगे। तब सोचते हैं, आगे क्या करना है? यदि गाडरवारा में मन नहीं लगा तो...''

''कोई भी जरूरत हो तो बता देना। गाडरवारा के सिस्टम में कौन-कौन है? मैं पता करता हूं। तुझे कोई भी जरूरत हुई तो तेरा काम आसानी से हो जाएगा। यूपीएससी की कोचिंग का यही फायदा है। कलेक्टर न बन सके पर जो आगे बढ़ गए उनसे दोस्ती तो हो ही जाती है!'' हंसते हुए विश्वास बोला।

''तू क्यों परेशान हो रहा है? सब हो जाएगा! जबलपुर के कई लोग गाडरवारा से जुड़े हैं। मैं किसी से बात करता हूं।''

''अपना ध्यान रखना कबीर!''

''हां, तू भी! हम फिर बात करते हैं!'' कहकर कबीर ने फोन बन्द किया। कबीर के मन में खुशी और गम के रंग घुल गए थे। परिवार में से कोई भी साथ नहीं है। अब उसे उस जगह कैसा लगेगा? जहां उसका परिवार था। उसकी खुशियां और उसका प्रेम था।

वह कितना अकेला हो गया है, इसका एहसास उसे आज हुआ। उसे लगा कि आज वह एक बार फिर उतना ही अकेला हो गया है जितना मां-बाबूजी के जाने पर हो गया था।

आज तक वह एक पिंजरे में जी रहा था। जहां से उसे बाहर की दुनिया और खुले आकाश से कोई मतलब नहीं था। अब उसे अपने पंख फैलाने हैं और इस आकाश में अकेले उड़ना है।

अब अपना नाम सार्थक करने समय आ गया है। उसके पास अपना कुछ भी नहीं है। अब वह अपने आसपास के लोगों की सहायता को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना सकता है। रोने के बहाने तो बहुत हैं पर अपने अतीत को जीवन का एक पड़ाव समझ कर आगे बढ़ना ही बेहतर होगा।

अपने दुख में खुद को डुबो कर समय और जीवन बर्बाद करने वाले कैसे यह कह पाएंगे कि उन्होंने राम, कृष्ण या बुद्ध के जीवन से कुछ सीख ली है। उन्हें अपने जीवन में उतारना ही उनकी सच्ची पूजा है। मंदिर में फूल चढ़ाने से या श्लोक रटने से हम ईश्वर की बनाई इस दुनिया में कोई सहयोग नहीं दे पाएंगे।

किसी को रोटी, शिक्षा या दिशा देना ही जीवन की सच्ची पूजा है। जो उसके

बाबूजी ने अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए पूरी की थी। वह अपना पूरा समय और जीवन इसी दिशा में लगा सकता है। उसकी सोच ने उसे निराशा और अकेलेपन से बाहर निकाला। उसे लगा आज उसे दोबारा मौका मिला है, अपने आप को साबित करने का।

व्यथा के गहरे सागर में जीवन में कुछ मानवता, प्रेम और इंसानियत के द्वीप निर्मित करने का। कल यह द्वीप राम ने बनाए थे। जो आज के समय में भी बनाए जा सकते हैं। आज भी कई लोग हैं जो यह पुनीत कार्य कर रहे हैं।

दशरथ मांझी हो या उसके मां-बाबूजी, उन्होंने भी अपना जीवन मानवता के नाम ही समर्पित किया था। जब तक जिंदा रहे तब तक ही नहीं, जान जाने के बाद भी उनका मन कुछ करके जाने का था।

किसी को उनकी त्वचा या जिस्म के अंग मिल जाएं! किसी का जीवन बच जाए! यही उनकी सोच थी। एक माता-पिता ने अपनी लाडली बेटी को हर दिन तड़पते हुए कैसे देखा होगा? इंसान कैसे तिल-तिल करके मरता है। उसके साथ यही मौत हर दिन उसका परिवार भी मरता है। जिसे कबीर ने बहुत करीब से देखा और भोगा था।

कबीर को लगा कि जब हम अख़बार में यह ख़बर पढ़ते हैं कि किसी लड़की पर एसिड फेंका गया या किसी को जला दिया गया तो वह हमारे लिए बस एक जानकारी ही होती है।

हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि उस घटना के बाद उस परिवार की ज़िंदगी सामान्य हो पाती है या सब कुछ ढह जाता है। बिल्कुल गरीब के कमजोर मकान की तरह या बालू के उस घर की तरह जिन्हें आंधी-तूफान या कोई और तोड़कर आगे बढ़ जाता है।

उसके मां-बाबूजी भी वैसे ही अपने मिट्टी के जिस्म को गिरा कर इस दुनिया से चले गए थे। कोई शिकवा नहीं, शिकायत नहीं। अपना कर्म पूरा किया और आगे बढ़ गए। उन्हें याद करके कबीर के आंसू बह निकले।

दो अजनबियों ने एक कमरे में अलग-अलग अपनी आखिरी रात बिताई।

कबीर के मन में यह बात तय हो चुकी थी कि वह इस घर में वापस नहीं आएगा। चाहे इस रिश्ते का अंत कैसा भी हो!

अगली सुबह उसने अपने कपड़े एक बैग में रखे। उसने वह सारे कपड़े यहीं छोड़ दिए जो रुबी ने उसे दिलवाए थे। वह अपने कमरे से बाहर निकल रहा था कि रुबी ने जलती हुई निगाहों से उसे देखा।

आज शायद पहली बार रुबी सात बजे उठ गई थी। उसने बाहर निकलते हुए कबीर से कहा ''तुमने अपनी बहन के इलाज के लिए जो पैसा लिया था, उसका क्या?''

''रुबी, अच्छा हुआ तुमने याद दिला दिया। मैं भूल गया था। ऐसा करो तुम यह कार्ड रखो। पिन तो तुम जानती ही हो। यदि कुछ कम हो तो बता देना। मैं बाकी का पैसा हर महीने भेज दिया करूंगा।''

''कबीर, मैंने अभी तुमको तलाक नहीं दिया है। तुम अपने आप को इतना आजाद मत समझो! मैं कभी भी तुम्हारे पास आ सकती हूं। तुम्हें वसुधा के साथ नहीं रहने दूंगी!'' हमेशा जीतने वाली रुबी, आज अपने आप को बहुत हारा हुआ महसूस कर रही थी।

''मैं सच कहता हूं, मैंने कल पहली बार वसुधा को याद किया था। उसे मैं बिल्कुल भूल चुका था। तुमको एक बात बताना तो मैं भूल ही गया कि हमने गंधर्व विवाह किया था। अब मेरा तुम्हारा हिसाब बराबर हो गया है। किसी ने किसी को धोखा नहीं दिया है। मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है!''

अपना फोन जमीन पर फेंकते हुए रूबी ने कहा ''यह गंधर्व विवाह क्या होता है?''

''वैसे जो भारतीय साहित्य के बारे में जो थोड़ी-सी जानकारी रखते हैं वे जानते हैं। पर तुम गूगल कर लेना!'' कहने के बाद कबीर ने गिरे हुए फोन को देखा। जिसका पीछे का भाग निकलकर एक तरफ अलग पड़ा था। आज उसने उसे उठाया नहीं। उसे यह फोन आज उनके रिश्ते जैसा ही लगा। उसे उठाने या जोड़ने का उसका मन नहीं था।

कबीर ने धीरे से दरवाजा बंद किया और बाहर निकल गया। आज इस शादी और घर से जुड़े हर अपमान का हिसाब पूरा हुआ। वह इस घर से ही नहीं निकल रहा है, इस घर से जुड़े जीवन जीने के तरीके से भी बाहर आ गया।

''साहब, चाय बन गई है।'' छोटु ने हाथ में ट्रे लिए उससे कहा। कप, बिस्किट और पानी के गिलास के नाम पर हर दिन डांट सुनने वाला छोटू आज भी सहमा हुआ ही था। किसी को पूरा दिन नीचा दिखाया जाए, उसे बेवकूफ साबित किया जाए तो उस कमज़ोर इंसान की रही सही बुद्धि भी कुंद हो जाती है। वही हाल छोटू का इस घर में था।

''नहीं, आज नहीं छोटु!'' कहते हुए कबीर ने अपनी जेब में हाथ डाला। एक सौ का नोट उसके हाथ पर रखा और उसके कंधे को प्यार से सहलाते हुए वह बाहर निकल आया। छोटु उसे बाहर जाते हुए आश्चर्य से देख रहा था कि आज साहब ने सुबह-सुबह उसे पैसे क्यों दिए और वह बिना चाय लिए कहां जा रहे हैं?

घर के बाहर बगीचे में राजीव वॉक कर रहे थे। उसने उनसे नमस्ते किया, जिसका उन्होंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। जैसा वह इस घर में आया था, वैसा ही तन्हा आज लौट रहा था।

इस जगह से आगे बढ़ते हुए कबीर को याद आया, इसी बगीचे में एक बार कबीर, राजीव के साथ बैठा शाम की चाय पी रहा था। माली ने उनके पास आकर उन दोनों को एक-एक गुलाब का फूल दिया था।

एक बुजुर्ग व्यक्ति का इतने प्रेम से झुककर फूल देना कबीर के मन को भिगो गया था। उसने खड़े होकर उनके कंधे पर हाथ रखा और कहा ''कितना सुंदर फूल है काका! यह आपकी देखभाल का ही नतीजा है जो यह फूल इतना बड़ा हो सका!''

''अरे, बेटा इसमें हमने क्या किया? यह सब तो खाद और पानी का कमाल है!'' माली के लिए इतना प्रेम और अपनापन आश्चर्य की बात थी।

वह तो जब भी साहब और रुबी बगीचे में बैठे होते तो उनको फूल देता ही था। जिसे वह लोग ले लेते थे। बदले में उसे कुछ कहना तो दूर, देखते भी नहीं थे।

अपनी बात बीच में रोककर किसी को क्या देखना? माली अपनी जगह जानते

थे। जब वह आगे बढ़ रहे थे तो कबीर ने उन्हें बिस्किट की प्लेट आगे बढ़ाते हुए कहा ''काका, आप भी यह लीजिए ना!''

जिसने उसे फूल दिया, उनका खाली हाथ आगे बढ़ना कबीर को अच्छा नहीं लगा। माली के चेहरे पर ऐसे भाव थे कि आप क्या कह रहे हो?

वह इतना ही कह पाए ''आप लीजिए! मैं काम के समय नहीं खाता हूं!'' वह तो अपना अटपटा-सा जवाब देकर हाथ जोड़कर आगे बढ़ गए। पर राजीव के चेहरे के भाव अब बहुत बदल चुके थे।

उन्होंने अपनी अधूरी चाय वहीं छोड़ दी और वह ''कुछ काम याद आ गया है।'' कह कर चले गए थे।

रात को रुबी ने जब कबीर से सवाल किया तो वह चौंक गया था। ''तुमने आज माली को बिस्किट ऑफर किए थे?''

''हां, वह हमको फूल देने आए थे।'' कबीर ने किताब पढ़ते हुए रुबी को देखे बगैर जवाब दिया।

''अब हमारा नौकर है! तो हमारे बगीचे से हमें फूल देकर कौनसा एहसान कर रहा है! मगर उसको छूना और उसे बिस्किट देना...!'' रुबी की आवाज की कड़वाहट ने उसे ऊपर देखने पर मजबूर किया।

''मैं अब समझा, तुम्हारे पापा उस समय वहां से उठकर क्यों चले गए थे? साथ ही माली काका क्यों घबरा गए थे?'' कबीर ने किताब बंद करते हुए कहा।

जिस घर में देसी ही नहीं विदेशी खाने का सामान भरा पड़ा है। वहां किसी को एक बिस्किट देने से कोई दुखी हो सकता है? कबीर के लिए इस घर के तरीके एकदम अलग थे। जो उसकी समझ से बाहर थे।

''इतनी समझ तो उसमें भी है कि उसे किसके साथ खाना और किसे छूना है! आज रुबी को गुस्सा आ रहा था कि कबीर अभी तक उनके घर के हिसाब से ढल नहीं पाया है।

''यार, मैं सच में यही नहीं समझ पाया। इंसान को इज्जत उसकी उम्र के कारण

मिलनी चाहिए या काम के कारण। छोटा-बड़ा काम, जातिगत भेदभाव मेरी समझ से बाहर है। हमने विकसित देशों से पहनावा, खानपान सब अपना लिया। पर जो सबसे बड़ी बात थी, वही नहीं अपना पाए। वहां काम करने वालों के साथ कोई भेदभाव नहीं होता है। जेनेटर हो या डिश-वॉशर, सब एक टेबल पर साथ में बैठकर खाना खाते हैं। बस से उतरते हुए लोग ड्राइवर को 'गुड डे' कहकर उतरते हैं। प्रेमचंद ने सोचा होगा कि उनकी कलम घिस गई, जातिवाद पर लिखते-लिखते, समाज कुछ तो बदला होगा। उन्हें क्या पता कि हम आज भी वहीं हैं। गरीब को बस कुएं से पानी पीने की इजाजत मिली है। मगर घरों के अंदर आज भी जाति की गंध आती है। जो हमारे बीमार मन की पहचान है। घरों में इनके अलग बर्तन, अलग टॉयलेट वह भी उनके, जिनके हाथ से बना खाना खाते हैं। किसी फाइव स्टार होटल का खाना बनाने वाले की जाति ना तो हम पूछ सकते हैं ना ही उसका अपमान कर सकते हैं। सोचो, उनमें से कोई किसी सड़क साफ करने वाले का बेटा या बेटी हो तो उसका हम कुछ बिगाड़ सकते हैं क्या? मैं सोच भी नहीं सकता कि किसी बुजुर्ग की अच्छाई को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है? प्रेम में क्या बुराई है? जहां मिले, दोनों हाथ से समेट कर ले लेना चाहिए।''

''यही हमारी अपब्रिंगिंग का फर्क है। तुम तो कोचिंग की एक लड़की को हमारे किचन में बैठा कर उसकी सेवा कर सकते हो। उसको हमारे वॉशरूम में जाने दे सकते हो। वैसे प्रेम और अपनेपन को समेटने के लिए हमारे पास हमारे लेवल के लोग होते हैं। उसके लिए माली या किसी गरीब लड़की की जरूरत नहीं पड़ती है।''

एक दिन जब उनके कोचिंग की एक लड़की उनके वॉशरूम में वॉमिट कर रही थी। टेस्ट के समय उसको चक्कर आए तो कबीर उसे अपने साथ ऊपर ले आया था। कबीर के कहने पर छोटू ने उसे ग्लूकोज का पानी दिया था। शायद उसे लू लग गई थी। वह लड़की पानी भी नहीं पी पाई थी कि उसने कहा 'मुझे वॉमिट आ रही है।' कबीर उसे अपने वॉश रुम में ले गया था। वह भागते हुए अंदर गई और... उसे रुबी ने देख लिया था। रुबी को लगा कि वह इन दोनों को कमरे से बाहर निकाल दे पर वह रुक गई थी।

बाहर जाकर उसने अपनी मेड से कहा ''अभी पूरे वॉशरूम को अच्छे से सैनिटाइज करो! मुझे सब महकता हुआ चाहिए!'' वह बेचारी समझ गई कि आज

शाम के सात बजे यह सब क्यों करवाया जा रहा है? इस समय तो वह घर का दोबारा झाड़ू-पोछा करके अपने घर जाने वाली थी।

गरीब के पास सवाल पूछने का हक नहीं है। हक की बात करने के लिए शिक्षा या पोस्ट की जरूरत होती है। नहीं तो छोटा आदमी अपने छोटे काम के नीचे दबा रहता है। उसके वहां से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता है।

उस दिन वॉशरूम दोबारा साफ तो हो गया था। पर अगले कुछ दिनों तक जब भी रूबी उसमें जाती थी, हर बार यही कहती रही-''उस दिन को याद करके घबराहट होने लगती है। उस लड़की को ऊपर लाने की क्या जरूरत थी? वॉशरुम तो नीचे भी हैं।''

''मैं उसे ग्लूकोज का पानी पिलाने लाया था। उसकी हालत ठीक नहीं थी।''

''यार, यह तो हद हो गई! किसी के साथ टॉयलेट शेयर करना... सोच कर ही घबराहट होती है।''

''टॉयलेट तो फ्लाइट में भी शेयर करने पड़ते हैं, उसका क्या? एक बात जो मैंने तुम्हारे घर में ही देखी कि तुम्हारे लेवल के लोग तो कदम-कदम पर एक-दूसरे को धोखा देते हैं। अपने प्रतिद्वंदी को हराने की कोशिश में लगे रहते हैं। तुम्हारे चाचा जी ने तुम्हारे पापा के साथ कितना बड़ा घपला किया। वो तुम्हें परेशान नहीं करता है? जितना हम गरीब को जलील करते हैं, वह उतना ही हमें धोखा देता है। जो काम सहजता से किया जा सकता है, उसके लिए इतना असहज होने की क्या जरूरत है? इन लोगों को यदि प्रेम अपनापन मिले तो यह लोग अपनी जान पर खेलकर भी अपने मालिक के काम आते हैं। बड़ी अजीब बात है, तुम जैसे बड़े लोग मानवता और प्रेम को छोड़कर जातिगत भेदभाव और नफरत को चुनना पसंद करते हैं।''

''अब एक चाचा बेईमान निकले तो उसे याद करने की जरूरत नहीं है। साथ ही कोई भी स्टूडेंट हमारे घर में आज के बाद कभी ऊपर नहीं आए! इस घर का कुछ डिसिप्लिन है? जिसे हमें फॉलो करना होगा!'' कबीर को अपने उच्च स्तर का दंश देकर रुबी तो पार्टी में चली गई थी।

घर वापसी

इस घर से बाहर निकलते कदम कबीर के आत्मसम्मान को हवा देंगे। जो उसे इस घर में मिलनी बंद हो गई थी। कबीर के बाहर पहुंचते ही विश्वास का फोन आया ''तू तैयार है क्या? तुझे लेने के लिए गाडरवारा के एसडीएम आ रहे हैं! वह अभी वहीं के लिए निकल रहे हैं।''

''अरे, यार उनको क्यों परेशान किया? मैं बस से निकल जाता।''

''देख, वह तेरे घर के बाहर पहुंच चुके होंगे!''

''हां, बाहर गाड़ी खड़ी है। उनको देखता हूं। चल फिर बात करते हैं।''

कबीर गाड़ी के पास गया तो उसमें से एक उसकी उम्र के आसपास के व्यक्ति बाहर निकले। आगे बढ़ कर उन्होंने कहा ''सूरजसिंह, नमस्कार कबीर जी!'' उन्होंने परिचय दिया और अपना हाथ आगे बढ़ाया।

''कबीर, आपको मेरे लिए परेशान होना पड़ा!'' कबीर ने उनसे हाथ मिलाते हुए कहा।

''नहीं ऐसी कोई बात नहीं है! मैं वहीं जा रहा था। विश्वास ने आपके बारे में बताया। आइये, बाकी बातें गाड़ी में बैठकर करते हैं।'' कबीर और सूरजसिंह रास्ते भर बातें करते रहे। सूरजसिंह ने कबीर को बताया कि उनकी मां अकेली गाडरवारा में रहती हैं। वह उनसे मिलने के लिए हर शनिवार, इतवार वहां जाते हैं।

''मां अकेली रहती हैं?''

''हां, बहुत बार मनाया पर वह नहीं मानती हैं। उन्हें उस जगह से बहुत लगाव है।''

''आपके पिता?'' अपनी उलझी शादी की गिरफ्त से बाहर निकले कबीर के मन में अचानक तलाक का विचार ही आया था।

''जब मैं चार साल का था तभी उनकी डेथ हो गई थी। मां ने ही हमें पाला है। उस एक महीने में मेरे दादा-दादी और पिता नहीं रहे थे। हम दो भाइयों को मां ने बड़ी हिम्मत से पाला है।''

सूरजसिंह के परिवार की बात करते हुए कबीर को अपना परिवार याद आ रहा था। उसके बाबूजी, शास्त्री जी का गाडरवारा में बहुत नाम था। शिक्षा को उन्होंने हमेशा सर्वोपरि माना। मेहनत और ईमानदारी से अपना कार्य किया। वह सुबह स्कूल में और शाम के समय बस्ती के बच्चों को पढ़ाते थे। वे बस्तियों में जाते थे और बच्चों को शिक्षा के बारे में समझाते थे।

खादी का कुर्ता-पायजामा पहनने वाले, लंबे, बहुत आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक थे उसके बाबूजी। उनको कभी चश्मा नहीं लगा। उनकी आँखें ही नहीं दिमाग भी उतना ही तेज था। थकान को तो वे जानते ही नहीं थे। घर के काम, स्कूल की नौकरी और उसके बाद बस्ती के बच्चों को इकट्ठा करना और उन्हें पढ़ाना, इस सब के आसपास ही उनका जीवन घूम रहा था। कितना मान सम्मान उन्हें मिलता था! लोग अपने बच्चों की आगे की पढ़ाई हो या शादी की बात के लिए, बाबूजी से सलाह जरूर लेते थे।

इस सबके बीच मां को कितना समय मिला, इस पर तो कभी शायद किसी ने सोचा ही नहीं था। पूरा परिवार अपने मुखिया को इतना प्रेम करता था कि उनकी गति के साथ लय मिलाते हुए सब चले जा रहे थे।

बाबूजी बस्ती के बच्चों को किताबें और कॉपियां भी देकर आते थे। वह बताते थे कि ''उनके समय में तो मास्टर जी सब बच्चों को रोज एक मुट्ठी भर मूंगफली खिलाते थे या खाने की कोई और चीज देते थे। पढ़ाई के लिए बच्चों को आकर्षित करना उन दिनों गुरु का एक कार्य ही था।'' जिसे आज शास्त्री जी भी बहुत प्रेम और लगन से करते थे।

वह उसमें सफल भी हुए। उनकी तनख्वाह से एक साधारण-सा घर खर्च चलता था। बाकी शास्त्री जी ने अपने पैसों से क्या किया? किसकी सहायता की? किसको क्या दिया? यह उनकी पत्नी और परिवार ने कभी नहीं पूछा था।

उनका परिवार उन्हें बहुत मान देता था। यह शायद लोगों की दुआओं का ही फल था कि कबीर और तारा पढ़ाई में अव्वल आते रहे। लक्ष्मी तो नहीं, मगर सरस्वती घर आंगन में फलती-फूलती रही।

कबीर और तारा शाम के समय बस्ती के बच्चों के साथ ही शास्त्री जी के पास पढ़ने को बैठ जाते थे। शास्त्री जी को उन्हें कभी कुछ ज्यादा समझाना या बताना ही नहीं पड़ा। वह जितना स्कूल में पढ़ कर आते थे उसी से अपना सारा अभ्यास बहुत आराम से कर लेते थे। वसुधा भी इन्हीं बच्चों के साथ पढ़ती थी। शास्त्री जी ने उसे भी अपने बच्चों जैसा स्नेह दिया था।

बारहवीं कक्षा के बाद ही तारा के लिए रिश्ते आने लगे थे। ग्रेजुएशन पूरा होते-होते उसकी शादी हो गई थी। एक साधारण परिवार में उसकी शादी हुई थी।

तारा के ससुर भी शास्त्री जी जैसे ही जीवन की रेलगाड़ी को अपने सिद्धांतों की पटरी पर चलाना पसंद करते थे। उस समय कबीर आईएएस की तैयारी कर रहा था और कबीर की ज़िंदगी में वसुधा थी।

तारा की शादी सादगी के साथ हुई थी। उसका एक छोटा-सा परिवार था। सास-ससुर और एक देवर। सास-ससुर और पति से तारा को बहुत प्रेम मिला था।

घर के आर्थिक हालात तारा के मायके जैसे ही थे। दामाद सौम्य, जैसा नाम, वैसा ही काम था उनका। दामाद सेल्स टैक्स डिपार्टमेंट में ऑफिसर थे। तारा के उस घर में जाने से उसके सास-ससुर को जो बेटी की कमी खलती थी, वह पूरी हो गई। उन्होंने तारा को बिल्कुल अपनी बेटी की तरह प्यार दिया था।

शास्त्री जी तारा के सुख से बहुत खुश थे। आज के जमाने में हर गरीब माता-पिता अपनी बेटी की शादी अपने से अमीर घर में करना चाहता हैं। उन्हें लगता है कि जो अभाव हमने सहे, वह हमारी बेटी ना सहे।

चाहे गरीब की बेटी को अमीर घर में कितना भी अपमानित होना पड़े मगर अमीरी का यह लालच बहुत कम माता-पिता छोड़ पाते हैं। जिसे शास्त्री जी ने बहुत गर्व से छोड़ा था।

उन्होंने तारा की शादी अपने जैसे ही परिवार में की थी। जहां तारा को अमीरी के

नाम पर कभी कमतर नहीं दिखाया जाए। उसे प्रेम और सम्मान मिले। तारा की खूबसूरती के कारण उसके लिए न जाने कितने अमीर घरों से रिश्ते आए थे।

मगर शास्त्री जी अपने जीवन से बहुत संतुष्ट थे और उन्हें अपने जैसा ही एक संतुष्ट परिवार, अपनी बेटी के लिए चाहिए था। जो पैसे की दौड़ में दीवाना ना हो! जो जीवन को अपने मूल्यों पर जीना जानता हो! जिनके लिए मानवता सबसे बड़ा धर्म हो!

जिसमें सौम्य का परिवार पूरी तरह से खरा उतरता था। तारा के ससुर अपनी रिटायरमेंट के बाद पर्यावरण से जुड़े कुछ मुद्दों पर काम कर रहे थे। शादी के बाद तारा ने संस्कृत में एम. ए. की पढ़ाई शुरू की थी।

तारा कहती थी ''मेरे लिए उस घर में और इस घर में कोई खास फर्क नहीं है। वहां भी मां मुझे काम नहीं करने देती है। मैं ही जिद करके सुबह की चाय उनके कमरे में दे आती हूं। रात को मां के बालों में तेल लगा देती हूं। मां-पापा मुझे बहुत प्यार करते हैं।''

मां ही उससे कहती ''अब तेरी सास को भी थोड़ा आराम मिलना चाहिए! तू थोड़ा काम तो किया कर! अब वह काम नहीं करवाएं तो क्या हुआ, तू ही उनका ध्यान रखा कर!''

''करती हूं मां! बस वैसे ही जैसे तुम करवाती थी!'' हंसते हुए तारा ने कहा था।

अचानक तारा के देवर की आदतों से घर का माहौल बदलने लगा। उसको नशे की ऐसी लत लगी कि वह अपराध तक पहुंच गई। उसका देवर अनिल, जो पढ़ाई कर रहा था। उसने अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी। रात-दिन घर में पैसों के लिए झगड़े करने लगा था।

कबीर उस समय दिल्ली में था। जब बाबू जी का फोन आया-''तारा को उसके देवर ने जला दिया है। हम उसे लेकर जबलपुर आ गए हैं!'' बाबूजी का फोन सुनते ही कबीर ने दस मिनट में अपना सारा सामान पैक किया और वह जबलपुर जाने के लिए तैयार हुआ।

विश्वास, जो उसका रूम मेट था। यह सब देख कर बहुत परेशान हो गया था।

उस समय वह कबीर से कुछ भी नहीं पूछ सकता था। वह अब आईएएस की एग्जाम से जुड़ा आगे का निर्णय क्या लेगा?

उस समय कबीर की हालत देखकर कुछ कहना ठीक भी नहीं था। विश्वास के हाथ में सरकारी शिक्षक की नौकरी का एक फॉर्म था, जो वह अपने लिए लाया था। विश्वास एक बहुत गरीब परिवार से आया था। इस बार यदि सिलेक्शन नहीं हुआ तो उसे कोई नौकरी करनी पड़ेगी। वह उसी की फ़िक्र में था।

विश्वास ने कबीर से कहा ''यह सरकारी स्कूल में नौकरी का फॉर्म है। आगे तुम क्या कर पाओगे? पता नहीं! तुम इस फॉर्म पर साइन कर दो। बाकी सारे काम मैं कर दूंगा।'' रोते हुए कबीर ने उस फॉर्म पर साइन कर दिए थे।

विश्वास उसे रेलवे स्टेशन छोड़ने आया था। उसका टिकट लेकर, उसे उसकी सीट पर बैठाकर, उसके कंधे पर हाथ रखकर वह चला गया था।

जब कबीर जबलपुर पहुंचा तो बाबूजी अस्पताल में एक जगह बैठे रो रहे थे। बाबूजी के पास बहुत सारे लोग बैठे थे। वह कबीर को देखकर बिलख उठे थे। कबीर बाबूजी को अपने सीने से लगाकर सांत्वना दे रहा था। आज वह अपने आप को पिता की जगह महसूस कर रहा था और बाबूजी एक बच्चे की तरह रो रहे थे। मां अंदर तारा के पास बैठी थी। कबीर तारा को देखकर दहल गया वह मां से लिपटकर सिसक उठा था।

उसकी बहन का जिस्म इस समय कितनी वेदना झेल रहा है। आग में एक अंगुली भी छू जाए तो हम सह नहीं पाते हैं और यहां तो पूरा का पूरा जिस्म ही झुलस चुका था। तारा का खूबसूरत चेहरा, उसके घने बाल, आंखें तो झुलस कर ऐसी लग रही थी जैसे मोम के पिघलने पर... कबीर वहीं मां के पास जमीन पर बैठ गया था।

जब तारा को अधजली हालत में लाया गया था तब शास्त्री जी के पास जितने भी जमा पैसे थे, वह तो आठ-दस दिन में ही खत्म हो गए थे। बेटी के इलाज में कोई कमी ना रहे इसलिए उन्होंने सबसे अच्छा अस्पताल चुना था।

ज़िंदगी में पहली बार उन्होंने सादगी नहीं, बड़े अस्पताल की आधुनिक सुविधाओं को महत्व दिया था। वह तारा की जान से जुड़ा कोई भी समझौता नहीं

करना चाहते थे। रिटायर्ड होने के बाद पीएफ के पैसों से तारा की शादी हो गई थी। अब घर पेंशन पर चल रहा था।

साथ ही उम्मीद थी कि कबीर के आईएएस पास होते ही उसको भी अपनी मंजिल मिल जाएगी। शास्त्री जी को लगता था, उन्होंने अपने उसूलों के साथ जीवन को आकार दिया और वह उसमें सफल भी रहे।

किसे पता था कि एक माचिस की तीली उनकी पूरी दुनिया ही उजाड़ देगी। तीन कमरों का एक छोटा-सा घर, जिसे बेचना चाहा तो दो दिन में खरीदार मिलने से रहा। कबीर के चाचा जी ने उस मकान को खरीद तो लिया पर एक चौथाई दाम देकर लिया था।

बड़ा भाई, जिसने अपने छोटे भाई को घर का बड़ा हिस्सा दिया और खुद सिर्फ तीन कमरों में ही संतोष कर लिया था क्योंकि उसकी पांच बेटियां हैं। उसके ऊपर जिम्मेदारी ज्यादा है। उस भाई का दिल, आज उनकी संकट की घड़ी में भी बड़ा ना हो सका। छोटे का दिल छोटा ही रहा।

कल जिस भाई की पांच बेटियों की शास्त्री जी को चिंता थी। आज उनकी इकलौती बेटी का जला शरीर भी चाचा के दिल में ममता नहीं जगा सका।

कबीर की मां ने भी छोटे से घर में अपनी दुनिया बहुत संतोष से बसाई थी। मगर आज इतने कम पैसे मिलने पर तड़प उठी और बोली ''एक बार भी उनका मन नहीं दुखा, इतने कम पैसे देते हुए! तारा के जले शरीर की तो दया की होती!''

''दया की भीख तो ईश्वर से मांग लो! तारा को जीवन दे दें!'' शास्त्री जी ने रोते हुए कहा था। तारा को बचाने में कबीर के माता-पिता ने अपना सब कुछ खो दिया।

एक चिंगारी

कितनी छोटी-सी बात पर एक जीवन तबाह हो गया था। उस दिन तारा का देवर अनिल अपने भाई की अलमारी से उनकी पूरी तनख्वाह और पापा की पेंशन के पैसे निकाल रहा था। जिसे तारा ने देख लिया। घर की कमाई का जाना उसे उत्तेजित कर गया था।

उसने अनिल को बाहर जाने से रोका तो उसने उसे धक्का दिया। जब वह दोनों यह सब करते हुए बाहर तक आ गए तो तारा के ससुर ने भी अपने बेटे को रोकने की कोशिश की थी। उसने उन्हें भी धक्का दे दिया था।

तब तक तारा ने घर के दरवाजे को बंद कर दिया। इस बात ने अनिल को पागल कर दिया। घर में एक बोतल में पेट्रोल रखा था। उसने वह दिखाते हुए कहा ''दरवाजे से दूर हट जाओ, मुझे जाने दो नहीं तो यह पेट्रोल...''

''अनिल, तू पागल हो गया है क्या?'' उसके पिता ने उसे चिल्लाते हुए कहा था।

''भाभी, आप मेरी बात नहीं समझ रही हो! मुझे जाने दो!'' गुस्से से कांपते हुए वह बोला था।

''नहीं, भैया आप बाहर नहीं जा सकते हैं! यह पैसे चले गए तो रोटी तो खा लेंगे, पर पापा का इस महीने का इलाज का खर्च कैसे उठा पाएंगे?'' ससुर के फेफड़ों में पानी भर जाने पर उनके इलाज के पैसों का इंतजाम कैसे होगा, इसकी उसे चिंता थी।

''ले, तू इलाज ही करवा ले!'' कहते हुए उसने तारा के ऊपर पेट्रोल और माचिस की तीली फेंकी और वह घर से बाहर भागा। तारा को बचाने में उसके सास-ससुर भी झुलस गए थे।

घर में बहू को जलाने वाले मामले का केस बनाने के लिए कई लोगों ने बाबू जी से कहा था। इलाज के पैसों का इंतजाम भी हो जाएगा। इसमें क्या गलत है?

लोगों को बाबूजी ने जवाब दिया ''जिसने गलत किया वह तो खुद ही भुगत रहा है। साथ में बूढ़े माता-पिता भी झुलस गए हैं। उनकी कोई गलती नहीं है। किसी एक की गलती की सजा पूरे परिवार को क्यों? जिसने गलती की है सजा सिर्फ उसे ही मिलनी चाहिए। अब तो वह भी बैठने के काबिल भी नहीं रहा है। कोर्ट से बड़ी सजा तो उसे खुद ही मिल गई है। तारा उस घर में बहुत सुखी थी। यह अन्याय मुझसे नहीं हो सकेगा!''

बाबू जी ने तारा के ससुर की बात को सच माना। सौम्य और उसके माता-पिता की बात पर उन्हें जरा भी संदेह नहीं था। साथ ही उस परिवार पर एक कहर टूटा था। तारा के देवर का एक्सीडेंट! जब वह पैसे लेकर भाग रहा था तो एक मेटाडोर से जा टकराया था।

उसके सर में बहुत गहरी चोट आई थी। साथ ही तारा के सास-ससुर के हाथ, चेहरा बहुत बुरी तरह जल गए थे। अकेला सौम्य उन तीनों को देख रहा था। शास्त्री जी को अपने दामाद की हालत पर बहुत तरस आता था।

सौम्य की हालत देखकर बाबूजी ने उससे कहा था ''बेटा, तुम अपने भाई और माता-पिता को देखो! मेरी सहायता के लिए कबीर मेरे पास है! हां, अब इस समय मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर पाऊंगा!'' कहते हुए बाबूजी फफक कर रो पड़े थे। साथ में सौम्य और कबीर भी रोने लगे थे।

अनिल, उसके माता-पिता और तारा का इलाज एक ही अस्पताल में चल रहा था। उस समय तो बस मन एक ही दुआ कर रहा था कि किसी तरह तारा ठीक हो जाए।

सौम्य दिन में कई बार तारा के पास आता था। उसके पास बैठकर उससे एक ही बात कहता था-''तारा, तुमको मेरे लिए जीना है। मैं तुम्हारे बिना कैसे जी पाऊंगा?'' यह सुनकर तारा के कुछ आंसू गिर जाते थे। कुछ बोलने की हालत उसकी अब कहां थी?

कबीर तारा से कभी भी अपने मन की बात नहीं कह पाया था। वह उससे कैसे

कहता कि उसका दिल उसके जले हुए जिस्म को देखकर रो उठता है। उसे इस हालत में देखकर मां-बाबूजी तिल-तिल कर मर रहे हैं। अपनी सुंदर प्यारी बहन के जिस्म की यह जलन उसे भी जला रही है। काश, बहन के कुछ दर्द वह भी सह पाता।

उसे समझ नहीं आता कि वह अनिल के साथ क्या करे? कैसे अपनी बहन के ऊपर हुए जुल्म का बदला ले? वह तो सिर्फ तारा के पास बैठ कर उसके हाथ पर अपनी एक अंगुली रख देता था। तारा भी उसे बहुत प्रेम से देखती थी। उन दोनों की आंखें भर आती थी। हर बार उन दोनों के बीच यही संवाद होता था।

एक माता-पिता की दो संतानें इतनी अलग कैसे हो सकती है? यह समझना नामुमकिन था! एक तरफ सौम्य तो दूसरी तरफ अनिल। सिर्फ सत्रह साल का लड़का अनिल। आज के कुछ साल पहले तक अच्छा ही था। बस कुछ नए, अमीर दोस्तों के चक्कर में अनिल की आदतें एकदम से बदल गईं।

उसके बाद अनिल की ज़िंदगी सही रास्ते पर नहीं आ सकी। हर दिन बिगड़ती और गिरती ही गई। नशे की लत ने उसे इस कदर अपनी गिरफ्त में लिया कि उसे परिवार या अपना भला, कुछ भी समझ नहीं आता था। हर अच्छाई नशे की भेंट चढ़ चुकी थी।

शुरू के आठ-दस दिन ऐसे ही अस्पताल के बाहर बैठे, दवाईयां लाते हुए बीते थे। कबीर को तब लगा यह इलाज इतना आसान नहीं है। इसमें कितना खर्च होगा? यह तो हर दो दिन बाद ही पता चलता है। पास ही एक धर्मशाला में उन लोगों ने अपना रहने-खाने का इंतजाम किया था।

तब उस धर्मशाला के मालिक, वर्मा जी ने कबीर को कहा "अच्छा होगा आप कोई नौकरी कर लो! जबलपुर बड़ा शहर है। आपको आसानी से नौकरी मिल जाएगी। बहन के पास मां और पिताजी तो हैं ही। आपके काम पर जाने से पैसे की सहायता हो जाएगी।" कबीर को उनकी बात सही लगी।

अभी तारा के इलाज में कितना खर्च आएगा और कितना समय लगेगा कुछ भी तय नहीं था। 'सर्व मंगल धर्मशाला' शास्त्री जी के परिचित के रिश्तेदार की थी। शास्त्री जी के लिए वर्मा जी के मन में बहुत सम्मान था। उन्होंने इस परिवार की विपदा पर उनका साथ देने की हर कोशिश की थी।

उन्होंने उनसे वहां रहने के पैसे भी नहीं लिए थे। जब बाबूजी ने पैसे देने चाहे तो उन्होंने कहा-"अब इतना साथ तो देने दीजिए बाबूजी!" कहकर उन्होंने हाथ जोड़ लिए थे। बाबूजी ने अपने आंसू पोंछे और हाथ जोड़कर आगे बढ़ गए थे।

वर्मा जी के कहने पर ही कबीर पायोनियर कोचिंग इंस्टिट्यूट में बात करने गया था। उसकी योग्यता ने उसे एक पल में नौकरी दिलवा दी थी।

नौकरी लगने के बाद कोचिंग में पढ़ाना कबीर के लिए आसान नहीं था। उसकी आंखों में मां-बाबूजी और तारा का चेहरा ही रहता था। उसने बड़ी मुश्किल से अपने आपको संभाला और पढ़ाने का काम शुरू किया था।

नौकरी करते हुए कुछ दिन ही बीते थे कि तारा की हालत क्रिटिकल होने लगी थी। एक और सर्जरी के लिए पैसों की जरूरत को कोचिंग के मालिक, शर्मा जी ने बड़ी आसानी से पूरा कर दिया था। कबीर की नजर में उनमें मानवता थी या ईश्वर की दया जिसके कारण उसे सहायता मिल रही थी।

वह नहीं जानता था कि यह एक इन्वेस्टमेंट प्लान है जो बाद में कैश किया जाएगा। रुबी का उसके आसपास घूमना, उसे चाय नाश्ते के लिए अपने घर में ले जाना, 'कोई भी जरूरत हो तो आप मुझसे बात कर लीजिए!' कहने वाली, उसके साथ अस्पताल जाने वाली रुबी उसे हमदर्द ही लगी थी।

पहले दो मंजिल पर कोचिंग और तीसरी मंजिल पर उनका घर था। जहां रुबी, उसे किसी ना किसी बहाने अपने साथ ले ही जाती थी। तारा के सत्तर फ़ीसदी जले हुए शरीर के इलाज के लिए हर दिन पैसे की बढ़ती मांग ने उनको तोड़ कर रख दिया था। आस तो एक ही थी कि तारा ठीक हो जाए।

गहरे घाव, जला हुआ शरीर कितने वाइटल हिस्से प्रभावित हुए हैं और इनके अंदर इंफेक्शन की कितनी संभावना है? इसी डर में बीते थे। जब तारा की हालत थोड़ी स्टेबल हुई तो एक आस बंधी थी। अब तारा जी जाएगी। दो महीने बाद उसकी प्लास्टिक सर्जरी की शुरुआत हुई थी।

जिस दिन तारा की प्लास्टिक सर्जरी होने वाली थी, तब शास्त्री जी ने डॉक्टर से कहा "मेरी चमड़ी लगा दो मेरे बच्ची को! अब और कितना दर्द सहेगी वह? कुछ दर्द मुझे भी दे दीजिए! उसकी वेदना अब नहीं देखी जाती है!"

''बाबूजी, आप परेशान मत होइए! आपकी बेटी बहुत जल्दी ठीक हो जाएगी! बस, आप धीरज रखिए!''

प्लास्टिक सर्जरी होने के बाद तारा की जीने की उम्मीद बहुत बढ़ गई थी। उसका चेहरा भी पहले से तो बेहतर हो गया था। मगर तारा के इंटरनल ऑर्गन में इन्फेक्शन के कारण उसकी हालत बिगड़ी तो दो दिन में ही उसकी मौत हो गई। शास्त्री जी और उनकी पत्नी एकदम ख़ामोश हो गए थे। पिछले महीनों में रो-रो कर उनके आंसू भी सूख चुके थे।

अब उनके शरीर ने, दर्द में उनका साथ छोड़ दिया था। कबीर ने अपने आंसुओं के साथ मां-बाबूजी को संभाला और तारा का हर काम किया था।

तारा का अंतिम संस्कार जबलपुर में ही कर दिया गया था। बाबूजी ने कहा ''बेटा अब ताकत नहीं है, वापस खाली हाथ गाडरवारा जाने की!'' वह बस किसी तरह अपने शरीर को चला रहे थे। उनकी सारी ऊर्जा खत्म हो चुकी थी। कबीर के कांधे पर सर रखकर वे सिसक उठे थे।

जले हुए शरीर को फिर से आग को सौंप देना कितना हृदय विदारक है, यह कबीर महसूस कर रहा था।

तारा के अंतिम संस्कार में सौम्य अपने माता-पिता के साथ आया था। उनके चेहरे और हाथों पर जले हुए के निशान अभी बाकी थे। अनिल ने अपना एक हाथ खो दिया था। उसके सर पर गहरी चोट के निशान के कारण उसकी शक्ल ही बदल गई थी।

कौन किसे सांत्वना दे? यहां सब ने एक रिश्ता खोया था। किसी इंसान के जाने पर लगता है अब जीवन कैसे जीयेंगे? पर वक्त तो आगे बढ़ता है और अपने साथ सबको लेकर चलता है। कोई चाहे या ना चाहे सूरज को तो हर दिन निकलना ही है।

अनगिनत बातें और यादें हमें कितना भी रुलाती रहें, फिर भी सांस चलती है। पेट रोटी भी मांगता है, जिसे चाह कर भी रोक नहीं सकते हैं। किसी के जाने के बाद भी कहां कुछ रुकता है? सांस की डोर मनुष्य को अपने साथ खींचती जाती है। और इंसान भी उसके साथ मन-बेमन से घसीटता हुआ चलता रहता है। बस, वैसा ही हाल शास्त्री जी के परिवार का था।

गाडरवारा का घर बिक चुका था। वहां से घर का जरूरी सामान चाचा ने भेज दिया था। उनमें से कोई भी दोबारा गाडरवाड़ा नहीं गया था। अब कबीर, जबलपुर में ही नौकरी कर रहा है तो शास्त्री जी ने भी यहीं रहना पसंद किया। बेटी के बिना अब गाडरवारा जाने की हिम्मत उन माता-पिता में नहीं रही थी।

उन्होंने कहा ''बेटा यहां से जाने का मन नहीं है। जब तक धर्मशाला में रह सकते हैं, रहते हैं। नहीं तो फिर, एक किराए का मकान देख लेंगे!''

धर्मशाला के मालिक इतने दयालु थे कि उन्होंने बाबूजी से कई बार कहा ''यह कमरा आपका ही है। आप यहां आराम से रहें! कहीं जाने की जरूरत नहीं है।'' एक कमरा और एक छोटी सी रसोई, संतोषी स्वभाव के कबीर के माता-पिता का घर अब और सिमट गया था।

घर पहले भी छोटा ही था पर उसमें खुशियां बरसती थी। अब घर और छोटा हो गया और खुशियां इस रास्ते पर कभी आईं ही नहीं। अब घर क्या, परिवार भी छोटा हो गया। चार पैर से बना एक मजबूत परिवार अब तीन पैर पर टिका था। बहुत कमजोर, बहुत लाचार, डगमगाता हुआ।

रोटी का कोर हाथ में लेते ही शास्त्री जी के आंसू गिरते तो कबीर कहता ''हमारी खातिर खाना खा लीजिए बाबूजी!''

रोती मां को चुप कराने के लिए कहता ''तुम इतना रोओगी तो बाबूजी को हम कैसे संभाल पाएंगे?'' यह शब्द मां के बाहर निकलते आंसुओं को रोक कर रोटी मुंह में डाल देते थे।

मगर वह रोटी भी खून नहीं, आंसू ही बना पाती थी। खून का हर कतरा तो तारा की वेदना की आग में झुलस चुका था। ऐसे ही दिन और रात बिताते रहे।

तारा की मृत्यु के कुछ दिन बाद ही एक दिन शास्त्री जी ने कबीर से कहा था कि ''मेरी त्वचा और शरीर के हर अंग को अस्पताल में दान कर देना। हमारी तारा तो नहीं बच पाई। किसी और को हमारे कारण जीवनदान मिल जाए, यह काम मुझे करना है! जैसे हमने अपनी बेटी को तड़पते और मरते हुए देखा, वैसा किसी और के साथ ना हो! कोई तो अपने बच्चे को अपने साथ जिंदा, घर वापस ले जा सकें!''

तब कबीर को उसकी मां ने कहा था ''कबीर, यह काम तो तू मेरे शरीर के साथ भी कर देना बेटा!''

एक दिन सुबह के समय शास्त्री जी पूजा करके उठे ही थे कि बोले ''मेरे जाने का समय आ गया है। मुझे लेने विमान आ गया है। मैं जा रहा हूं।'' वह जमीन पर लेटे और उन्होंने अपनी आंखें बंद की। कबीर और उसकी मां की आंखों के सामने ही वह इस जगत को छोड़कर चले गए थे।

कबीर उनके सीने पर सर रखकर इतना रोया कि उसे ख्याल ही नहीं रहा कि इस समय मां के दिल पर क्या बीत रही होगी? मां शास्त्री जी के पैरों के पास बैठी सिसक रही थी। जिसे देखकर कबीर को यही समझ नहीं आया कि वह मां से क्या कहें?

इस गम की हालत में मां ने ही उसे याद दिलाया कि ''बेटा तेरे बाबूजी को तो अस्पताल ले जाना है!'' यह सुनकर कबीर तड़प उठा।

जिन शास्त्री जी ने अपना जीवन मानव सेवा को समर्पित किया। जो अपनी बेटी की मौत का सदमा बरदाश्त नहीं कर सके। अपना शरीर दान में देने वाले यह कैसे इंसान थे? जिसके अंदर करुणा के सागर सूखा ही नहीं! उनके आंसू सूख गए! पर उनके अंदर की मानवता को जीवन की तपिश सुखा नहीं पाई।

बाबूजी की देह को अस्पताल को सौंपकर जब कबीर घर आया तो उसे लगा कि अब अकेला मां को कैसे संभालेगा? पर हुआ उसका उल्टा ही, मां ने कबीर को संभाला था। मां, एकदम ख़ामोश और सजग हो गई थी।

शायद उन्हें भी यह समझ आ गया था कि वह भी अब ज्यादा नहीं जी सकेंगी। वह हमेशा कबीर को हिम्मत की बात कहती थी। उसके सर पर हाथ रख कर उसे जी भर कर प्यार करना चाहती थी। शास्त्री जी के साथ उन्होंने सात फेरे ही नहीं लिए थे, वह उनकी सांसों की डोर से भी जुड़े थे।

बाबूजी के उठावने के बाद, एक दिन बाद मां ने कबीर से कहा था ''बेटा अब ध्यान रखना, मेरा शरीर भी किसी के काम आ जाए। तुझे अस्पताल वालों को फोन करना होगा। अब तू बहुत अकेला हो गया है। मुझे नहीं लगता मैं ज्यादा जी पाऊंगी। अब तेरे पास, तेरे साथ कोई नहीं है। तू कैसे खुद को संभाल पाएगा? ईश्वर तुझे शक्ति

देंगे! कभी हिम्मत मत हारना बेटा! अपने दुख को भूल कर जो दूसरों के काम आते हैं। उन्हें अपने दुख छोटे लगने लगते हैं!'' मां ने अपनी भीगी आवाज में कबीर की पीठ को सहलाते हुए कहा था।

जब भी कबीर अपने घर की बात विश्वास को बताता विश्वास हर बार उसके साथ रोया था। तारा की मौत के पच्चीस दिन बाद बाबूजी नहीं रहे थे। मां जितने दिन भी जिंदा रहीं, कबीर के सर पर हाथ रखकर उसे दुआएं देती और उसे हिम्मत बंधाती थी।

मां हमेशा एक ही बात कहती थी ''तूने अपने बाबूजी और बहन के लिए सब कुछ किया! मगर हम उनको नहीं बचा पाए। मुझे हर वक्त वो दोनों ही दिखते हैं। पता नहीं, मैं कितना जी पाऊंगी? तू अपने आप को संभाल लेना बेटा। शास्त्री जी का जीवन इतना बिगड़ जाएगा, कभी सोचा भी नहीं था। जिसने लोगों के जीवन के कांटे चुनने में उनकी मदद की उनका अपना जीवन ही कांटों से लहूलुहान हो गया!''

एक दिन वह मंदिर से लौट रही थी कि रास्ते में गिर गईं। कबीर घर में काम कर रहा था। कोचिंग जाने से पहले जितनी मां की मदद कर सकता था, उतनी कर देता था। मां उसे घर में काम नहीं करने देती थी।

वह कहती ''अब रोटी ही कितनी बनानी है? तू दिन भर तो वहां पढ़ाता है। खड़ा रहता है। थोड़ा आराम कर लो बेटा!''

''नहीं मां, मैं सब्जी काट कर रख देता हूं। बाकी काम आपको ही करना होगा।'' आज भी कबीर सब्जी काट रहा था।

उसे कोई बुलाने आया था कि 'आपकी मां सड़क पर गिर गई है!' कबीर भागता हुआ वहां पहुंचा। सड़क पर मां के सर को अपनी गोद में लिए कबीर आसपास खड़े लोगों से कह रहा था कि ''एक ऑटो ले आओ! जल्दी से अस्पताल जाना है।''

पास के मकान से दो डॉक्टर उसकी मां को देखने आए थे। उन्होंने उन्हें देखते ही कहा 'इनकी गिरते समय ही मौत हो गई है! इनके हार्ट और ब्रेन डेड हो चुके हैं।

उस दिन आकाश को देखकर कबीर ने ईश्वर से सवाल किया था–''हमारा क्या

कसूर था? जिसकी इतनी सख्त सजा मिली।'' फिर भी कबीर मां को लेकर अस्पताल गया था। उसके मन में एक आस थी।

उसे उम्मीद थी, मां ठीक हो जायेगी पर अस्पताल में मां का शरीर कबीर को छोड़ना पड़ा। मां का शरीर भी देह-दान के लिए छोड़ कर कबीर खाली हाथ घर आ गया था। एकदम अकेला!

पहले तारा फिर बाबूजी और उसके बाद मां का जाना कबीर की ज़िंदगी में एक के बाद एक हादसे होते रहे। वह खुद को भी भूल गया। उसने एक-दो बार जब भी वसुधा को फोन लगाया उसका नंबर लगा ही नहीं। वह कभी गाडरवाडरा जाकर उससे मिलने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाया।

उसे लगा अब तक वसुधा की शादी हो गई होगी। वह उससे कोई रिश्ता रखना पसंद नहीं करती होगी। इसीलिए उसका नंबर शायद बदल गया है। ताऊ का नंबर उसके पास नहीं था। वह वसुधा से कभी बात ही नहीं कर पाया।

मां की मृत्यु के बाद रुबी की हमदर्दी उसके साथ बढ़ती गई। एक दिन धर्मशाला में राजीव और रुबी आए थे। उसे अपने साथ घर ले गए। कबीर यह सब क्या कर रहा है? यह समझने की उसकी हालत नहीं थी।

एक दिन राजीव ने उससे कहा ''कबीर, तुमने अभी तक अपनी बहन की बीमारी के लिए जो भी पैसा लिया, वह तुम्हारा ही था। मैं चाहता हूं कि तुम मालिक बनकर इस कोचिंग सेंटर को संभाल लो!'' किसी पर अपना एहसान जताकर बात करना उन्हें आता था।

''यह कैसे हो सकता है सर? मैं आपसे लिया हुआ सारा पैसा आपको वापस कर दूंगा! अब तो मैं अकेला हूं। मेरी कोई खास जरूरत नहीं है। जल्दी ही मैं...'' कबीर इस बात से एकदम चौंक गया। यह सच ही था कि उसे ध्यान ही नहीं आया कि वह शर्मा जी से कितने पैसे एडवांस ले चुका है।

''अरे, तुम मेरी बात समझ नहीं पा रहे हो! मैं चाहता हूं कि तुम रुबी से शादी कर लो!'' इसके लिए ही तो शर्मा जी तैयार थे। उनकी बेटी ने कबीर के ऊपर अपनी

उंगली जो रख दी थी और जो उनकी बेटी मांगे, वह तो उसे मिलना ही चाहिए। किसी को नीचा दिखाकर उसे अपना बनाना उनका स्वभाव ही था।

''क्या, यह कैसे हो सकता है?'' कबीर को समझ नहीं आया कि वह मना करने के लिए क्या कारण दे? वह तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता था कि शादी की उसकी इच्छा नहीं है।

फिर भी उसने कहा ''अभी मेरा मन शादी के लिए तैयार नहीं है! मुझे थोड़ा समय दीजिए!''

जब रुबी को पता चला कि उसने शादी के लिए मना कर दिया है तो वह कबीर को अपने साथ बाहर यह कह कर ले गई कि ''मुझे कुछ बात करनी है!'' भेड़ाघाट की नदी के किनारे जाकर उसने गाड़ी रोकी।

नीचे नर्मदा का बहता पानी और ऊपर एक चट्टान पर खड़ी रुबी ने उससे कहा ''कबीर, सोच लो, यदि तुमने शादी से मना किया तो मैं यहीं नर्मदा में कूदकर अपनी जान दे दूंगी!''

यह सुनकर कबीर सिर्फ इतना ही कह पाया था कि ''यह आप क्या कह रहीं हैं?'' अपने परिवार के तीन लोगों को खोने के बाद कबीर इतना तन्हा और कमजोर हो गया था कि उसने रुबी को ''हां'' कह दिया।

उसने सोचा, जो मेरे लिए मरने की बात कह रही है उसका दिल कैसे दुखाया जा सकता है? जिन्होंने मेरी तकलीफ में मेरा साथ दिया, उनका सम्मान तो करना ही चाहिए।

सुनते ही रुबी उससे लिपट गई थी। रुबी को अपनी ठंडी बाहों में लेते ही कबीर को वसुधा की याद आ गई। जब कबीर ने पहली बार उसे बाहों में लिया था। जब उनकी दोस्ती, प्रेम के रंग में रंगी थी...

दोस्ती और प्रेम

बहुत बड़ा फर्क है दोनों में। दोस्ती तो बहती हवा है, एक मीठा एहसास है, मन का चैन भी कह सकते हैं। कोई है, जिसे हम अपनी मन की बात कह सकते हैं। अपने दुख, कमजोरी सब खोल कर दिखा सकते हैं। वह भी हमारे बारे में सब जानता है पर कभी हमें नीचा नहीं दिखाता है। हमारा हाथ थामे रखता है। वही दोस्त है। अब ऐसे दोस्त को सच्चा दोस्त कहना भी गलत ही होगा क्योंकि दोस्ती तो नाम ही सच्चाई का है। जो सच्चा नहीं, वह दोस्त भी नहीं हो सकता है।

जब दोस्ती प्रेम में बदल जाती है तो लगता है जैसे इस रिश्ते ने कोई नया जन्म लिया हो। उसका रूपांतरण हुआ हो। जैसे उगता हुआ सूरज आने पर कैसे आकाश गुलाबी, सिंदूरी हो जाता है। जैसे चांद के आने पर तारे दिखने और झिलमिलाने लगते हैं। जैसे तपते रेगिस्तान में सावन की बूंदे, कुछ ऐसा ही एहसास हुआ था वसुधा को जब पहली बार कबीर ने उसे छुआ था, उसकी आंखों में गहरे तक देखा था। एक सिरहन-सी दौड़ गई थी उसकी रगो में। आजतक कितनी बार उसने कबीर का हाथ थामा था पर आज जब होलीका दहन के बाद कबीर ने उसको रंग लगाना चाहा तो वह भागी और कबीर ने जैसे ही उसका हाथ पकड़ा वह तड़प उठी-''ओहऽऽऽ!''

''क्या हो गया तुझे? छूने से भी दर्द हो रहा है। क्यों डरा रही है मुझे? रंग तो मैं लगा कर ही मानूंगा!''

वसुधा ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया जिस पर जले का निशान था। उस निशान को देखकर कबीर रंग भूल गया और उसने वसुधा का हाथ थाम लिया।

''यह कैसे हो गया? इतना बड़ा जले का निशान? क्या कर रही थी?''

''दाल जल गई थी तो ताई ने चिमटे से...'' कहते हुए वसुधा के आंसू बह निकले थे।

कबीर के हाथ में वसुधा का हाथ था। मगर उस दिन पहली बार कबीर उस जली हुई जगह के आसपास वसुधा को सहलाने लगा। वसुधा उसे देख रही थी मगर उसकी निगाह धुंधला गई थी।

''तू हमारे घर आ जा! अब उस घर में मत रह!''

''ऐसा कैसे हो सकता है कबीर?''

''क्यों नहीं हो सकता है?''

''बाबूजी, तुझे पढ़ा रहे हैं। तू हमारे घर में क्यों नहीं रह सकती है?''

''ऐसा नहीं हो सकता है?''

''क्यों, कब तक तू यह सब सहेगी?''

''जब तक मेरी शादी नहीं होगी।''

''क्या...? जब तक शादी नहीं होगी तब तक यही सब... चलता रहेगा?''

कबीर ने वसुधा की आंखों में झांकते हुए पूछा-''मुझसे शादी करोगी?''

''तुम्हारे अलावा कभी किसी और के बारे में सोचा ही नहीं!''

''क्याऽऽऽ? तो फिर अभी तक कहा क्यों नहीं?''

''तुमने आज ही तो पूछा...''

आसपास की भीड़ का ख्याल नहीं आता तो कबीर वसुधा को बाहों में भर लेता।

''हम कब शादी करेंगे, पढ़ाई, नौकरी में तो अभी बहुत समय है। कब तक तू यह सहती रहेगी?''

''आज के बाद कभी लगेगा ही नहीं कि मैं कुछ सह रही हूं। वक्त अपनेआप गुजर जाएगा। कबीरा, तू अब कभी भी मेरे लिए परेशान मत होना।''

''क्यों, ऐसा क्या हो गया है?''

''बस, यही तो मांगा था और वह मिल गया। मैं कैसे कह सकती थी कि मैं तुझसे प्यार करती हूं? कुछ भी नहीं है मेरे पास। ताई मेरी शादी कैसे करेगी कोई नहीं बता सकता है। एक अनाथ...''

''चुप, पागल हो गई है क्या? बाबूजी का हाथ तेरे सर पर है तो तू अनाथ कैसे हो सकती है?''

''हां, वो तो किसी जन्म का पुण्य ही है, जो मां-बाबूजी मेरे लिए इतना करते हैं।''

''तू है ही इतनी अच्छी... जो तुझे प्यार ना कर पाया वह बदनसीब है।'' कहते हुए कबीर ने एक बार फिर वसुधा का हाथ पकड़ लिया।

बस एक पल ही तो आया, और प्यार हो गया... उसके बाद जब भी वे दोनों मिलते कबीर वसुधा को बाहों में भर लेता था। वसुधा भी उसकी बाहों में ऐसे समा जाती थी जैसे वह भी इसी पल के इंतजार में थी।

एक बार कबीर ने कहा ''जब तू मेरी बाहों में होती है तो ऐसा लगता है कि तूने अपने आप को मेरे कंधे पर छोड़ दिया है। हम दोनों एक दूसरे की सांसें सुनने लगते हैं? कितना वक्त बीत गया, कुछ याद ही नहीं रहता।''

''हां, कबीरा तेरी बाहों में आकर, तेरे कांधे पर सर रखकर मैं सिर्फ एक धड़कन ही रह जाती हूं। मैं भी सिर्फ सांसों को ही सुनती हूं। ऐसा लगता है जब हम मिले, तब ही हम जिए, तब ही सांस आती है बाकी तो... लगता है इस जिस्म की मजबूरी है...'' कहते हुए वसुधा के आंसू बह निकले।

''यही मुझे लगता है, जैसे मैं पूरा हो जाता हूं।'' कहते हुए उसने वसुधा को एक बार फिर अपनी बाहों में ले लिया था।

''कबीरा...'' कहते हुए वसुधा उसकी बाहों में समा गई थी।

एक बार कबीर ने वसुधा से पूछा ''ऐसा लगता है कि जब तू मेरी बाहों में आती है तो हम ध्यान में चले जाते हैं...बस सांसों की डोर हाथ में होती है। क्या तुझे भी ऐसा ही लगता है?''

''हां, कबीरा। ऐसा ही लगता है। हम सिर्फ सांस बन गए हैं। इसे हम ध्यान नहीं, समाधि कह सकते हैं। कबीरा...'' हंसते हुए वसुधा ने कबीर की हथेली को सहलाया था।

''अच्छा... प्रेम समाधि...!'' वसुधा को चूमते हुए कबीर बोला था।

उस शाम कबीर, वसुधा को कुछ नोट्स देने गया था। दरवाजा दो-तीन बार खटखटाने के बाद ही खुला था। कबीर ने गुस्से से कहा ''सो गई थी क्या? इतनी देर से दरवाजे पर खड़ा हूं!''

''सो नहीं, नहा रही थी! इसीलिए आने में देरी हो गई।''

''घर में कोई नहीं है क्या?''

''नहीं, ताऊ और ताई दोनों दो दिन के लिए गांव गए हैं। तू अंदर आ जा! तुझे जो किताब चाहिए थी, वह भी ले ले। चल ऊपर चलते हैं।''

किताब को ढूंढते हुए वह दोनों बातें कर रहे थे की कबीर ने वसुधा को छुआ। उसके गीले बालों को, उसके चेहरे पर गिरती लटों को हटाया। कबीर के छूते ही वसुधा ने कहा ''कबीर... क्या?''

कबीर ने उसके होंठों पर ऊंगली रखते हुए उसे अपने करीब ले लिया। वसुधा के शब्द अब उसका साथ न दे पाए। उसकी आंखें जो कह रही थी शायद वही कबीर ने सुना। और वसुधा कबीर की बाहों में समा गई। नदी अपने सागर से जा मिली।

जब वसुधा अपने गीले बालों का जूड़ा बना रही थी तो कबीर ने उससे कहा ''शकुंतले, इन बालों को यूं ही खुला छोड़ दो!''

वसुधा ने हंसते हुए कहा ''अच्छा, तो अब तुम दुष्यंत हो गए!''

''और क्या? हमारा गंधर्व विवाह जो हो गया है। चल अब यहां रह कर क्या करेगी? मेरे साथ घर चल! मां-बाबूजी को भी बता देते हैं कि मैं ब्याह करके आपकी बहू को ले आया हूं।''

''पागल हो गए हो क्या? अभी तो मां-बाबूजी ने तारा की शादी की है। उन्हें इतनी जल्दी दोबारा परेशान करने की जरूरत नहीं है।''

''अच्छा, तो उनकी परेशानी का ख्याल भी आ गया, मेरी नहीं!''

''हां, वह मेरे बाबूजी हैं? तुम जितना उनको प्रेम और सम्मान देते होंगे, उससे

भी बहुत ज्यादा प्रेम और सम्मान मेरे दिल में उनके लिए है। उन्हें हमारे कारण कोई तकलीफ हो, यह कभी नहीं होना चाहिए!''

''तो फिर शकुंतले हमारे राजमहल में कब आएगी?''

''शकुंतला तुम्हारे राजमहल में तब ही आएगी जब दुष्यंत कुमार की नौकरी लग जाएगी और शकुंतला भी कुछ कमाने लायक हो जाएगी। तब दोनों मिलकर मां-बाबूजी की सेवा करेंगे!''

''उस दिन दुष्यंत तुम्हें भूल गए तो?''

''राजन्, हमारे बीच में बाबूजी हैं और घर का पता भी मैं जानती हूं। दो घर छोड़कर आपके घर आने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी। स्वामी, यहां हमें मछली वाला सीन भी स्किप करना होगा।'' हंसते हुए वसुधा ने कहा था। कबीर ने एक बार फिर वसुधा को हंसते हुए चूम लिया था।

''न अंगूठी, न ही कोई निशानी है! तुझे क्या दूं शकुंतले?''

''निशानी मेरे पास है। मेरे तन-मन पर बन चुकी है। आप उसके लिए परेशान ना हों महाराज!'' कहते हुए वसुधा ने कबीर के सर को सहला दिया था।

पैसों के अभाव के साथ जिनका जीवन बीता हो, उनके पास सोने की अंगूठी कैसे हो सकती है? कबीर ने वसुधा का हाथ पकड़ कर उसे चूम लिया था।

अगले दिन जब वसुधा उनके घर आई थी तो उसने माथे पर दुपट्टा डाला हुआ था। जिसे देखते ही तारा ने कहा ''वसु, सर पर दुपट्टा क्यों डाल लिया तूने?''

''बस, वैसे ही इच्छा हो गई!'' कहकर उसने बाबूजी और मां के पैर छुए थे। वह जब भी घर आती थी, सबसे पहले मां-बाबूजी के पैर छूती थी। उस दिन भी उसने पैर छुए थे। अब यह बात कबीर ही समझ सकता था कि आज पैर छूने के पीछे बात कुछ और है।

वसुधा पैर छू रही थी तो कबीर भी यह कहता हुआ उसके पास आ गया ''सारा आशीर्वाद तू ही ले लेगी! तो मेरे हिस्से का क्या होगा?''

बाबूजी ने हंसते हुए उनके सर पर हाथ रखा था और कहा था ''वसु, बेटा अब

जल्दी से तू भी इस घर में आ जा! तारा के जाने के बाद बेटी की कमी बहुत खलने लगी है। जो अब तुझे ही पूरी करनी है।''

''हां, बाबूजी!'' कहते हुए वसुधा ने अपना सर बाबूजी के कंधे पर रख दिया था। उसके सर पर हाथ रखकर बाबूजी ने यही कहा था, 'मेरा प्रेम हमेशा तुम्हारे साथ है।'

वसुधा का बचपन

वसुधा के माता-पिता की मृत्यु उसके बचपन में ही हो गई थी। उसकी मां की मृत्यु कैसे हुई, इस पर तरह-तरह की बातें होती हैं। उसकी मां बहुत सुंदर और सुशील थी। सास-ससुर ने उसे बहुत प्रेम दिया था। उसकी अच्छाई ही उसकी जान की दुश्मन बन गई।

वसुधा की ताई काला जादू जानती हैं, ऐसा सब कहते थे। उसने ही कुछ किया कि वसुधा की मां के जितने भी बच्चे हुए, होने के एक दिन बाद ही मर गए। तीन बेटों को खोने का दर्द उस मां ने सहा था।

हर बार एक ही बात हुई। जो बच्चा रात को आराम से सोता अगली सुबह मरा हुआ मिलता। वसुधा के जन्म के समय उसकी दादी ने अपनी छोटी बहू को यह कह कर उसके मायके भेजा था कि "इस बार वहीं चली जा! शायद यह बच्चा बच जाए।"

हर बार वसुधा की मां के पलंग के नीचे से एक काला कपड़ा और राई के दाने मिलते थे। जिसे देखकर मन में वहम आता था कि यह सब क्या हो रहा है? इसे कौन कर रहा है? करने वाले को कभी देख तो नहीं पाए। मगर समझ में तो यही आता था कि यह वही कर रही है जिसकी अपनी गोद आज तक सूनी है।

इस बार वसुधा की मां के मायके जाने पर बच्चा तो बच गया मगर पिता की मृत्यु, उसके जन्म के अगले ही दिन हो गई। उस दिन भी पलंग के नीचे काला कपड़ा और राई के दाने मिले थे।

तब यह सोचा गया कि यह जादू भी बच्चे के लिए था। बच्चा नहीं था तो उसके पिता पर जादू चल गया। इस सदमे को वसुधा की मां अपने सीने में झेलती रही। एक साल बाद, एक दिन वह वसुधा को अनाथ करके चली गईं।

सिर्फ दादा-दादी ही थे, जो उसे देखते थे। नि:संतान बड़ी बहू, उसने वसुधा को हमेशा नफरत से देखा था। वसुधा की दादी, शास्त्री जी के घर से जुड़ी थी। जब वसुधा

दस साल की थी, तब पहले उसके दादा और बाद में उसकी दादी भी उसको छोड़ कर चली गईं।

अब उसके ताई और ताऊ उसे जितना दुख देकर पाल सकते थे, पाल रहे थे। या यूं कहें कि ताई के दबदबे के कारण ताऊ वही करते थे, जो उनसे कहा जाता था। अब ताई की एक ही इच्छा थी-वसुधा की शादी, उनके छोटे भाई के साथ हो जाए और उसका भाई इस घर में उनका बेटा बन कर रहे।

ताऊ, ताई की हर बात मानते थे। मगर वसुधा पढ़ना चाहती है इसमें वह उसके साथ थे। "जब तक पढ़ना चाहती है। उसे पढ़ने दे ना! तू उससे जितना काम करवाती है वह कर तो देती है। फिर क्यों उसकी पढ़ाई छुड़वा रही है? हम कौनसी उसकी फीस जमा कर रहे हैं? शास्त्री जी ही तो उसका खर्च उठाते हैं!"

बस, यही एक वरदान वसुधा को इस घर से मिल गया था। शास्त्री जी ने इस बच्ची को बहुत सहारा दिया था। एक तरीके से उसके शिक्षा का खर्च शास्त्री जी ने ही उठाया था।

उस दिन वसुधा का फोन आया था और कबीर ने उससे बहुत रुखाई से बात की थी। उसे लगा काश, आज उसके पास वसुधा का नंबर होता तो वह शायद सबसे पहले उसी से बात करता। आज के पहले एक-दो बार जब भी फोन लगाया पर उसका फोन स्विच ऑफ आया था।

आज एक पंछी की रिहाई का दिन था पर उसका साथी न जाने कहां खो गया था। आज उसे याद आया जब वसुधा का फोन आया था।

"कबीर, तारा कैसी हैं? तुम सब गांव कब वापस आ रहे हो?"

"तारा की हालत कभी सुधरती है तो कभी फिर से बिगड़ने लगती है। हम अभी गांव कैसे आ सकते हैं वसुधा? अब सबसे पहले तो तारा के इलाज के लिए पैसों का इंतजाम करना है। उसके बाद ही कुछ सोच पायेंगे।"

"हां, कबीर मैं जानती हूं! पर ताई मेरी शादी के पीछे पड़ी है। अपने भाई के साथ।"

''वसुधा, तू आज की पढ़ी–लिखी लड़की है। कोई उन्नीस सौ सत्तर के समय की कन्या नहीं है। जिसका हाथ, जो चाहे थाम ले। यह तेरी लड़ाई है। तुझे ही लड़नी होगी। मैं घर की इस हालत में तेरे लिए किसी काम का नहीं हूं!'' कबीर को उस समय शादी की बात बहुत अजीब लगी थी। उस समय उसकी आंखों में सिर्फ तारा का चेहरा और पैसे की बात ही घूमती रहती थी। अपने माता–पिता का दुख उसके लिए सबसे बड़ा दुख था। और ऐसे समय में शादी की बात ने उसके सुर ही बदल दिए थे।

''हां, कबीरा मैं सब समझती हूं। कुछ काम की बात करनी है!'' वसुधा कबीर को प्यार से कबीरा ही कहती थी। आज भी उसके मुंह से वही शब्द निकला, पर अपना काम ना कर सका।

''यार अभी नहीं, अभी कोचिंग सेंटर के दरवाजे पर खड़ा हूं! अपनी नौकरी के लिए! हम बाद में बात करते हैं!'' कहकर कबीर ने गुस्से से फोन काट दिया था।

शब्द वसुधा के गले में अटक कर रह गए। वह उसकी आंखों से आंसू बनकर बह निकले। कबीर ने उसकी बात सुनी भी नहीं थी। आज कबीर को याद आया, वसुधा कुछ कहना चाहती थी। उसने उस दिन उसे 'कबीरा' कहा था। मगर कबीर ने उसकी बात सुनने से मना कर दिया था।

वसुधा उसे बताना चाहती थी कि अब उसके साथ एक जान और जी रही है। जब उसको इस बात का पता लगा तो वह घबरा गई थी। कबीर के शब्द कि ''वह कोई सत्तर की कन्या नहीं है।'' उसे साहस दे गई। अब उसे क्या करना है? उसने यह सोचना शुरू कर दिया था।

तारा की शादी के कुछ महीने बाद ही ज़िंदगी इस कदर बदल जाएगी, किसने सोचा था? वसुधा एमएससी कर चुकी थी। उसे टीचिंग में जाना था। उसे अब बीएड की पढ़ाई करनी थी। कबीर ने दिल्ली में सिविल सर्विस की तैयारी शुरू कर दी थी। एक दिन की घटना ने न जाने कितने लोगों के जीवन को अंधेरे की ओर धकेल दिया था।

वसुधा को जब पता चला कि तारा जल गई है और सब उसे लेकर जबलपुर जा चुके हैं, तब कबीर के घर पर ताले लग चुके थे। वह किसी से भी नहीं मिल पाई।

उसने कई बार बाबूजी से बात की थी। वह हर बार इतना रोते थे कि वसुधा को यह समझ नहीं आता कि अब वह उन्हें क्या सांत्वना दे? दोनों तरफ से सिर्फ आंसू ही बात कर पाते थे। तारा के शरीर की जलन को वह अपने जिस्म पर महसूस करती थी।

उस घर की आग वसुधा के जीवन को भी इतना गहरा ज़ख्म दे देगी, यह तो वह सोच भी नहीं सकती थी। इधर ताई का शादी के लिए दबाव बढ़ रहा था। तभी वसुधा को पता चला कि वह मां बनने वाली है। यह जानकर वह घबरा गई थी। उसने कबीर को फोन लगाया पर उसके जवाब ने उसे निराश किया।

साथ ही वह हिम्मत की बात भी कह गया था। 'वह आज के जमाने की लड़की है।' अब उसे ही सोचना होगा कि उसे क्या करना है?

कल रात को पहली बार ताई का भाई उसके कमरे में आ गया था। उसने वसुधा को छू लिया था। यह पहली बार हुआ जब उसकी जुबान ही नहीं, हाथ भी अपनी मर्यादा तोड़ रहे थे।

आज से पहले वह वसुधा से बात करने की कोशिश करता था। उसे अपने साथ घूमने के लिए कहता था। मगर अब अचानक उसका व्यवहार बदलने लगा। जिसमें ताई और ताऊ की सहमति ने उसमें एक ताकत भर दी थी।

वसुधा किसी तरह अपने आपको उससे बचाती थी। मगर आज वह उसके कमरे में ही नहीं आया, उसने खुली धमकी भी दे दी थी–''मैं बैंड लेकर आ जाऊं या उठाकर ले जाऊं! अब यह फैसला मैंने तुम पर छोड़ दिया है। मेरा दिल बहुत बड़ा है। जिसे प्यार किया, उसकी कदर करना भी जानता हूं।''

वसुधा का मन हुआ उसका मुंह नोच ले। यह घर छोड़कर भाग जाए। अपने अंदर पल रही जान के बारे में सोचना अब उसकी ही जिम्मेदारी है।

क्या वह इस घर को छोड़कर कहीं जा सकती है? क्या बिना शादी किए बच्चे को पाल सकती है? उसके हाथ में एक पैसा भी नहीं है। तो क्या वह इस अजन्मे बच्चे को मार डाले? और ताई के भाई से शादी कर ले?

उस पूरी रात वसुधा सो न सकी थी। उसने अपने आपको इतना तन्हा और कमजोर कभी भी महसूस नहीं किया था। आज तक शास्त्री जी का परिवार ही उसका परिवार था। इस घर से जुड़ी परेशानियां उसे कभी भी नहीं डराती थी।

नई राह

बहुत सोचने के बाद उसे नेगी आंटी की याद आई। वह यहां गाडरवारा और कुचवाड़ा में एक एनजीओ चलाती हैं। अगले दिन घर का सारा काम करने के बाद वसुधा उनके पास गई। उन्हें सब कुछ बताया।

उन्होंने बहुत गहरे उसे देखते हुए कहा ''अकेले बच्चे को पालना बहुत मुश्किल काम है! यह जिम्मेदारी उठा पाओगी? दुनिया के ज़ख्म सहना, फिर भी बच्चे में साहस भर देना आसान नहीं होता है। क्या तुम यह कर सकती हो या बच्चे से छुटकारा पा कर तुम शादी कर लो!''

''मेरा बच्चा सलामत रहे, उसे जन्म लेना है। मैं यही करना चाहती हूं! पर बहुत डर लग रहा है! मेरा कोई नहीं है। जो हैं, वे इतनी तकलीफों से जूझ रहे हैं कि अब उन्हें कुछ कहने या बताने का वक्त नहीं है। यदि आप मुझे सहारा दें तो...'' कहते हुए वसुधा सिसक उठी थी।

''कुचवाड़ा में तुमको काम मिल सकता है। अभी सिर्फ रहना-खाना ही हो सकेगा। आगे काम बढ़ा तो तुम्हें कुछ पैसे भी मिलने लगेंगे। हमारी संस्था वहां बच्चों के लिए एक स्कूल चलाती है। साथ ही वहां की महिलाएं पापड़, बड़ी और अचार का काम भी सीख रही हैं। पहले मैं यह काम सिर्फ गाडरवाड़ा में ही करती थी। पर अब मैंने वहां भी शुरू कर दिया है। मैं हर रविवार वहां जाती हूं। आज भी वहीं जाने वाली हूं।''

''आंटी, मैं अपना घर छोड़कर आपके पास आ जाऊंगी। मगर फिर आपने मुझे वहां से निकाल दिया तो मेरे पास आत्महत्या के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचेगा। मेरा कोई नहीं है! मुझे बस छत और रोटी मिल जाए।'' कहते हुए वसुधा की आंखों में एक बार फिर आंसू आ गए।

''मैं इस दर्द को समझ सकती हूं। तुमको पैसा कम मिल सकता है मगर धोखा कभी नहीं मिलेगा!''

''आज इतना सहारा मिल गया यही बहुत बड़ी बात है।'' वसुधा ने हाथ जोड़कर उनको धन्यवाद दिया।

''तुम कब वहां जाना चाहोगी?''

''मैं दो घंटे में ही वापस आ रही हूं। सिर्फ अपने कपड़े और सर्टिफिकेट लेकर। मुझे पढ़ना भी है। साथ ही एक चिट्ठी लिख कर आना होगा कि मैं अपनी मर्जी से यह घर छोड़ कर जा रही हूं। मुझे ढूंढने की कोशिश न की जाए।''

''जिनमें हिम्मत होती है, जीवन में उनके लिए रास्ते बनते जाते हैं। हजारों तकलीफों के बाद भी। बस, धीरज से हर इम्तहान को पास करना होगा। तुम्हारी हिम्मत टूटी तो तुम बिखर जाओगी और हिम्मत के साथ चली तो अपने शिखर तक पहुंच जाओगी।'' नेगी आंटी ने वसुधा के कंधे को छूकर कर, उसकी आंखों में देखते हुए कहा।

''आपके साथ का पूरा सम्मान करूंगी!'' बस इतना ही कह पाई थी वह। आज के लिए इतनी हिम्मत और सहारा ही बहुत है। यह सोचकर वसुधा ने कदम आगे बढ़ा दिया। घर जाकर वसुधा ने अपना सारा सामान इकट्ठा किया, उसे अपने ऊपर वाले कमरे से पड़ोस वाले घर में फेंका।

ताई ने पूछा ''अभी तो आई है, वापस कहां जा रही है?''

''मेरे सर्टिफिकेट किसी को दिखाना हैं। शायद बच्चों को पढ़ाने का काम मिल जाए। बस, वही दिखाकर अभी आती हूं।'' कहती, अपनी घबराहट को छुपाती हुई वह घर से बाहर निकली।

घर से बाहर निकलते समय उसने ताऊ को नजर भर कर देखा। पर उनसे कुछ कह न पाई। आज ताई की नीयत ठीक होती तो ताऊ उसे प्रेम से इस घर में रख सकते थे। ताई ने अपनी भतीजी को प्रेम करने की जगह अपने भाई को इस घर में लाना बेहतर समझा।

अपने घर से बाहर निकल कर वसुधा ने पड़ोस के घर से अपना बैग उठाया। एक बार भी उसने पलट कर उस घर को नहीं देखा। जिस घर से उसके बचपन की अनगिनत यादें जुड़ी थीं। आज उसे आगे बढ़ना है। पीछे देखने से कहीं आगे के रास्ते ही बन्द न हो जाए। यही सोचकर वसुधा आगे बढ़ गई।

नेगी आंटी के घर जाकर ही वसुधा को सांस आई। उन्होंने उसे चाय देते हुए कहा ''तुम आराम से बैठो! अब उठते-बैठते हुए बच्चे का ख़याल रखना। उसे आराम मिले। तुम जितनी रिलेक्स रहोगी बच्चा उतना ही आराम में रहेगा। वसुधा, तुम पैर ऊपर करके बैठो! बस, दस मिनट में गाड़ी आ रही है। फिर हम चलते हैं।'' इस समय वसुधा किस हालत में होगी, इस बात को वह बहुत अच्छे से समझ रही थी। साथ ही उनके मन में वसुधा के लिए ममता उमड़ पड़ी।

वसुधा ने जब नेगी आंटी को अपने सारे सर्टिफिकेट दिखाए तो वह बोली ''हर बार मेरिट! बहुत बड़ी बात है! तुम परेशान मत होना! तुम आराम से अपनी बी.एड. की पढ़ाई शुरू कर दो। ईश्वर ने चाहा, तो सब कुछ बहुत जल्दी ही अच्छा होगा!''

एक बहुत प्रतिभावान लड़की आज सहारा ढूंढ रही है। उसे वह जरूर मिलना चाहिए। नहीं तो एक नहीं, दो ज़िंदगी बिखर जाएगी।

वसुधा ने कहा, ''अभी तक मेरे जीवन का सहारा शास्त्री जी थे। उनके कारण ही मेरी पढ़ाई पूरी हो पाई। उनकी बेटी तारा के जल जाने से सब कुछ तबाह हो गया। मेरी ज़िंदगी की सबसे बड़ी ताकत वही परिवार था।''

''वही शास्त्री जी, जो सरकारी स्कूल में पढ़ाते हैं? मैं उनको जानती हूं। वे बहुत नेक इंसान हैं।''

''हां, वही। अब वह रिटायर हो चुके हैं।''

''उनकी बेटी को किस ने जला दिया?''

''उसके देवर ने।''

''हे भगवान, यहां औरत हर दौर में जलाई गई है। कौन कहता है कि हमारे समाज ने उन्नति की है। कभी सती प्रथा के नाम पर तो कभी दहेज के नाम पर...''

''नहीं, आंटी यहां दहेज वाली बात नहीं थी। देवर से पैसों का कोई झगड़ा हो गया था। उसी झगड़े में तारा जल गई। वैसे वह अपने घर में बहुत सुखी थी।''

''जो भी हो, एक बेहद नेक इंसान की बेटी ने तकलीफ सही। उनकी बेटी पर इतना बड़ा जुल्म हुआ।''

बाहर गाड़ी की आवाज सुनकर नेगी आंटी ने कहा ''चलो, गाड़ी आ गई है। हम निकलते हैं।''

साथ ही उन्होंने फल और बिस्किट की थैली वसुधा के हाथ में देते हुए कहा, ''रास्ते में काम आ जाएंगे। तुम अपनी सेहत का ख्याल खुद रखोगी। इस बात को मन में बांध लो।''

फल की थैली लेते हुए वसुधा ने कहा, ''आप मेरे लिए सब कुछ हैं। आपका यह...''

''बस, अब कुछ नहीं ...चलो बाहर निकलते हैं।'' उन्होंने उसके कंधे को छूकर कहा।

रास्ते में नेगी आंटी ने वसुधा को अपने बारे में बताया, ''कैसे मैंने अपने दो बेटों को अकेले पाला है। एक महीने में पति और सास-ससुर की मृत्यु ने मुझे बेहद कमजोर कर दिया था। मेरे पास अपना घर था और पैसे की कोई चिंता नहीं थी। उसके बावजूद आज के बीस साल पहले एक अकेली औरत को अपने आपको, समाज और रिश्तेदार यहां तक कि चचेरे-ममेरे भाइयों से बचाना भी बहुत मुश्किल था। यह मैं आज भी याद करती हूं तो डर जाती हूं। उस समय मेरा एक ही सहारा था-रामायण और महाभारत! मुझे तब इतना डर लगता था कि रात में नींद नहीं आती थी। मैं रामायण लेकर बैठ जाती थी और सारी रात उसे ही पढ़ती रहती थी। न जाने कितनी बार मैंने रामायण को पढ़ा होगा। हर बार अर्थ बदले हुए और गहरे नजर आते थे। रामायण से मैं एक ही बात सीख पाई-यहां सबके साथ अलग-अलग रंग और रूप के दुख लगे हैं। उन्हें सहने की क्षमता ही हमें ताकतवर बनाती है। जो अपने संकट को सहजता से स्वीकार नहीं करते हैं, वे दुख की कालिमा से घिर जाते हैं। जो अपने संकट राम की तरह मुस्कुरा कर स्वीकार करते हैं; जीवन उनके लिए एक आदर्श बन जाता है। जिसकी गूंज सदियों तक सुनाई देती है। राम की सहजता ही जीवन का मंत्र है।

आज भी राम की बात करें तो वे अपने करीब लगते हैं। यही जीवन का सबक है कि यहां अवतार ने भी कष्ट उठाएं हैं। मानव जीवन एक इम्तहान है। उसे पार करना ही हमारी योग्यता साबित करता है। मैं तुमसे आज यह सब इसलिए कह रही हूं क्योंकि अब तुम पर एक और जिम्मेदारी है। बच्चे का विकास पहले भीतर होता है। उसका मन सशक्त बने उसके लिए तुम्हारा मजबूत होना बहुत जरुरी है। महाभारत के कृष्ण हो या कर्ण, द्रौपदी, गांधारी या कुंती उनके जीवन भी यही संदेश देते हैं। हम इन सबके जीवन को समझ कर अपने जीवन के दुख को साहस में बदल सकते हैं। मैंने अपने जीवन में वही किया था। आज मेरे दोनों बेटे पढ़-लिखकर अपनी ज़िंदगी आराम से जी रहे हैं। कुछ सालों पहले मैंने यह काम शुरू किया था। कल जैसे मुझे हिम्मत की जरूरत थी वैसे ही किसी को भी हो सकती है। एक साथ मिल जाए तो जीवन खिल उठता है नहीं तो...''

''आंटी, आप बिल्कुल परेशान न हों! मैं आपको निराश नहीं करूंगी!'' वसुधा ने यह वादा सिर्फ नेगी आंटी से ही नहीं, अपने आप से भी किया था।

''कल राम ने आप का साथ दिया था, वही राम आज आपके रूप आज में मुझे मिले हैं। मेरे मन में भी राम समा गए हैं। मेरे माता-पिता की मृत्यु के बाद शास्त्री जी भी मेरे लिए भगवान का स्वरूप ही रहे। उनके सहारे ही मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की और आज आप मेरे आगे के रास्ते की पथ-प्रदर्शक हैं। आपके इस स्नेह और साथ का कभी भी अपमान नहीं होगा!''

''क्या मैं जान सकती हूं कि इस बच्चे के पिता ने तुम्हें धोखा...''

''नहीं, आंटी वह एक बहुत अच्छे इंसान हैं। घर के हालात ने उन्हें बहुत बड़ा धोखा और दर्द दे दिया है। आज उनके पास...''

''जाने दो, अपना जी न दुखाओ! सब कुछ प्रभु पर छोड़कर कर्म पर ध्यान दो। जीवन में हम न जाने कितनी शंका-कुशंकाओं से घिरे रहते हैं। खुद को परेशान करते हैं। जीवन में जो होता है और मिलता है। वह इससे अलग ही होता है। बेहतर होगा, हम सिर्फ आज की बात करें।''

गाडरवारा से कुचवाड़ा तक का समय बातों में बीत गया। अब गाड़ी उनके

एनजीओ के बाहर खड़ी थी। एक बहुत ही साधारण-सा मकान जिसमें दो महिलाएं एक पुरुष और एक बच्चा भी था। वो सब बहुत प्रेम से नेगी आंटी से मिले।

उन्हें देखकर वसुधा ने सोचा, आंटी ने इनका भी हाथ थामा। यह भी शायद किसी न किसी मुसीबत के सताए हुए होंगे। आंटी ने जब उन सब से वसुधा का परिचय करवाया तो उसे पता चला कि यहां हर व्यक्ति के साथ एक कहानी है। एक दर्द भरी कहानी!

डॉक्टर देसाई, करीब पचास की उम्र के लग रहे थे। कुर्ता और जींस के साथ चश्मा लगाए वह बहुत सादगी से भरे थे। उनका शहर में अपना अस्पताल था। उसे छोड़कर वह गांव में आ बसे थे। अपना अस्पताल उन्होंने किसी संस्था को दे दिया है। अब वह गांव में और आसपास के इलाकों में जाकर लोगों का इलाज करते हैं।

आठ-दस साल का बच्चा हीरा, जिसके माता-पिता किसान थे। उन्होंने जहर खाकर अपनी जान देने की कोशिश की थी। डॉक्टर देसाई ने उनको बचाने की बहुत कोशिश की पर वह दोनों मर गए। यह बच्चा अकेला रह गया था। डॉक्टर देसाई इसे अपने बच्चे की तरह ही देखते हैं। उन्होंने इस बच्चे की जिम्मेदारी को बहुत खुशी से अपने ऊपर ले लिया था।

दो महिलाएं, आसपास के इलाकों से हैं। एक सावित्री, करीब बीस की होगी। गेहुंआ रंग, बड़ी-बड़ी आंखें, लंबी चोटी में वह बहुत सुंदर लग रही थी। वसुधा ने सोचा यदि उसके माथे पर बिंदी और कानों में कुंडल होते तो वह और भी ज्यादा अच्छी लगती। गांव और शहरों में शायद यही फर्क है कि पति की मौत के बाद औरत सिंगार नहीं कर सकती है। उसके पति की मौत के बाद उसे घर से निकाल दिया गया। शादी के एक साल बाद ही उसके पति को किसी ने सुबह के समय खेत में मार डाला।

उसका कोई बच्चा नहीं है। मायके वालों ने उसे अपने साथ रखने से मना कर दिया। औरत का घर कौनसा है? यह पहेली, संकट से घिरी औरत आज तक हल नहीं कर पाई है। ससुराल वालों को जायदाद में से कोई भी हिस्सा उसे नहीं देना था इसलिए उसे घर से निकाल दिया गया।

दूसरी श्यामा, विधवा और नि:संतान जिसकी संपत्ति हड़पने के लिए उसे डायन बताकर मार डाला जाता, उससे पहले वह गांव छोड़कर भाग निकली। उसे भी यहां

पनाह मिली। अब उसे वापस घर नहीं जाना है। वह यहीं रहना चाहती है। कानून से जुड़ी लड़ाई भी उसे नहीं लड़नी है।

उसका कहना है कि ''अकेली उस घर में रही तो वह लोग मुझे जीतने के बाद भी मार डालेंगे। उससे तो हार जाना ही बेहतर होगा। यहां रह कर लोगों के काम आना ज्यादा अच्छा है, वहां पर बेमौत मरने से।''

कैसे–कैसे दुख और कितने रास्ते! वसुधा ने सोचा कि यहां इन सबके दुख भी उसके दुख के आगे छोटे तो नहीं हैं। पति की हत्या और घर से निकाला जाना या अपनी जान बचाने के लिए घर छोड़ देना कौनसी छोटी बात है? नेगी आंटी ने रास्ते में सच ही कहा था–''अपने दर्द को सहजता से स्वीकार करना ही जीवन है।''

नेगी आंटी ने डॉक्टर देसाई से कहा ''आपको इस बार एक और जिम्मेदारी देकर जा रही हूं!''

''जी, जरूर बहन जी! बोलिए न क्या बात है?''

''वसुधा गर्भवती है। अब आपको इसका ध्यान रखना होगा।''

''अरे, आप उसकी चिंता मत कीजिए! मैं इनका पूरा ख्याल रखूंगा। बस इन्हें कह दीजिए कि यह मेरी बात माने!''

''हां, वह तो यह जरूर मानेगी। अपनी पूरी पढ़ाई इसने मेरिट के साथ पूरी की है। यह बहुत समझदार और बुद्धिमान है।''

''फिर तो हमारे बच्चों को एक अच्छी टीचर मिल गई।''

''आप सबका स्नेह ही मेरी ताकत है। बच्चों को पढ़ाना मुझे बहुत अच्छा लगेगा। मैं यही काम करना चाहती थी।'' वसुधा ने कहा। यहां उसे इन सब लोगों को देखकर उसे एक परिवार जैसा लगा। जो अपने दुखों के साथ अकेले थे, वो यहां साथ पा गए थे। हां, डॉक्टर देसाई शहर में अपना अस्पताल छोड़कर यहां क्यों आए? यह उसे समझ नहीं आया। डॉक्टर देसाई की बात ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

''अब आप भी इस परिवार का हिस्सा हैं।'' डॉक्टर देसाई ने कहा।

''जी, दादा।'' कहते हुए वसुधा ने हाथ जोड़ लिए।

''वाह, मुझे एक छोटी बहन मिल गई। अब मैं इनको डांट कर रख सकता हूं। मैं मामा बनने वाला हूं।'' हंसते हुए उन्होंने वसुधा के सर पर हाथ रख दिया।

वसुधा ने अपने हाथ जोड़ लिए और सर को झुका दिया। उसका मन भीग गया।

नेगी आंटी ने कहा ''अब अंदर चलो! बाकी बातें बैठकर करते हैं। वसुधा को आराम की जरूरत है।'' खाना खाने के बाद जब वसुधा अपनी चारपाई पर लेटी तो उसे लगा कुछ घंटों में उसका जीवन कहां से कहां आ गया है?

हर पुराना रिश्ता धुंधला दिखाई दे रहा है। सामने कुछ नए रिश्ते और एक आस है। जो कल का सहारा है। क्या इन सबके साथ वह जी पाएगी? अपने बच्चे को पाल लेगी?

अचानक मन ने कहा, आगे की चिंता में आज भी झुलसने लगेगा। इससे तो बेहतर है, आज का शुक्रिया कहकर कल के लिए ताकत जमा की जाए। वसुधा को ताऊ याद आए। क्या वह उसके जाने से खुश होंगे या उसे याद कर रहे होंगे?

ताऊ का दुःख

वसुधा के घर से निकलने के बाद जब रात तक वह घर नहीं लौटी तो ताई ने हल्ला शुरू किया। उसकी चिट्ठी ने तो ताई को गुस्से से पागल कर दिया। वह जितना चिल्ला सकती थी, जितना वसुधा को कोस सकती थी, उन्होंने वह सब किया।

वसुधा को इस घर से गए दो दिन भी नहीं हुए कि ताऊ ने नाराज होते हुए कहा, ''अभी तो उस बच्ची को गए दो दिन नहीं हुए, रोटी भी समय पर नहीं मिल रही है। जब वह घर में थी तो रोटी तो मिल जाती थी।''

''मुंह काला करके गई है। फिर भी उसके गुण गा रहे हो। थोड़ी देर से रोटी मिली तो चिल्ला क्यों रहे हो?'' ताई ने कभी भी ताऊ को ऊंचा नहीं बोलने दिया था। जब भी वह ऊंचा बोलते थे, वह उस आवाज़ को दबाना जानती थी।

''तूने उसे सताने में कोई कमी रखी थी क्या? वह अपनी पढ़ाई भी कर रही थी और घर में स्वाद का खाना मिल जाता था, टेम से। अब तो घर और पेट दोनों खाली-खाली से रहते हैं। हम इस घर में अपने भाई की मासूम बच्ची को भी नहीं रख पाए जबकि वह तो इस घर के आधे हिस्से की मालकिन थी।'' उन्होंने अफ़सोस के साथ वसुधा को याद किया।

''अब क्या जायदाद के झगड़े भी करवाओगे? मेरे भाई से शादी करती तो उसे सब मिल जाता। जायदाद का नाम आज तो लिया, आज के बाद मत लेना! मन में उसके नाम की माला जपते रहो! रोटी दे रही हूं, खा लो, पर मुंह बंद रखो!'' ताई ने सुलगते हुए कहा।

ऐसी बहस आए दिन होती रहती। बदला तो कुछ भी नहीं। हां, संग्राम जबसे इस घर में रहने आया है, घर में पैसों की चिकचिक बढ़ गई है। ताई के हिसाब से वह उनकी देखभाल के लिए इस घर में आया है।

उसके खर्चे का ख्याल तो रखना ही होगा। ताऊ के सवाल का कोई जवाब नहीं है कि 'वह कोई काम क्यों नहीं करता? कितनी कक्षा पढ़ा है?' अब उसके खर्चे भी इस पेंशन में से कैसे चलेंगे?'

''अब उसे पढ़ने की क्या जरूरत है? वह तो अपने घर में राज करता था। यहां एक तो हमारी सेवा कर रहा है। ऊपर से तुम्हें उसकी कमाई भी चाहिए?'' ताई के पास उनके हर सवाल का जवाब था।

ताऊ यह समझ चुके थे कि गलत आदमी से सही जवाब मिल ही नहीं सकता है। वह उनकी पेंशन पर संग्राम के खर्चे कैसे उठा पाएंगे? बच्चे क्या बेरोजगार रह कर ही सेवा कर पाते हैं? ताऊ को अपने सवालों का सही जवाब कभी भी नहीं मिला। पर उनकी हालत सही से गलत की तरफ बढ़ रही थी। जिसे रोकने की ताकत और समझ उनमें खत्म होती जा रही थी।

वसुधा का जीवन

एक बार नेगी आंटी वसुधा के लिए कुछ खाने का सामान लाईं थीं। वह जिस कागज में लिपटा था, उसे वसुधा पढ़ रही थी। उसे पढ़कर तो वसुधा की सांसें ही रुक गईं थीं। पायनियर कोचिंग में मैथ्स की फैकल्टी की जगह कबीर का फोटो था।

वसुधा ने उस पेपर को संभाल कर रख लिया। खुशी का एक सागर उसके अंदर लहरा उठा। उसे लगा, उसे अब सब कुछ मिलने वाला है। उसकी तपस्या पूरी हुई।

अगले दिन उसने एक बूथ पर जाकर कोचिंग में फोन लगाया था। उसे एकदम से समझ नहीं आया कि कबीर के लिए क्या सवाल करे। उसने पूछा ''यह कबीर शास्त्री सर मुंबई से हैं क्या? जो मैथ्स की क्लास लेते हैं?''

''नहीं, वह मुंबई से तो नहीं है।''

''आप कौन बोल रहीं हैं?''

''वसुधा! अरे नहीं... मुझे तो बस उनसे बात...''

''मैं उनकी वाइफ बोल रही हूं। आप बताएं आपको क्या बात करनी है?''

''नहीं, कुछ भी नहीं! नमस्ते!'' कहते हुए हड़बड़ा कर वसुधा ने फोन काट दिया था। यह सुनकर वसुधा का मन डूब गया। कितनी आस से उसने फोन लगाया था। उसे लगा जीवन की डोर हाथ में आने ही वाली है। उसे लगा जैसे किसी ने ऊंची चट्टान से धक्का दे दिया है। वहीं जमीन पर बैठ कर वह सिसक उठी थी। उसे समझ नहीं आया कि कबीरा ने शादी क्यों कर ली? उसके पास तो उसका फोन ही नहीं है। ना ही उसे कबीरा का नंबर याद है।

जब से नंबर, नाम के साथ सेव होने लगे हैं, नंबर को कौन याद रखता है? कबीरा उससे बात करता भी तो कैसे? उसने घर से निकलते समय ही अपने फोन से सिम निकाल कर फेंक दी थी। पुराना सब कुछ कट गया था।

क्या कबीरा को शादी की इतनी जल्दी थी? वह उसके लिए कुछ समय भी नहीं रुक सकता था? वह यहां अपने प्रेम की निशानी को इस दुनिया में लाने के लिए अपना घर तक छोड़ चुकी है और कबीर?

कबीरा ने शादी कर ली। एक बार भी उसे उसकी याद नहीं आई। तारा अब कैसी होगी? क्या मां-बाबूजी वापस गाडरवारा आ गए होंगे? यह ऐसे सवाल हैं जिनके जवाब अब उसे कैसे मिलते? साथ ही ताई का डर उसके मन में था। सात महीने के गर्भ के साथ ताई उसे इस हालत में देखे, तो पता नहीं उसका क्या हाल करें? यह सोच कर ही वसुधा डर जाती थी।

आज उसे नेगी आंटी की बात याद आई कि सिर्फ आज में जीना ही जीवन है। आज तो जीवन की सिर्फ एक ही मांग है कि इस बच्चे को जन्म दिया जाए। पीछे की किसी भी बात को मन में ना लाया जाए। वसुधा यह सब सोचकर अपने आपको ही नहीं, उस बच्चे को भी तकलीफ देगी। यह सोचते ही उसने अपने मन को शांत करने की कोशिश की। उस दिन उसका मन बहुत उदास था।

वैसे तो यहां की दिनचर्या उसे इतना व्यस्त रखती थी कि कब दिन बीता, कब रात आई कुछ पता ही नहीं चलता था। गांव में घर-घर जाना और लोगों को पढ़ाई के लिए उत्साहित करना, कोई आसान काम नहीं था।

हां, एक बार काम शुरू किया तो यहां के लोगों से उसका मधुर रिश्ता बन गया था। जिसके कारण वह अपनी समस्या बताते और समाधान मिल जाने पर विश्वास करने लगते थे। वसुधा आसपास के और दूरदराज के इलाकों में भी जाने लगी थी।

नशा मुक्ति अभियान भी उन लोगों ने शुरू किया था। हर दिन एक नया अनुभव, नए लोग और नए एहसास होते थे। इन सबके बीच, उसके मन में एक ही बात आती थी कि यहां दुख, चिंता और परेशानी सबके जीवन से जुड़ी है।

अशिक्षा और गरीबी के कारण कितने जीवन अंधेरे की ओर बढ़ते जा रहे हैं। जहां से वापस आना आसान नहीं है। आज बहुत उदास मन के साथ अपने को घसीटती हुई वसुधा, काशीबाई के घर गई थी। जब से नशा मुक्ति अभियान से जुड़ी है, तब से वह काशीबाई को जानती है।

तीन बच्चे, शराबी पति जो हर रोज अपनी तो अपनी काशीबाई की मजदूरी के पैसे भी शराब में डुबो देता था। काशीबाई कभी रोटी, कभी भूखे पेट तो कभी नमक-चावल खाकर अपने दिन काट रही थी।

आज काशीबाई वसुधा को अपने साथ अपनी झोपड़ी में ले गई, बोली ''दीदी, चलो ना आज बहुत दिन बाद रोटी के साथ भाजी बनाई है।'' जमीन पर बैठी वसुधा काशी को देख रही थी। उसके चेहरे की खुशी ने उसे भी सुकून दिया।

चूल्हे के ऊपर कोयले से खींची लकीरों ने उसका ध्यान आकर्षित किया।

वसुधा ने पूछा ''यह क्या है काशी?''

''दीदी, हम अनपढ़ पैसों का हिसाब कैसे रखें? यह लकीरें उसके लिए होती है। रोज पैसे मिले तो एक लकीर और पति ने कमाई ले ली तो मैं लकीर को काट देती थी।''

वसुधा ने लकीरों को ध्यान से देखा तो कहा ''अरे, इसमें तो ज्यादा लकीरें कटी हुई हैं।''

काशी ने चहकते हुए कहा ''ऊपर नहीं, नीचे देखो दीदी! यहां लकीरें नहीं कटी हैं। दीदी, तुम्हारी बातें सुनकर ही तो मेरे मरद को बात समझ में आई। चार दिन पहले जब यह लकीरें देखी तो रो पड़ा, कहने लगा 'तू बच्चों के साथ कितना भूखी रही री! इतनी सारी कमाई मैं पी गया! अब हम रोटी खाएंगे और बच्चों को भी भरपेट खिलाएंगे।'

आंसू पोंछती हुई काशीबाई बोली ''आज यह भाजी वही लाया है दीदी।''

रोटी का कौर हाथ में लिए वसुधा सोच रही थी ''मैं सीखने आई हूं या सिखाने? कल नहीं आज के साथ जीना ही जीवन है।'' कबीरा की शादी से जुड़े दर्द से अपने आप को अलग करते हुए वसुधा ने अपने मन में एक बार फिर आगे बढ़ने का साहस भरा।

डॉक्टर देसाई, वसुधा का बहुत ख्याल रखते थे। सातवें महीने के बाद तो उन्होंने उसका काफी काम बंद करवा दिया था। फिर भी वसुधा उनको मना ही लेती थी-

''दादा, घर में ही तो काम कर रही हूं! मैं बिल्कुल अच्छी हूं! मुझे कोई दिक्कत नहीं है!''

''तुम्हारा तो सिर्फ अपने काम में मन लगता है। उस बच्चे का क्या? उसे थोड़े आराम की जरूरत है। तुम यहां पांच घंटे से लगातार बैठी हो। चलो उठो, थोड़ा लेट जाओ!''

''दादा, अब काम बढ़ रहा है, तो मेहनत भी ज्यादा करनी होगी। अब गाडरवारा के आसपास की जगह से भी बहुत ऑर्डर मिलने लगे हैं। इतना सारा अचार और पापड़ बनवाना आसान नहीं है।''

''मैं जानता हूं, हमारा काम बढ़ रहा है। बस दो-तीन महीने रुक जाओ! उसके बाद जितना चाहो, उतना काम कर लेना। फिर तुम रात में कौनसा आराम करने वाली हो? अभी तो तुम्हें रात में बैठकर बीएड की पढ़ाई भी करनी है। चलो उठो!'' वसुधा के सर पर हाथ रखकर बहुत प्यार से डॉक्टर देसाई उसे मना लेते थे।

डॉक्टर देसाई ने वसुधा को नवां महीना लगने पर नेगी आंटी से कहा था ''कुचवाडा में अस्पताल की सुविधा अच्छी नहीं है। अब आप वसुधा को अपने पास रख लीजिए।''

नेगी आंटी कुछ कहती उससे पहले वसुधा ने जवाब दे दिया था-''अभी मेरा मन नहीं है। नवां महीना पूरा तो होने दीजिए, तब चली जाऊंगी।'' गाडरवारा में कहीं ताई ना मिल जाए, इस बात का उसे डर लगता था।

किसे पता था कि कल क्या होगा? एक रात अचानक वसुधा की तबीयत इतनी बिगड़ी कि गाडरवारा जाते-जाते उसका बीपी बढ़ गया। उसे उल्टियां होने लगी।

रास्ते में डॉक्टर देसाई के पास जो दवा थी, उसी के सहारे वह उसे गाडरवारा तक लेकर आए थे। नेगी आंटी भी अस्पताल में रात के दो बजे वसुधा के पास थीं।

किसी के भी पास होने से क्या होता है? जब अच्छा वक्त ही साथ ना हो तो। उस रात खुशियां वसुधा से दूर चली गईं। उसके पास ख़बर आई कि 'बच्चा पैदा होने के कुछ लम्हों के बाद ही मर गया!'

''क्या, यह कैसे हो गया? बच्चा तो जिंदा था। ऐसा क्या हो गया कि वह...?''

''किसी ने कुछ नहीं किया बेटा! जो करना था, वह ईश्वर ने कर दिया। बच्चे ने बाहर आकर सांस ली थी। अचानक उसे सांस लेने में दिक्कत आई। हम कुछ करते उसके पहले ही...''

''सारे दुख मेरे ही हिस्से में क्यों? मेरा अपना कोई नहीं है। अब इस बच्चे के साथ जी लेती, तो यह भी नहीं हो सका। क्या मतलब है इस ज़िंदगी का? मैं क्यों जिंदा हूं? मेरी सांसें क्यों नहीं रुक जातीं? ईश्वर ने मुझे क्या देखने के लिए जिंदा रखा है?'' रोते हुए वसुधा तड़प उठी थी।

नेगी आंटी ने वसुधा के ऊपर अपना हाथ रख कर कहा ''धीरज रखो वसुधा! अपना ख्याल रखो! अभी तुम्हारा शरीर कमजोर है!''

''आंटी!'' कहकर वसुधा फूट-फूट कर रोने लगी। उसे नेगी आंटी सिर्फ सहला ही सकती थी। शब्द तो सारे झूठे ही लग रहे थे। उसके पास खड़े डॉक्टर देसाई बहुत ख़ामोश थे। नेगी आंटी कुछ देर बाद अपने घर चली गईं। वसुधा के खाने के लिए कुछ इंतजाम करने थे।

बच्चा होने के बाद जो खाना दिया जाता है, वह जरूरी था। इसका बच्चे के होने या ना होने से क्या मतलब? मां के शरीर ने वह सारी पीड़ा तो सही ही थी जो बच्चे के जन्म से जुड़ी थी। उस शरीर में ऊर्जा तो भरनी ही थी। सारी रात वसुधा सो नहीं पाई थी। उसकी खुली आंखों को देखते डॉक्टर देसाई उसे कहते रहे कि ''थोड़ा आराम कर लो!'' पर वह न सो सकी। हां, उसे यह ख्याल भी नहीं आया कि डॉक्टर देसाई भी उसके साथ पूरी रात जागे हैं।

सुबह वसुधा ने डॉक्टर देसाई से कहा ''यह बच्चा जिसकी निशानी थी। उसने मुझसे कहा था कि ''तू आज की लड़की है। कोई उन्नीस सौ सत्तर की कन्या नहीं है। जब मैंने उसे बताना चाहा था कि मैं मां बनने वाली हूं। उसकी इस बात ने ही मुझे इस बच्चे को जन्म देने की ताकत दी थी। पर आज यह बच्चा भी मुझे छोड़ कर चला गया। इसका पिता तो जानता भी नहीं था कि इसका जन्म होने वाला है। मैं हार गई!'' वसुधा ने डॉक्टर देसाई से कहा या वह अपने आप से बात कर रही थी।

''हारते तो वो हैं, जो कोशिश नहीं करते हैं। तुमने तो अपनी पूरी शक्ति के साथ कोशिश की थी। क्या था तुम्हारे पास, एक बिल्कुल तन्हा ज़िंदगी! उसको भी तुमने रंगों से भरने की कोशिश की थी। तुम्हारी कोशिश में ही तुम्हारी सफलता बसी है। दिल को छोटा मत करो! तुम एक बहादुर लड़की हो!''

''दादा, मैं कबीर को क्या बताऊंगी?''

''कुछ भी कहने की जरूरत नहीं होगी। तुम्हारा व्यक्तित्व ही उसे सब कुछ समझा देगा।'' डॉक्टर देसाई ने अपनी बात कह तो दी थी। पर वह कबीर के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे और ना ही जानना चाहते थे। वह वसुधा को उसके अतीत में ले जाकर उसे और वेदना नहीं देना चाहते थे।

''मुझे लग रहा है कि मैं अपनी जान दे दूं। अपनी नसें काट डालूं!''

''पागल हो गई हो क्या, तुम्हें क्या लगता है कि दुख सिर्फ तुमने ही देखे हैं, बाकी सब सुखों की सेज पर सो रहे हैं? तुम्हें पता है, मेरी उन्नीस साल की बेटी और पत्नी कैसे मर गईं?''

''आपका परिवार था?'' वसुधा ने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं। सबके साथ इतने दुख लगे थे कि पीछे की बातों से किसी का मन दुखाना ठीक नहीं है। यही वह सोचती थी।

''हां, मेरा एक परिवार था। मेरी पत्नी पारुल भी डॉक्टर थी, जो जात-पात को नहीं मानती थी। मैं, दिन में दो बार नहाने वाला, छुआछूत को मानने वाला और वह, अपना और काम करने वाली बाई का चाय का कप भी एक साथ रखती थी। यहां तक कि टॉयलेट साफ करने वाले को छूने से भी परहेज नहीं करती थी। बेचारा हमारे परदे छूने से घबराता था, तो वह उससे कहती थी-'मेरे घर में यह सब नहीं चलता है। तुम आराम से पर्दे छू सकते हो।' मानव से प्रेम और विश्वास उसकी फितरत थी। वह थिएटर से जुड़ी थी। देश के हर शहर में उनकी कंपनी अपने प्ले करती थी। तब तक हमारी बेटी सारा भी अपनी मां के साथ थिएटर में काम करने लगी थी। एक बार वह मां-बेटी किसी दूसरे शहर में गईं थीं। उन दोनों को जिस समुदाय की महिलाओं का रोल निभाना था, उसके लिए उन दोनों के कॉस्ट्यूम यहीं से तैयार हुए थे। किसे पता

था कि प्ले के बीच में दंगा हो जाएगा। वहां स्टेज पर ही मारपीट शुरू हो गई थी। वह दोनों तब तक स्टेज पर नहीं जा पाईं थीं। उनकी पूरी टीम वहां से भागी। पारुल और सारा अपनी कार में बैठकर वहां से निकली। हमारा ड्राइवर समीर उनके साथ था। शाम का समय और शिकारी की नजर से अनजान वे लोग अपनी होटल की ओर जा रहे थे कि रास्ते में एक सुनसान इलाके में उनकी गाड़ी को कुछ लोगों ने रोक लिया। मां की आंखों के सामने बेटी का बलात्कार और फिर वहीं बेहोश बेटी को छोड़कर उन्होंने मां के साथ भी वही ज़ुल्म किया। समीर ने कहा था 'आप क्या कर रहे हो? यह आपकी ही बहन-बेटी है।' उन्होंने उसके मुंह पर तमाचा मारते हुए कहा था-'चुप हो जा! जब कपड़े उतरते हैं तो सब यही कहते हैं।' समीर उन दोनों को कार में डालकर कैसे घर लाया, उसका दिल ही जानता है। रास्ते में कोई गाड़ी रोक ले। दो घायल महिलाओं के साथ उसे ही किसी इल्ज़ाम में फसा दे। यही सब सोचता और डरता हुआ किसी तरह वह गाड़ी चलाता रहा। रास्ते में कब सारा की सांसे बंद हो गई पारुल को पता ही नहीं चला। उसे जब होश आया तो उसने कहा 'मेरा हाथ तो पूरे वक्त सारा की नब्ज़ पर था। वह कैसे छूट गया? मेरा हाथ, मेरी बच्चे के हाथ पर होता तो कुछ भी नहीं होता।' दो दिन की यातना के बाद पारुल तीसरी सुबह भी नहीं देख सकी। इंटरनल ब्लीडिंग ने उन दोनों की जान ले ली थी। मेरी तन्हाई और दर्द यहीं खत्म नहीं हुआ। एक दिन समीर मेरे पास आकर बहुत रोया था। वह बोला-'साहब, अब मैं और नहीं जी पाऊंगा। मुझे पूरे समय बिटिया और मैडम ही दिखती हैं। उनकी चीखें सुन-सुनकर थक गया हूं। कई रातों से सो नहीं पाया हूं। मुझे लगता है, अब गहरी नींद में जाने का वक्त आ गया है।' उस रात मैंने ही उसे नींद की दवा दी थी। पर वह घर जाने से पहले ही नदी में कूद गया। दिन के उजाले में मरते इंसान को देखने का किसी के पास वक्त नहीं है, तो रात के अंधेरे में उसे कौन देखता और बचाता? उन तीनों की मौत मुझ पर भी हावी होने लगी थी। यदि मुझे हीरा नहीं मिलता तो शायद मैं भी खुद को मार डालता। पर इस बच्चे के आने से मेरी ज़िंदगी बदल गई।'' डॉक्टर देसाई की बात सुनकर वसुधा के आंसू थम गए।

यह सुनकर पलंग पर बैठी वसुधा ने अपनी दोनों बाहें फैला दीं। डॉक्टर देसाई उसके पास आए और उन्होंने उसकी दोनों बाहों को थाम लिया। दोनों एक बार फिर फूट-फूटकर रो पड़े। वसुधा के पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने वसुधा

का एक हाथ पकड़ा और बोले ''जात-पात और भेदभाव वाली सोच ने पूरे विश्व में अनगिनत लोगों की जानें ली हैं। जिसने मेरे परिवार को भी खत्म कर दिया। इस सोच को मिटाना बहुत जरूरी है। इंसान की एक ही पहचान है, मानवता! बाकी सब बेकार है! वैसे भी जात-पात की बात तो वही लोग करते हैं, जो मानवता के टुकड़े करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। किसी भी गांव, शहर, गली या मोहल्ले को देखो तो हर जाति में प्रेम और अपनापन है। दुख तकलीफ में सब एक-दूसरे के काम आते हैं। इंसान अपनी रोजी-रोटी कमाने के बाद अमन चैन चाहता है। मैंने यह बात समझने में बहुत देर कर दी। आज याद करता हूं तो आश्चर्य होता है कि पारुल अपनी सोच के साथ मुझे कैसे संभाले रखती थी। मेरी छुआछूत की चीजों का भी ध्यान रखती और अपनी बुलंद सोच के साथ जीती भी थी। आज मेरी सोच संकुचित मर गई और मैं पारुल की बुलंद सोच के साथ जीता हूं। मगर अब बहुत देर हो गई। एक बार किसान की आत्महत्या के दौर में हीरा के माता-पिता को मैंने मरते हुए और इस बच्चे को तन्हा होते हुए देखा था। उस समय मुझे इस बच्चे की तनहाई का एहसास हुआ। मुझे अपने अकेलेपन से ज्यादा इसके अकेलेपन की चिंता हुई थी। तब मैंने निर्णय लिया कि इस बच्चे को मुझे पालना है। बस, यहीं से मुझमें जीने की ताकत आ गई थी। जीने का कारण मिलना बहुत जरूरी था। वह मिल गया, तो मैं जी गया। अब तुम ही बताओ, यदि मैं हीरा को नहीं मिलता तो उस बच्चे का क्या होता?''

''मैं आपकी बात समझ गई दादा, अब कभी भी कोई शिकायत नहीं करूंगी!''

फिर वहीं

गाडरवारा पहुंचने पर जब गाड़ी नेगी सर के घर के बाहर रुकी तो कबीर ने देखा, यह घर तो उसके घर से बहुत दूर है। उसने अपने किसी दोस्त से कहा था 'मेरे लिए किराए का मकान पता करके रख लेना।'

वह यह सब सोच ही रहा था कि सूरज सिंह अपनी मां से कह रहे थे "मां, यह कबीर है। इनकी यहां सरकारी स्कूल में नौकरी लगी है।"

कबीर ने आगे बढ़कर जब उनके पैर छुए तो उन्होंने कहा "सुखी रहो बेटा! गांव के स्कूल में बच्चों को शिक्षा देना बहुत बड़ा पूनीत काम है। आज यहां के स्कूलों को ऐसे ही टीचर की जरूरत है, जो बच्चों के भविष्य की चिंता करें।"

"मां, यह एक बहुत बड़ी कोचिंग की नौकरी छोड़ कर आए हैं।"

"अरे, वाह शहर की नौकरी छोड़कर गांव आना तो बहुत हिम्मत की बात है। आज पैसा और सुविधा छोड़कर कौन गांव में आना पसंद करते हैं? बेटा, मुझे बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर। मैंने खाना बना कर रखा है। आप दोनों खाना खा कर आराम कर लो। मैं शाम तक वापस आती हूं।" कहकर नेगी सर की मां अपनी जीप में बैठकर चली गईं।

कबीर ने सोचा था कि सूरज सिंह की मां कोई बहुत वृद्ध महिला होगी। पर उन्हें देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि वह कितनी ऊर्जा से भरपूर है। उम्र के छठे दशक में उनका उत्साह उसे बहुत अच्छा लगा। साड़ी पहने बहुत सादगी से अपने आत्म विश्वास के साथ आगे बढ़ती नेगी आंटी कबीर को बहुत आकर्षक लगीं। जितनी चुस्त-दुरुस्त आंटी थी वैसा ही उन्होंने घर को भी सहेजा था। एक बहुत साफ-सुथरा घर जिसमें हर चीज करीने से लगी थी। कबीर को बहुत अच्छा लगा।

जब कबीर ने यही बात सूरज सिंह से उनकी मां के लिए कही तो वह बोले "मां ने अपने काम को बहुत फैला लिया है। हम दोनों भाइयों को घर के पैसे से कोई मतलब नहीं है। मां बड़े आराम से अपने एनजीओ का काम देखती हैं। साथ ही मैं और बड़े भैया भी मां को जितना सहयोग दे सकते हैं, दे देते हैं। आस-पास के गांव के लोग भी मां से जुड़ने लगे हैं। गांव में शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी जरूरतें बहुत हैं। सिर्फ सरकार इसे पूरा नहीं कर सकती है। इस काम में मां का ऐसा मन लगा कि वह हमारे पास बहुत कम ही आ पाती हैं।"

"आपकी मां का यह समर्पण तो एक मिसाल है। समाज के लिए सोचने वाले कम होते जा रहे हैं। मगर आज भी कुछ लोग हैं, यह बहुत संतोष की बात है।"

"हां, हमें अपनी मां पर गर्व है! हम दोनों भाई आज जो भी हैं, सब अपनी मां के साहस के कारण ही हैं।" आज सूरज सिंह से मिलने के बाद कबीर को लगा कि यहां सभी लालच के लिए भाग रहे हैं, ऐसा नहीं है।

बहुत से लोग हैं जो कुछ बनने के बाद भी, समाज के लिए कुछ करने का जज़्बा रखते हैं। जो रिश्तों के दायरे के बाहर भी मानवता की सेवा करना पसंद करते हैं।

पायोनियर कोचिंग में रहकर तो कबीर को लगने लगा था कि इंसान मशीन बन गया है, जो पैसों के पीछे भाग रहा है। जिसके अंदर इंसानियत बिल्कुल ख़तम हो चुकी है। आज अपने गांव में आकर कबीर को बहुत अच्छा लगा।

उसके अंदर का खालीपन आज सांस लेने लगा। वह अकेला होकर भी अकेला नहीं था। यहां आने के बाद उसे अपने घर जाना था और वसुधा के बारे में पता करना था। कबीर वसुधा का बहुत बड़ा गुनहगार है। पर फिर भी उसके सामने जाना है। एक बार उसे देखना तो है ही। शायद उसकी शादी से जुड़ी कोई ख़बर ही मिल जाए। कबीर आगे के लिए अपने मन को तैयार कर रहा था।

कबीर को आज अपने बाबूजी की बात याद आ रही थ –"शिक्षा मानव उत्थान में काम आए। हमने उसे व्यवसाय बनाया तो हम अगली पीढ़ी को संस्कारवान नहीं बना सकते हैं। शिक्षक का समर्पण ही शिष्यों के चरित्र निर्माण में प्रेरणा का कार्य कर सकता है। जिसकी आज बहुत जरूरत है। नहीं तो जैसे गुरु पैसे के लिए भाग रहे हैं

वैसे ही शिष्य कल पैसे के लिए दौड़ेगा। इस दौड़ में जीवन के मूल्य गिरते और पीछे छूटते जाएंगे।''

खाना खाने के बाद सूरज सिंह ने कबीर से कहा ''आइए, अंदर चलते हैं। थोड़ा आराम करते हैं।''

''अरे नहीं, इतना अच्छा खाना खाने के बाद अगर आराम किया तो नींद ही आ जाएगी। मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जा रहा हूं!''

''हां, तो गाड़ी लेकर चले जाएं!''

''यह तो मेरी अपनी जगह है। सब पास-पास ही तो है। मैं पैदल ही जाता हूं। एक दोस्त को कहा था, उसने मेरे लिए कमरा ढूंढ कर रखा है। बस वही देख कर आता हूं।''

''उसकी क्या जरूरत है? यह घर बहुत बड़ा है। आप यहां मां के साथ आराम से रह सकते हैं।''

''अरे, नहीं आपने मेरा साथ दिया, यह बहुत बड़ी बात है। यहां रहने पर मैं आंटी से जुड़ा तो रहूंगा। देखता हूं, स्कूल के पास ही कुछ मिल जाए।''

''आप आराम से आइये। शाम का खाना साथ में खाते हैं। तब तक मां भी आ जाएंगी।''

''जी, बिलकुल!''

कबीर वहां से बाहर निकला ही था कि उसे सामने से आते हुए वसुधा के ताऊ दिख गए। उसने उन्हें आवाज देकर रोका। वह कबीर को देखकर हड़बड़ा कर रुक गए। एक पैर सड़क पर और एक पैर साइकिल के पैडल पर रखे हुए ही वह बोले ''कबीर, कैसा है बेटा? तुम सब कहां चले गए थे? कोई पलट कर आया ही नहीं!''

उनके पैर छूते हुए कबीर ने कहा ''ताऊ, वापस आने जैसा बचा ही क्या था? पहले तारा फिर बाबूजी और मां के जाने के बाद मैं वहीं नौकरी करने लगा था। अब मेरी सरकारी स्कूल में नौकरी लग गई है इसलिए यहां वापस आ गया हूं।''

''तुमने घर भी बेच दिया था?'' ताऊ ने उससे आश्चर्य से पूछा।

''तारा के इलाज के लिए पैसों की जरूरत थी।'' कबीर ने दुखी मन से कहा।

''फिर भी बिटिया नहीं बची!'' कहते हुए ताऊ भी शोक में डूब गए।

आंखों में आंसू आ जाने से कबीर ने सिर्फ सिर हिला कर मना किया। उसके शब्द बाहर नहीं निकल पाए। तब तक ताऊ साइकिल से उतरे और उन्होंने कबीर के कंधे को छूकर उसे सहलाया और उसे अपने पास खींच लिया। कबीर उनके कंधे पर सर रखकर सिसक उठा।

''शास्त्री जी को ऐसे दिन देखने पड़े। जिसने दुनिया का भला किया उसके साथ क्या हुआ? चल बेटा, घर चल!'' ताऊ ने कहा और कबीर उनके साथ हो लिया। वसुधा कहां है? और कैसी है? यह जानना उसके लिए बहुत बड़ी बात होगी। जिनके घर जाने की सोच रहा था, वही उसे अपने साथ ले जा रहे हैं।

वसुधा से जुड़ा कोई भी सवाल कबीर ने नहीं किया। रास्ते भर ताऊ भी चुप रहे। जब घर में घुसे तो ताई की कड़कती आवाज ने एहसास दिला दिया कि यह घर जैसा कल था वैसा ही आज भी है-''कहां चले गए थे? संग्राम कब से आपको ढूंढ रहा था।''

''मुझे ढूंढ रहा था। उसे कल ही तो पांच सौ दिए थे। आज फिर रुपए मांग रहा था। कहां से आएंगे इतने रुपए? पेंशन के सारे रुपए ऐसे ही खत्म हो जायेंगे तो कल खाएंगे क्या?''

''एक तो मेरा भाई इस घर में रहकर हमारी सेवा कर रहा है, फिर भी यदि तुम से रुपया नहीं छूटेगा तो...'' कहते-कहते ताई बाहर आ गई। वह कबीर को देख कर चुप हो गई। कुछ बोल ही नहीं पाई।

ताऊ ने ही उससे कहा ''ऐसे क्या देख रही है? कबीर वापस गांव आ गया है। कुछ खाने को लाकर दे दे!''

''अब यह यहां क्यों आया है?'' हमेशा की तरह चुभने वाली आवाज में ताई ने कहा।

''ताई, मैं खाना खा कर आया हूं। वह तो ताऊ रास्ते में मिल गए थे इसलिए...''

कबीर ताई के पैर छूने को आगे बढ़ता उससे पहले ही उनके शब्दों ने उसके पैर जकड़ लिए।

''जिसके लिए आए हो, वह तो ताऊ की इज्जत की परवाह किए बगैर यहां से जा चुकी है। तुम्हें पता है कि नहीं?''

''इसने वैसे ही कौनसे कम दुख उठाए हैं। जो देखते ही जहर उगल रही है। शास्त्री जी तारा और उनकी पत्नी कोई भी जिंदा नहीं रहे। अभी तो अपना मुंह बंद कर ले!''

''अब अपनी लाडली का पक्ष लेने की जरूरत नहीं है। वह जो करके गई है उसे बताने में शर्म कैसी? जब उसे घर से भागते हुए शर्म नहीं आई। अपने ताऊ की इज्जत का ख्याल नहीं आया तो उसके कर्मों को हम क्यों छुपाएं? वह मेरे भाई से शादी कर के सुख से रह सकती थी। इस घर में राज करती पर हर किसी के नसीब में सुख कहां?'' ताई तो अपनी ही धुन में बोले जा रही थी। पर हर शब्द कबीर को सुन्न कर रहा था।

यह क्या हो गया? उसने अपने दुख में वसुधा को भुला ही दिया। एक बार भी उसे याद नहीं आया कि वह कैसी होगी? अब वह क्या सवाल करे? उसे क्या जवाब सुनने को मिलेगा। यही डर उसके मन में आ गया।

ताऊ ने ही बात को आगे बढ़ाया।''अब तेरे लफंगे भाई के साथ शादी करने के सिवाय तूने उसके लिए कोई रास्ता भी तो नहीं छोड़ा था। वह घर छोड़कर नहीं जाती तो आज तेरी शराबी भाई की मार खा रही होती जैसी कि मैं खाने लगा हूं।''

''क्यों जमाने को घर की बात बता रहे हो? यह कौनसा हमारे काम आने वाला है?''

''मेरे काम आए ना आए तो क्या हुआ? जिन्होंने पैदा किया उनका तो श्रवण कुमार ही था। तेरे भाई की तरह तो नहीं है कि अपने घर को उजाड़ कर आज हमारा...''

''अब तुम चुप होते हो कि बुलाऊं संग्राम को?''

''रोज-रोज की मार से तो अच्छा है कि मर ही जाऊं!'' कहते हुए ताऊ रोने लगे। उनके कंधे पर हाथ रखकर कबीर उन्हें सांत्वना देने लगा। जिसकी ख़बर के

लिए यहां आया था, उसके बारे में एक सवाल भी नहीं कर पाया। बदले में इस घर के जहरीले माहौल ने उसे डरा दिया था।

अब किसी से कुछ भी कहने की जरूरत नहीं थी। साथ ही उसे आश्चर्य हुआ कि घर का हाल कैसा हो गया है! ताऊ के पैर छूकर कबीर बाहर निकल रहा था कि ताऊ ने आवाज देकर कहा''कल तुमसे मिलने स्कूल में आएंगे बेटा।''

''हां, ताऊ मैं इंतजार करूंगा!'' एक दुखी व्यक्ति को दूसरा दुखी व्यक्ति क्या सांत्वना दे? कबीर को यही समझ नहीं आया। वसुधा के घर से उसे यह उम्मीद तो नहीं थी कि यहां उसे वसुधा मिल जाएगी। उसका इंतजार करती हुई। उसका समय तो कबीर खो चुका था। तारा के जलने के बाद कबीर ने ना तो उससे कभी बात की, ना ही कोई वादा किया था। किस बात के सहारे, किस आसरे पर वसुधा उसका इंतजार करती?

मगर वसुधा इस घर को छोड़कर चली जाएगी और अब कहां है? क्या कर रही है? इसकी भी ख़बर नहीं होगी यह तो उसने कभी सोचा नहीं था। उसे तो लगता था कि वसुधा पढ़ी-लिखी है और इतनी सुंदर है कि उसकी शादी किसी अच्छी जगह हो गई होगी।

शायद वह कोई अच्छी नौकरी भी कर रही होगी। उसे क्या पता था कि वसुधा से जुड़ी एक भी अच्छी ख़बर उसे नहीं मिलेगी।

बाहर निकलते ही उसका फोन बजा''कबीर तू कहां है?''

''स्कूल से थोड़ा दूर आ गया था।''

''स्कूल के पास ही आ जा। मैं वहीं खड़ा तेरा इंतजार कर रहा हूं।'' स्कूल से मुश्किल से दो-चार मिनट के रास्ते पर ही एक मकान मिल गया। जिसमें एक बुजुर्ग दंपत्ति रहते थे।

उन्हें एक कमरा और एक किचन किराए पर देना था। उन अकेले दंपत्ति को सिर्फ किसी व्यक्ति की जरूरत थी इसलिए वह कमरा किराए पर देना चाहते थे। वैसे उन्हें पैसे की कोई जरूरत नहीं थी।

एक साफ-सुथरा घर, दो कमरे। एक छोटा-सा किचन, एक बेडरूम और उससे ही लगा बाथरूम। कमरे में एक पलंग अलमारी और जरूरी फर्नीचर था। रसोई में गैस और कुछ बर्तन थे। यह सब कबीर को बहुत अच्छा लगा। यहां उसे अब अपने घर की शुरुआत करने वाला कोई काम नहीं करना है। सब कुछ उसे मिल गया।

आसपास कुछ मकान और एक बहुत बड़ी फैक्ट्री थी-'भारत फाइबर इंडस्ट्री।' किराया तय करना भी बहुत आसान रहा। मकान मालिक ने इतने कम रुपए बोले कि कबीर को सोचने की जरूरत ही नहीं हुई।

उसने एकदम से कहा ''हां मुझे पसंद है! आप एडवांस ले लीजिए।'' कबीर ने कह दिया था।

मिस्टर रेड्डी ने मुस्कुराते हुए कहा ''इसकी क्या जल्दी है? दे देना आराम से!''

''आप ले लीजिए! साथ ही कितने महीने का एडवांस देना होगा वह भी बता दीजिए।'' कबीर ने कह तो दिया पर उसे याद आया कि वह अपना क्रेडिट कार्ड तो रुबी को देकर आ गया है। अभी तो उसके पास बहुत कम रुपए हैं।

''सर, सच तो यह है कि मेरे पास कुछ भी नहीं है। स्कूल से जैसे ही मुझे मेरी तनख्वाह मिलेगी तब ही मैं आपको पैसे दे पाऊंगा। क्या मैं बिना पैसे दिए यहां रह सकता हूं?''

''तुम कैसी बात कर रहे हो? मैंने तो तुमसे पहले ही पैसे की बात नहीं की। पैसे आराम से दे देना। हां, इस महीने के खर्च के लिए जितने पैसों की जरूरत हो, वह तुम मुझसे ले सकते हो। इसे अपना ही घर समझो! आराम से रहो! शहर से गांव में यदि कोई नौजवान शिक्षा देने के लिए आया है तो हमें उसका स्वागत करना चाहिए। वही मैं करना भी चाहता हूं। तो फिर एक काम करो, आज रात का खाना तुम हमारे साथ ही खा लो!''

''आपका बहुत शुक्रिया! आज शाम का खाना मुझे नेगी आंटी के घर खाना है। उनके बेटे सूरज सिंह के साथ। रात को मैं अपना सामान लेकर आता हूं।'' इस घर को देखकर कबीर को बहुत सुकून मिला। उसने सोचा भी नहीं था कि उसे मकान और मकान मालिक इतने अच्छे मिल जाएंगे।

सूरज सिंह के घर से रात का खाना खाकर जब कबीर अपने घर जाने लगा तो नेगी आंटी ने उससे कहा, ''बेटे, जब भी मन कहे यहां आ जाना, मेरे साथ खाना खा लेना। इस घर को अपना ही घर समझना बेटा। वैसे सूरज, हर शनिवार, इतवार आता ही है तो दो दिन तुम हमारे साथ ही रह लेना।''

''जरूर आऊंगा आंटी! आपको भी अगर कोई काम हो तो मुझे जरूर बुला लीजिए।'' कबीर ने आगे बढ़कर नेगी आंटी के पैर छुए। नेगी आंटी ने प्यार से कबीर के सर पर हाथ रखा।

जब सूरज सिंह कबीर को छोड़ने उसके घर आए तो उन्होंने उसका घर देखकर कहा ''वाकई में यह घर तो बहुत अच्छा है। तुमको बहुत अच्छा घर मिल गया है। यहां सब कुछ है। कबीर तुमको कोई दिक्कत नहीं होगी।''

''यह उम्मीद से कुछ ज्यादा ही मिल गया है। यह तो मैंने सोचा भी नहीं था। बाजार से बर्तन, फर्नीचर, खाने का सामान पता नहीं, क्या-क्या लाना होता। मगर यहां तो सिर्फ खाने का सामान लाना है, बाकी सब कुछ है। पता ही नहीं चलता है कब, कौन, कैसे, किसका कितना साथ दे देता है?''

''यार, यह सच में बहुत अच्छा हो गया। मुझसे तुम निकल गया, आप कहते-कहते।''

''तुम ही ठीक है। मुझे एक दोस्त की ही जरूरत है।'' कबीर ने सूरज को देखते हुए कहा।

''वह अब तुम्हारे साथ है।'' कहते हुए सूरज सिंह ने कबीर के कंधे को छुआ था। विश्वास ने उसे कबीर के बारे में सब कुछ बताया था। वह कबीर के जीवन संघर्ष को देख कर चकित था। कितना अकेला हो गया है यह इंसान, फिर भी शांत और सौम्य है।

वसुधा की आस

सूरज सिंह के जाने के बाद कबीर अपने कमरे में लेटा हुआ वसुधा को याद कर रहा था। वह कहां होगी? कैसी होगी? उसके साथ कहीं कुछ... एक अकेली लड़की के साथ क्या हुआ होगा? कोई भी रास्ता नहीं, जिससे उसे ढूंढा जा सके।

क्या कबीर पेपर में यह ख़बर दे कि वह उसे ढूंढ रहा है? क्या लापता...? मन में अनेक विचार आ रहे थे। पर कबीर को समझ नहीं आ रहा था कि वसुधा को ढूंढने के लिए कौनसा रास्ता ठीक होगा।

गणित के सवाल चुटकियों में हल करने वाला कबीर इस सवाल पर उलझ गया था। कौनसा फार्मूला काम आएगा? जिससे उसे वसुधा, सुरक्षित मिल जाए। उसकी खोज, कहीं उसका नुकसान नहीं कर दे। यही सब सोचते-सोचते कबीर सो गया।

सुबह रेड्डी जी की आवाज से कबीर की नींद खुली। वह अपनी पत्नी से कह रहे थे, ''अरे, उसको उठने तो दो! दरवाजा खुलेगा तो मैं उसे चाय के लिए बुला लूंगा।''

''मैंने टिफिन भी बना कर रख दिया है। उससे कह देना।'' उनकी पत्नी की आवाज सुनकर कबीर बाहर निकला। वह अपने घर के बरामदे में बैठे चाय पी रहे थे। कबीर ने आगे बढ़कर उनके पैर छुए।

''बेटे, तुम सुबह के समय पैर छू रहे हो! अब तो बच्चे त्यौहार पर भी पैर छूना पसंद नहीं करते हैं।'' रेड्डी जी ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा।

''एक दिन में इतना प्रेम और अपनापन तो किसी पारिवारिक सदस्य कोई ही मिलता है। आप तो बिना किराए दिए रहने वाले को...''

''अरे, यार कबीर क्यों शर्मिंदा कर रहे हो? तुम हमारे साथ रह रहे हो यह तो हमारे लिए बहुत खुशी की बात है। शास्त्री जी का हमारे परिवार पर बहुत बड़ा एहसान है।'' उन्होंने उसकी बात को बीच में रोकते हुए कहा।

''आप बाबूजी को जानते हैं?'' कबीर ने आश्चर्य से पूछा।

''हां, बेटा चिराग आज जो भी है, उनके कारण ही है। उन्होंने ही उसको इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए सहायता की थी। आज यह घर और पास में फैक्ट्री सब उसी एहसान की बदौलत है।''

''आपका बेटा कहां है?''

''उसका काम बहुत बढ़ गया है। अब उसके पास कई इंटरनेशनल आर्डर होते हैं। अभी वह गल्फ कंट्री में गया हुआ है। उसके साथ उसकी टीम होती है। यहां भी आसपास के एक सौ पचास लोगों को उसकी फैक्ट्री के कारण रोजगार मिल रहा है।''

''वाह, यह तो बहुत बड़ी उपलब्धि है। मुझे सुनकर बहुत अच्छा लगा! आज के समय में जब लोग विदेश में बसना पसंद करते हैं, तब चिराग ने बाहर जाने के अवसर को छोड़कर अपने गांव को चुना।'' यह बोलते ही कबीर को रुबी की पहली शादी वाली बात याद आ गई। पर उसने कुछ नहीं कहा।

कबीर को रेड्डी आंटी ने वहीं चाय का कप हाथ में दिया। उनके हाथ से चाय का कप लेकर उसने उनके पैर छुए। आंटी ने बहुत प्यार से उसके सर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया। कबीर का मन भीग गया उसने अपने आंसुओं को रोक लिया और चाय पीने लगा।

चाय के झूठे बर्तन उठाकर जब अंदर जाने लगा तो रेड्डी आंटी ने कहा ''अरे बेटा, अब यह क्या कर रहे हो? तुम झूठे कप...?''

''आंटी आपने प्रेम तो अपनों जैसा दिया है, तो फिर काम भी करने दीजिए न!'' कहते हुए कबीर आगे बढ़ गया। अंदर जाकर कबीर ने कप धोए और वह बाहर आ गया।

आज के स्कूल

अब प्राइमरी सरकारी स्कूल में शिक्षा का स्वरूप बहुत बदल चुका था। योजनाओं के नाम पर शिक्षकों का आधा समय तो उन्हें पूरा करने में जाता था। उसके बाद आज के बच्चों में वह भोलापन नहीं रहा। जो कल बाबूजी के पास आने वाले बच्चों में दिखता था। जो उनके समय में उनके साथियों में था।

कल के बच्चों में स्कूल से जुड़ा अनुशासन, शिक्षक के प्रति सम्मान और डर सब कुछ था। आज उसकी जगह उद्दंडता ने ले ली थी। बड़ी कक्षा के छात्र, शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार करेंगे यह समझना आसान नहीं लग रहा था।

शिक्षकों का भी वही हाल, उन्हें क्या आता है? वह कितना और कैसा पढ़ा रहे हैं? इसे देखना और सुधारना शुरू किया तो कबीर अपने काम में ध्यान नहीं लगा पाएगा। कुछ दिन उसने स्कूल की व्यवस्था को देखा समझा और बच्चों को पढ़ाना जारी रखा।

कुछ दिनों पढ़ाते-पढ़ाते, उसे लगा कि यदि शिक्षक में बच्चों को पढ़ाने की लगन हो, तो कक्षा का माहौल बदला जा सकता है। बच्चे पढ़ाई में रुचि लेने लगेंगे। कबीर को खुशी हुई कि बच्चे आज भी वैसे ही हैं, जैसे कल थे। हां, हमें भी कल जैसा ही होना होगा। तभी हम बच्चों में समर्पण की भावना ला पाएंगे।

स्कूल के प्रिंसिपल, कबीर के काम और उसकी लगन से खुश थे। एक दिन स्कूल में बहुत शोर हो रहा था। कबीर ने बाहर आकर चपरासी से पूछा ''रामू इतना शोर क्यों हो रहा है?'' कबीर अपनी कक्षा से बाहर निकल कर आ गया। बाहर बहुत लोग इकट्ठे हो गए थे।

''सर जी, के. जी. के बच्चे को वर्मा जी ने डस्टर से मारा। उसके सर से खून निकल गया है। अभी उसकी मां आई थी। उसी का रोना-धोना मचा था।''

''बच्चे को मारना तो गलत बात है!'' कबीर अपनी कक्षा में गया।

उसने बच्चों से कहा ''बच्चों, तुम शोर मत मचाना! मैं अभी आता हूं।'' कहकर वह प्रिंसिपल के रूम में गया।

वहां वर्मा जी प्रिंसिपल को अपनी सफाई दे रहे थे ''सर, मैं क्या करता? कमल बहुत शरारती लड़का है।''

''अरे, तुमको बच्चों को संभालना नहीं आता है क्या? उसको मारने की क्या जरूरत थी? बच्चों को ज्यादा चोट लगी तो आफत आ सकती है।''

''कुछ नहीं होगा सर, आप चिंता मत कीजिए!'' वर्मा जी ने अपनी घबराहट को छुपाते हुए का कहा।

''देखो, भटनागर के आने के बाद ही पता चलेगा कि हुआ क्या है? कमल कैसा है?'' प्रिंसिपल ने चिंतित स्वर में कहा।

कबीर ने वर्मा जी से कहा ''इस बच्चे के इलाज के लिए कोई जरूरत हो तो मुझे बता देना।'' प्रिंसिपल के कमरे से बात करके कबीर अपनी कक्षा में गया। अब उसका पढ़ाने में मन नहीं लग रहा था। फिर भी उसने किसी तरह अपना काम पूरा किया।

स्कूल में कुछ शिक्षक बच्चों को अलग-अलग ढंग से नीचा दिखाते थे। एक दिन एक लड़के के देरी से आने पर उससे बाथरूम धुलवा रहे थे। वह बच्चा देरी से क्यों आया? उसकी क्या मजबूरी रही। यह जानने की चिंता उन्हें नहीं थी। उनके लिए, हर कमी का इलाज सजा है। जिसे देकर, वह अपना दायित्व पूरा कर देते हैं। माने उन्होंने बच्चे को सुधार दिया या यही सुधार की प्रक्रिया है।

स्कूल में यह सब देखकर कबीर हतप्रभ रह जाता था। उसके कुछ कहने पर उसे जो जवाब सुनने को मिलता, वह उसे निराश करता था।

''आपको पता नहीं है। इनकी चमड़ी काली ही नहीं मोटी भी है। यह ऐसे ही हाथ आएंगे। वह कहावत है ना, लातों के भूत... वह यहीं फिट बैठती है।'' कबीर उस समय, उस बच्चे को तो मुक्त करवा देता था। इससे ज्यादा वह कुछ नहीं कर सकता था। यह सब आए दिन होता ही रहता था।

एक दिन तो स्कूल के गेट पर ही एक लड़के को चांटे मारे जा रहे थे। कबीर भागता हुआ वहां गया। उसने मार खाते उस बच्चे को अपने पास खींच लिया।

''क्या हो गया?'' इतना ही पूछ पाया था कबीर।

''इनका हर दिन का नाटक है। एक दिन मारो तो दूसरे दिन यूनिफार्म में आएगा। अगले दिन फिर बिना यूनिफार्म के आएगा। इनको इस मार से कोई फर्क नहीं पड़ता है।''

बच्चे का मार से बच जाना उनके हाथ में खुजली दे गया था। गुस्से में उन्होंने कहा ''आपके बचाने से यह सुधरने वाले नहीं है।''

''क्या बात है संतोष? शर्ट क्यों नहीं पहनता है?'' उसके लाल गाल को देखकर कबीर का मन द्रवित हो गया। बच्चे के सर पर हाथ रखकर उसने उससे सवाल किया था। उसके छूते ही उसके आंसू बह निकले।

उस बच्चे का जवाब ''निक्कर पहन कर आ गया। हमारे पास एक ही शर्ट है। एक दिन मेरी बहन पहनती है, एक दिन मैं। हम दोनों बारी-बारी से मार खाते हैं।''

''क्या, बताया क्यों नहीं?'' कबीर ने गुस्से से कहा। उसने सोचा यह कैसा बच्चा है? मार खा रहा है पर अपनी बात नहीं बता रहा है।

''मास्टर जी के सामने बोलने की मनाही है। बोलो तो और मारते हैं। मुर्गा बना...''

''चुप हो जा! बोलो तो... इनके बहाने सुने तो स्कूल के अनुशासन को कैसे संभाल पाएंगे?''

संतोष रोता हुआ, अपना लाल गाल लेकर कक्षा में चला गया। पर क्या इतने अपमान के बाद उसका पढ़ाई में मन लगेगा? अभावग्रस्त के साथ यह कैसा व्यवहार है? जो अपमानित कर रहे हैं क्या वह बीमार नहीं हैं? कबीर का मन बहुत दुखी हो गया। उसे गुस्सा भी आया।

उसके बावजूद वह किसी भी शिक्षक की सोच को नहीं बदल पाएगा। इस बात का उसे दुख था। उन सबकी अपनी सोच है, जिसमें मानवता के लिए जगह ही नहीं है।

कबीर ने प्रिंसिपल से इस बारे में बात की तो उनका कहना था -''इनकी पहुंच ऊंची है। हम इनका कुछ भी नहीं कर पाएंगे। पक्की नौकरी का सबसे बड़ा नुकसान यही है कि व्यक्ति जो चाहे करे, उसे कोई डर नहीं होता है।''

कबीर संतोष को रोज के अपमान से तो नहीं बचा सकता था। वर्मा जी और उनके जैसे शिक्षक बच्चों के साथ जो कर रहे थे, वह देखकर कबीर का मन बहुत दुखी हो जाता था। मगर उसने संतोष को दो शर्ट खरीद कर दे दिए थे। कम से कम शर्ट के कारण जो मार पड़ती थी, वह उससे तो बच जाएगा।

उसे लगने लगा था कि सरकारी स्कूल में बच्चों की जितनी भी सहायता की जाए कम ही है। बाबूजी कैसे घर खर्च और सहायता को संभालते होंगे? यह तो बड़ा मुश्किल काम है।

चिराग से दोस्ती

रविवार की सुबह कबीर अपनी खिड़की में खड़ा था। आज पहली बार कबीर ने चिराग को देखा। एक बहुत ही आकर्षक व्यक्तित्व वाला नौजवान, जो अपने दोनों हाथों में सब्जी और फल के थैले लेकर चल रहा था। मां के कहने के बाद ''एक थैला मुझे दे दे बेटा!''

''अरे, नहीं मां आप आराम से चलो!'' कहता हुआ वह एक ऐसा बेटा लगा जिसे अपनी मां से बहुत प्यार है।

थोड़ी देर में मिस्टर रेड्डी कबीर के पास आए और बोले–''कबीर, आज चिराग नाश्ता बना रहा है। आ जाओ, साथ में खाते हैं।''

''अंकल, आप मुझे किसी न किसी बहाने से साथ में खाना खिला ही देते हैं। अभी आता हूं दस मिनिट में!'' मुस्कुराते हुए कबीर ने कहा।

''अब तुम खाना ही इतना अच्छा बनाते हो कि तुम्हें खाना खिलाना, फायदे का काम है।'' हंसते हुए उन्होंने कहा था।

कबीर जब भी रेड्डी अंकल के साथ खाना खाता था तो आंटी को खाना बनाने में वह पूरी मदद करता था। जब वह सब्जी बनाता तो अंकल हमेशा कहते थे कि 'कबीर तुम्हारे हाथ में बहुत स्वाद है। तुम तो शेफ बन सकते थे।'

''आप भी मुझे खाना खिलाने के बहाने अच्छे बना लेते हो! स्वाद तो मां के हाथ के खाने में ही होता है।'' कहते हुए उसे अपनी मां याद आ जाती थी।

''अरे, भाई चलो जल्दी आओ! भूख लगी है।'' की आवाज़ कबीर को वर्तमान में ले आई।

''बस दो मिनट में!'' कहता हुआ कबीर अपने कमरे में गया। रेड्डी अंकल के घर में जमीन पर बैठकर ही खाना खाया जाता था। वह पति–पत्नी नीचे बैठे थे।

चिराग खाने के बर्तन ला रहा था। कबीर को देखते ही उसने बर्तन नीचे रखे और अपने हाथ को बढ़ाते आगे बढ़ाते हुए कहा–''चिराग!''

''कबीर, बहुत अच्छा लगा आपको देखकर! कबीर ने हाथ मिलाते हुए कहा।

''मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है कि आज भी कुछ लोग हैं जो अपने गांव में आना पसंद करते हैं। बाहर की दौड़ ने आज के युवाओं को एक अजीब–सी प्यास से भर दिया है। जितना भी आगे बढ़ें, उन्हें कम ही लगता है।''

''बिल्कुल सही कहा आपने। आजकल संतोष के साथ जीवन जीना बेवक़ूफी समझी जाने लगी है।''

''यहां आने से पहले आप क्या करते थे?''

''जबलपुर में पायनियर कोचिंग इंस्टिट्यूट में मैथ्स पढ़ाता था।'' यह नाम सुनते ही चिराग ठहर सा गया। शायद रेड्डी अंकल भी कारण समझ गए थे।

उन्होंने कहा ''चिराग, अब तुम बैठो बेटा! हम खाना शुरू करते हैं! तुम दोनों बाकी की बातें बाद में करना।''

खाना खाते समय एक ख़ामोशी ही छाई रही। रात के समय चिराग कबीर के पास आया और बोला ''मैं वॉक पर जा रहा हूं। आप मेरे साथ चलेंगे क्या?''

''आप नहीं, तुम कहोगे तो जरूर चल सकता हूं।'' कबीर ने हंसते हुए कहा

''तुम चलोगे कबीर? चिराग ने भी हंसते हुए पूछा।

कबीर और चिराग रास्ते में बातें करते रहे। कबीर ने उससे उसके काम के बारे में जानना चाहा ''तुम्हारी इंडस्ट्री में क्या काम होता है?''

''फाइबर ग्लास का बहुत वाइड एरिया है। जो सामान कल प्लास्टिक से बनता था, यदि वह फाइबर ग्लास से बने तो मजबूती और लाइफ बहुत ज्यादा बढ़ जाती है। पहले तो मैंने इसके कूलर, गीजर बनाने शुरू किए थे। न के बराबर पूंजी से इस काम को शुरू किया था। पापा ने मेरा बहुत साथ दिया था। उनका पूरा पीएफ मेरे बिजनेस में

लग गया था। बहुत डर लगता था कि कल काम नहीं चलेगा तो क्या होगा? क्या मुझे भी विदेश चले जाना था? मैंने तो अपने माता-पिता को सुरक्षा देने की जगह उनका जीवन ही असुरक्षित कर दिया था। पर पापा के सपोर्ट से काम कैसे बढ़ा, आज याद करूं तो आश्चर्य होता है। कूलर के बाद टेबल-कुर्सी और फिर एक बार इंडस्ट्री में काम मिलना शुरू हुआ तो हालत यह हो गए कि काम को संभालना मुश्किल होने लगा। केमिकल टैंक की कोटिंग, सोलर पैनल और भी बहुत कुछ। अब तो ऐसा लगता है, काम तो अनंत है। मुझ पर निर्भर है कि मैं इसे कितना कर पाता हूं। गल्फ कंट्री, योरोप, रशिया हर जगह से काम मिलने लगा है। लगता है कि पैसे के पीछे नहीं भागना है। फिर ख्याल आता है कि इस फैक्ट्री के कारण बहुत लोगों को रोजगार मिला है। उनकी जरूरत, मुझे काम करने को प्रेरित करती है। बस, एक ही चिंता रहती है कि मां-पापा के पास बहुत कम रह पाता हूं!''

''मुझे तुम्हारी बात सुनकर बहुत गर्व महसूस हो रहा है। एक बेटा पूरी दुनिया में व्यापार करता है। अपने घर में खाना बनाकर अपने माता-पिता को खिलाता है। साथ कितने समय का रहा, यह महत्वपूर्ण नहीं है। बड़ी बात तो यह है कि साथ कितना जीवंत है? उसमें तुम सोने जितने खरे हो! मैंने आज सुबह तुम्हें अपनी खिड़की से मां के साथ सब्जी लेते आते हुए देखा था। मुझे बहुत अच्छा लगा था तुम्हें देखकर!''

''अरे यार, ऐसा तो कुछ भी नहीं है। तुम तो यूं ही... मेरी बढ़ाई कर रहे हो। हां, तुम्हारे आने से मां-पापा बहुत खुश हैं। पापा कहते हैं कि कबीर के आने से ऐसा लगता है कि हम चिराग के साथ रह रहे हैं। कबीर ने पहले ही दिन तुम्हारी तरह झूठे बर्तन धो कर हमारे मन में जगह बना ली थी।''

''अरे, उन्होंने मुझ जैसे फक्कड़ को बिना एडवांस और किराया लिए घर में रहने को जगह ही नहीं दी, मुझे हाथ खर्च के पैसे भी दिए थे। आज के जमाने में ऐसा कौन है? शहर में तो तुम जानते हो तीन महीने का एडवांस के बावजूद भी कौन, कितना साथ देता है?''

''हां, इस भागती हुई ज़िंदगी में मानवता पिछड़ती जा रही है!''

''क्या करें, यह गति कम हो सकती है। पर इंसान भागकर गिरने से नहीं घबराता है, जबकि वह धीरे चल कर ज्यादा आगे पहुंच सकता है।''

''कुछ लोग हैं, जो तुम्हारी तरह अपने परिवार और देश के लिए सोचते हैं।''

''तुम भी उनमें से ही एक हो। मैंने मां-पापा के सामने बात करना ठीक नहीं समझा पर तुम पायोनियर से कैसे जुड़े?''

''परिवार की एक बहुत बड़ी मजबूरी मुझे वहां ले गई थी। मुझे अपनी आईएएस की तैयारी बीच में छोड़ने पड़ी थी।''

''क्यों?''

''मेरी बहन को उसके देवर ने पेट्रोल डालकर जला दिया था।''

''अरे, फिर क्या हुआ? क्या वह ठीक हो गई?''

''नहीं, वह नहीं जी पाई। हमने अपना घर बेचकर उसका इलाज करवाया था। एक ही आस थी की वह बच जाएगी। मगर उसकी असमय मौत ने मुझे मेरी बहन ही नहीं मेरे मां-बाबूजी से भी दूर कर दिया। सात महीने में मैं अकेला हो गया। एकदम!''

''कोचिंग?''

''इलाज के खर्च के लिए पैसों की जरूरत ने ही मुझे उस जगह पहुंचा दिया था। पहले तो लगा कि यह उनकी मानवता है। पर उनकी बेटी रुबी से शादी के बाद समझ में आया कि यह तो...''

''उनका इन्वेस्टमेंट प्लान था।''

''तुम उनको कैसे जानते हो?''

''रुबी से मेरी शादी हुई थी।''

''जिस दिन मैंने उसे गाडरवारा आने वाली बात बताई तब उसके पिता ने, पहली शादी वाली बात बताई थी, तो वह तुम हो?''

''हां यार, लगता था कि प्यार हुआ है। पर धीरे-धीरे समझ में आया कि एक खिलौना खरीदा गया है। जिसके घर दामाद बनने की या विदेश में बस जाने की संभावना थी। उसकी जगह मैंने गाडरवारा आना पसंद किया था। एक गरीब, जब अपना व्यवसाय शुरू करे तो उसे कितनी तकलीफ सहनी पड़ती है? यह अमीर घर की

लड़की नहीं समझ सकती है। उसके पिताजी ने बहुत कोशिश की थी मुझे बाहर शिफ्ट करने की या फिर मेरे बिजनेस में पैसा लगाने की। उनकी एक ही शर्त थी, मुझे जबलपुर में रहना होगा। जबकि ऐसी कोई बात पहले नहीं हुई थी। रुबी भी इस घर को देख चुकी थी। वह जानती थी कि मैं गरीब हूं। आज तो यह घर बहुत अच्छा हो गया है, पर उस समय यह घर कच्चा-पक्का ही था। रुबी को रोके रखने के लिए मां-पापा जो कर सकते थे, उन्होंने सब किया। पर उस पर प्रेम असर ही नहीं कर सका था। वह सिर्फ पैसे की भाषा समझती है।''

''तुम्हारी शादी टूटी कैसे?''

''उसने मुझे एक खुली धमकी दी थी कि या तो यह घर छोड़ दो, नहीं तो वह मुझे छोड़ देगी! मेरे जवाब ने उसके गरूर को तोड़ दिया। हमारा रिश्ता टूट गया पर वह झुकने को तैयार नहीं थी।''

''मेरी शादी तो एक एहसान ही थी। उन दोनों ने मुझसे अपनी पहली शादी की बात छुपाई थी। जब मेरा कॉल लेटर आया और यहां आने की बात हुई तब रुबी के पिताजी ने दूसरी शादी के बारे में बताया था। इस झूठ का उन दोनों को कोई अफसोस भी नहीं था। उनके हिसाब से उस मासूम बच्ची के साथ धोखा हुआ था? उसे यहां बहुत सताया गया था।'' कबीर ने कहा।

''सताया गया था या जुल्म सहा गया था!''

''तुम्हारे मां-पापा से मिलकर समझ आ गया कि वह कैसे हैं?''

''मां ने रुबी के बालों ही नहीं पैरों में भी तेल लगाया था। बिना काम किए थकने वाली बहू को कोई इससे ज्यादा क्या संभालता?''

''फिर तलाक कैसे हुआ?''

''रुबी ने पेपर भेजे थे। हम दोनों की सहमति थी। तलाक तो होना ही था। कुछ शादियां उम्र के नशे में हो जाती है। उनमें प्रेम जैसा कुछ होता ही नहीं है। वही गलती हम दोनों ने की थी।''

''तुमने उसे शादी के लिए कैसे पसंद किया था?''

''जैसे तुम्हारी शादी उम्र का आकर्षण थी वैसे मेरी शादी तो सिर्फ एक बहुत बड़े एहसान के सामने गरीब की ख़ामोशी थी। मेरी बहन के इलाज के लिए पैसों की जरूरत थी। वह जरूरत मुझसे जो भी करवाती, मैं कर सकता था। बस उसी दर्द ने मुझे इस बेमेल शादी को सहने की ताकत दी थी। मैं किसी से प्यार करता था। हमारी ज़िंदगी में यह भूचाल नहीं आता तो मेरी शादी वसुधा से ही होती। अब बहुत देर हो चुकी है। वह अपना घर छोड़कर कहीं चली गई है। जिसकी किसी को ख़बर भी नहीं है।''

''मैं क्या कहूं? कैसे सांत्वना दूं? फिर भी मेरा परिवार तुम्हारे साथ है। हम चारों एक परिवार के ही हिस्से हैं। आज के बाद खुद को अकेला मत समझना। जब भी मेरी जरूरत हो, मुझे जरूर बताना। तुम नहीं जानते, हमारी गरीबी में शास्त्री जी ने कई बार मेरी फीस जमा की थी। उनका यह एहसान मेरे ऊपर हमेशा रहेगा। मेरी इंजीनियरिंग की पढ़ाई का खर्च भी एक संस्था ने उठाया था। जो शास्त्री जी के कहने पर ही मुझे मिली थी। तुम भाग्यशाली हो, जो तुम्हारे पिता इतने अच्छे इंसान थे। वे मुझ जैसे कई लोगों के काम आए थे।''

कबीर कुछ भी नहीं कह पाया। उसका मन भीग गया था। फिर भी उसने चिराग के कंधे को छूकर वह कहना चाहा जो कह न पाया। चिराग के साथ घर लौटते समय कबीर उदास, मगर गर्व से भरा था। उसके पास एक ही प्रार्थना बची थी कि उसे एक बार वसुधा मिल जाए!

उस दिन उसने उसे शकुंतला कहा था। वह तो सचमुच उसी की तरह उसके जीवन से दूर हो गई। जिस गलती की पूरी जिम्मेदारी उसकी है। घर और स्कूल के बीच कबीर का जीवन चल रहा था। हर वह हर काम करता था, पर बेमन से।

हां, ताऊ जब उसके घर आते तो उसे एक सुकून मिलता था। शायद किसी दिन कोई ख़बर मिल जाए कि वसुधा घर लौट आई है। इंसान के चाहने से क्या होता है? चाहा तो यह भी था कि तारा जी जाए! पर किसने सुना?

जब तक चिराग गाडरवारा में रहा, कबीर के साथ रोज रात को वॉक पर जाता था। आज कबीर को उसके जैसी सोच वाला एक दोस्त मिल गया था।

आज एक बार फिर चिराग ने कबीर को रुबी के बारे में बताया ''तुमको तो शायद पता नहीं होगा कि हमारी शादी से पहले भी रुबी घर से भाग गई थी। उस समय वह जिसके साथ शादी करना चाहती थी, उससे शादी कर नहीं पाई थी।''

''अरे, तुमको कैसे पता चला?''

''उनके घर में जो खाना बनाती थी उस अम्मा ने बताया था। वह इनके घर में बहुत सालों से रह रही थी। जब रुबी की मम्मी जिंदा थी, तबसे।''

''हमारी शादी इतनी उलझी हुई थी कि उसकी मम्मी के बारे में तो कभी ध्यान ही नहीं आया। मैंने उससे कुछ पूछा ही नहीं। हम दोनों के लिविंग स्टैंडर्ड के डिफरेंस ही हमारे झगड़े का कारण थे। दिन-रात हमारी बहस ही होती रहती थी। उसने मुझसे क्यों शादी की मुझे तो यही समझ नहीं आया। जबकि वह जानती थी कि मैं बहुत गरीब घर का लड़का हूं।''

''अब तुम इतने हैंडसम जो हो!'' चिराग ने हंसते हुए कहा।

''छोड़ यार! उसकी मम्मी के बारे में बताओ।''

''रुबी के पापा, पहले घर-घर जाकर ट्यूशन देते थे। सुबह स्कूल की नौकरी और शाम से रात के बारह बजे तक ट्यूशन। उस समय यह लोग जिस मकान में रहते थे, वह एक बहुत सुनसान इलाके में था। आस-पास कोई घर भी नहीं था। रुबी की मम्मी उस घर में बहुत डरती थी। वह कहती थी 'मुझे लगता है कि यहां किसी आत्मा का साया है।' एक बार उसकी मम्मी को टाइफाइड हुआ था। उनका इलाज ठीक से नहीं हो सका। उनको सन्निपात हो गया था। उस बीमारी की हालत में भी वह रुबी के पिताजी से कई बार कहती थी कि 'मुझे इस घर में लोग दिखते हैं। यह घर बदल लो और नहीं तो तुम रात के समय जल्दी घर आया करो।' उसके पापा ने अपने काम और कमाई के चक्कर में उनकी दोनों बातें नहीं सुनी। डर के साए में जीते-जीते वह पागल हो गई। रुबी के पापा ने अपनी पत्नी पर ध्यान देने की जगह, एक बारह साल की लड़की को अपनी मां से दूर कर दिया। उन्होंने रुबी को बोर्डिंग में भेज दिया। यह जुदाई मां-बेटी के लिए बहुत खतरनाक साबित हुई। रुबी की मम्मी ने उसी पागलपन में एक दिन छत से कूदकर जान दे दी। जब रुबी बोर्डिंग से घर आई तब उसे पता चला कि उसकी मां मर चुकी है। उसका उसके मन पर बहुत बुरा असर पड़ा था। वह रातों

को डरकर जाग जाती थी और रोती थी। उस समय उसे अम्मा ने ही सम्हाला था। उसके पापा ने हमेशा उसे पैसे के सहारे सम्हालने की कोशिश की पर कभी भी सफल न हो सके।''

''कितनी अजीब बात है, तुम और मैं कितने सीमित साधनों में पले-बड़े हुए उसके बावजूद हम अपने दर्द को सहन कर सकते हैं। हमारे अंदर कोई विकार उत्पन्न नहीं हुए। रुबी जैसे बच्चों को कितना भी पैसा लगा कर सम्हाला जाए, वह सम्हल नहीं पाते हैं। बच्चे को प्रेम से भर देना ही असली दौलत है। जिससे कई बच्चे महरूम रह जाते हैं। उसके पिता कभी समझ ही नहीं पाएंगे कि रुबी की कितनी जड़े उन्होंने काट दी हैं। जिसके कारण उसका जीवन भी एक अशांति से भर गया है। यह बात रुबी भी समझ नहीं पाती है।''

चिराग ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा ''मेरे मां-पापा को रुबी के बारे में सब पता था। मैंने सोचा था कि हमारे साथ रहने से उसके अंदर प्रेम की कमी भर जाएगी। पर उसे गरीब के घर में प्यार मंजूर नहीं था।''

''एक उलझे जीवन में बच्चा शायद समझ नहीं पाता है कि वह क्या चाहता है? उसे जो मिल रहा है, वह उसे संतुष्ट नहीं कर पाता है। उसकी आज की परवरिश और कल मां से दूरी यह ऐसी चीजें हैं, जो बहुत घुलमिल चुकी हैं। जिसने कहीं ना कहीं उसको बहुत चिड़चिड़ा और असंतुष्ट कर दिया है। साथ ही वह जिससे शादी करना चाहती थी, उसकी वह शादी तोड़ कर भी उसके पिता ने बहुत बड़ी गलती की। वर्गिस उसका बचपन का दोस्त था। वह केरल से था। सिर्फ उसकी चमड़ी का रंग इसके पिता को पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने अपने दामाद को रिजेक्ट कर दिया। एक बार भी यह नहीं सोचा कि इसका बहुत बुरा प्रभाव उन दोनों पर होगा।''

''हम किस्मत वाले हैं कि हमें अपने माता-पिता से वह मिल गया, जिसकी एक इंसान के निर्माण में सबसे ज्यादा जरूरत होती है।''

''एक बच्चा यदि असामान्य हाल में बड़ा होगा तो यकीनन वह अपने आप को संभाल सके, यह जरूरी नहीं। दुख तो सबके जीवन में आते हैं। अब यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह उनका सामना कैसे करता है? रुबी जिस लड़के से शादी करना चाहती थी, उस लड़के को बाद में उसके माता-पिता ने पढ़ने के लिए

ऑस्ट्रेलिया भेज दिया। पैसे वाले माता-पिता के लिए बच्चों को शिक्षा के लिए बाहर भेजने का फैशन बहुत बढ़ गया है। उस लड़के ने वहां जाकर पढ़ाई को छोड़कर वह सब किया जिससे उसका भविष्य पूरी तरह बर्बाद हो गया। नाइटक्लब और पब उसकी ज़िंदगी का हिस्सा बन गए थे। एक रात वह पब से बाहर निकल रहा था कि उसकी गाड़ी सड़क पर चलती लड़की से टकराई जो उसकी कार के साथ घिसटती गई। लड़की चिल्लाती रही पर गाड़ी नहीं रुकी। उसे एक साल की जेल की सजा हुई थी। उसके बाद जब वह इंडिया वापस आया तो कुछ समय बाद उसकी शादी हो गई। एक उलझे हुए जीवन को सुलझाने की जगह शादी कर देने से समस्याएं बढ़ जाती हैं यह वे लोग समझ नहीं पाते हैं जो अपने बच्चों की ज़िंदगी के हर गलत निर्णय को एक दूसरी गलती से सुधारने की कोशिश करते हैं। मेरा काम केरल में उनकी फैक्ट्री में भी चला था, तब ही मुझे यह सब पता चला था।'' चिराग और कबीर की यह नई-नई दोस्ती भी एक अपनेपन से भरी थी। जिसमें वह आराम से एक-दूसरे से बात करते थे।

कबीर ने बात को आगे बढ़ाते हुए कबीर ने ''विदेश में रहना है तो वहां के नियम की जानकारी होनी चाहिए। यदि वर्गिस खुद ही उस लड़की को अस्पताल ले जाता तो उसकी सजा कम हो सकती थी। अपना गुनाह कुबूल करना, वहां एक रियायत का काम कर देता है। साथ ही पढ़ाई ना करने वाले बच्चों को उनके माता-पिता वापस क्यों नहीं बुला लेते? यह समझ नहीं आता है। माता-पिता की कुंठित सोच से बच्चों का जीवन कितना प्रभावित होता है। यह देखकर दुख होता है।'' कबीर को यह सब जानकर दुख हुआ।

''हां यार, जो सरलता से मिल सकता है उसके लिए इतने घुमाव की क्या जरूरत है? पर यह बात वह नहीं समझ सकते हैं जो दिखावे का जीवन ज्यादा पसंद करते हैं या जिनके लिए पैसा बहुत महत्व रखता है। वहां उन्हें अपनों के ही दुख-दर्द दिखने बंद हो जाते हैं और वह हर दुख की भरपाई सिर्फ पैसे से करना पसंद करते हैं।'' कबीर ने घर का मैन गेट खोलते हुए कहा।

''आज मैंने वह पा लिया जो मैं चाहता था तो लगता है कि समाज के कुछ काम आऊं! कबीर, तुम्हारे स्कूल में जो बच्चे प्रतिभाशाली हैं, उनको कोई जरूरत हो तो मुझे बताना। मैं उनकी सहायता करना पसंद करूंगा। मां-पापा के नाम से एक संस्था

बनाना चाहता हूं। जिसमें बच्चों को ट्वेल्थ के बाद आगे की पढ़ाई में सहायता मिल सके। जैसी मुझे मिली थी।'' चिराग ने अपने आगे की योजना के बारे में कबीर को बताया।

''जरूर, यह तो एक बहुत बड़ा योगदान होगा। मैं देखता हूं हमारे स्कूल में किस-किस बच्चे को जरूरत है।'' यह सुनकर कबीर को बहुत अच्छा लगा।

''यह काम तुम ही आसानी से कर पाओगे क्योंकि तुम स्कूल से जुड़े हो।'' कबीर ने उस दिन चिराग को बताया कि किस तरह जातिगत भेदभाव बच्चों को सहना पड़ता है। किसी पर थूक दिया जाता है तो किसी को बिना कारण जाने मारना, शिक्षक अपना हक समझते हैं।

इस समस्या को उस दिन चिराग ने समझा। उसने कहा ''तुम मुझे बताओ किसको सहायता की जरूरत है? मैं हर महीने तुमको कुछ अमाउंट देता हूं। अच्छा होगा जरूरतमंदों तक कुछ पहुंच जाएगा।''

''मैं जितना कर सकता हूं कर देता हूं।''

''वह तो मैं जानता हूं, यह तो तुम्हारा संस्कार ही है। पर मुझे भी इसका हिस्सेदार बनना अच्छा लगेगा।''

''ठीक है। जैसी तुम्हारी मर्जी!'' दोनों गुड-नाइट कहकर अपने-अपने कमरे की ओर बढ़ गए।

एक सुबह वॉक के बाद कबीर और चिराग घर के बाहर बैठे थे। चिराग के मां-पापा एक शादी में शामिल होने के लिए इंदौर गए थे। कबीर और चिराग को साथ में ही खाना खाना था।

वह दोनों बाहर बैठे सब्जी काट रहे थे। कबीर ने चिराग को बताया कि ''रुबी ने मुझसे एड्रेस लिया है। वह कभी भी मिलने आ सकती है।''

''मेरे या मां-पापा के सामने आई तो उसकी हालत खराब हो जाएगी!''

''देखो, आती है कि नहीं! गांव में आना उसके लिए टेंशन का काम ही होगा। एड्रेस से शायद वह समझ जाए कि यह तुम्हारा घर है।''

''उसे हमारा पता याद होगा? पता नहीं। वैसे भी उसके मन में क्या है, हम जान नहीं सकते हैं? वह कब क्या कर जाए?'' वह दोनों बात ही कर रहे थे कि एक कार बाहर आकर रुकी। उसमें से रुबी बाहर निकली।

रुबी जैसे ही अंदर आई। दोनों को एक साथ देख कर ठिठक गई।

''अरे, रुक क्यों गई? आओ ना रुबी!'' कबीर ने उठते हुए उसे अंदर आने को कहा।

''बैठो!'' एकदम से क्या बात करें यही समझ नहीं आ रहा था। कबीर ने उसे बैठने को कहा। वह एक कुर्सी पर बैठ गई।

चिराग ने उठते हुए कहा ''आप दोनों बातें करो! मैं चाय बना कर लाता हूं।''

कबीर ने राहत की सांस ली।

''मुझे चाय नहीं पीनी है। मैं बस तुमसे इतना कहने आई हूं कि तुम्हारी वसुधा तुम्हें ढूंढ रही है और मैं तुमको किसी भी कीमत पर तलाक नहीं दूंगी!''

''क्या कह रही हो रुबी? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? उसके घर के लोग भी नहीं जानते हैं कि वह कहां है? कहां से आया था वह फोन? किस दिन? तुमने उससे बात की थी?'' एक साथ कई सवाल उठ खड़े हुए।

''इतना बेताब होने की जरूरत नहीं है। मुझे कुछ नहीं पता। एक दिन रिसेप्शनिस्ट नहीं आई थी तो मैंने फोन अटेंड कर लिया था।''

''कब फोन आया था? रुबी प्लीज! कुछ तो बताओ!'' कबीर तड़प उठा। उसके दर्द का रूबी पर कोई असर नहीं हुआ।

''देखो, मुझे लगा कि तुम्हें तुम्हारी गंधर्व विवाह वाली पत्नी मिल चुकी है इसीलिए मैं तुमसे यह कहने आई कि चाहे जो हो, मैं तुम्हें छोड़ने वाली नहीं हूं। तुम अभी भी मेरे पति हो।'' चाय बनाने के लिए अंदर जाते चिराग के पैर वहीं रुक गए।

वह कबीर के दर्द को देख बेचैन हो गया। कबीर के आंसू गिर गए और वह कुछ बोल ही नहीं पाया। चिराग उसके पास गया। उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे सहलाया।

रुबी को देखते हुए उसने कहा ''तुम दोनों एक-दूसरे के साथ खुश नहीं थे। अब भी अलग रहते हो। उसके बाद भी तुमने कबीर को एक ऐसी ख़बर दी, जो उसे रुला रही है। फिर भी तुम्हारा दिल अभी भी पिघल नहीं रहा है। तुम अपने आप से दुखी हो। दूसरों को दुख देकर नहीं, खुशी देकर ही तुम खुश रह सकोगी। तुम्हारे दुख का कारण वर्गिस और तुम्हारी मां है। इस बात को समझ लोगी, तो खुद को हील कर सकती हो, नहीं तो तुम्हारी बीमारी का नतीजा एक...''

''तुम चुप हो जाओ! इससे ज्यादा एक शब्द भी नहीं...'' कबीर के सामने वर्गिस की बात शायद रुबी को बहुत बुरी लगी। मां को याद करके तो उसका दिल कैसा टूटता है, वह किसी को समझा ही नहीं सकती।

चिराग ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा ''कबीर के नसीब में वसुधा से मिलना लिखा है तो वह होकर रहेगा। तुम एक नेक काम कर सकती थी पर तुम...'' चिराग की बात पूरी भी नहीं हुई कि रुबी कमरे से निकल गई।

कबीर के लिए अब अपने आप को संभालना बहुत मुश्किल था। चिराग को समझ नहीं आया कि वह कबीर को क्या सांत्वना दे? रुबी आग लगाने आई थी और अपना काम करके चली गई । कबीर को कोई भी दिलासा देना बेकार ही था।

फिर भी चिराग कबीर के पास बैठ गया। उसने जैसे ही कबीर के कंधे पर हाथ रखा वह सिसक उठा, ''यह जीवन कितना कठिन हो गया है? कुछ समझ नहीं आता है!''

''सिर्फ ईश्वर पर विश्वास रखो! अपना कर्म करो! यही एक सबसे बड़ी दिलासा है कबीर। यादें और कल्पना के बीच खुद को दुख देने से अच्छा है कि हम एक उम्मीद रखें। निराशा को कोई जगह मत दो! अभी जो हुआ हम वह कब सोच सकते थे? तो जो होने वाला है उसके लिए भी चिंता मत करो!'' अब इस मानसिक हालत में खाना बनाना और खाना मुश्किल था। चिराग कबीर के लिए कॉफी बना कर लाया।

''नहीं यार!'' कहते ही फिर से कबीर के आंसू गिर गए।

''कल कोई नहीं जानता। हम नाउम्मीद ना हों, इतना तो कर ही सकते हैं।''

''कल ही मैं किसी को फोन लगाता हूं। शायद कोई सुराग मिल जाए।''

''रुबी हमसे दस कदम आगे चल रही होगी। मेरा पुराना फोन जब रुबी ने नए फोन से रिप्लेस किया तब याद ही नहीं रहा कि वसु का नंबर सेव कर लूं। वह नंबर होता तो शायद आज मैं उससे बात कर सकता था।''

''उसने किस नंबर से फोन किया हम नहीं जानते हैं। हो सकता है कोई नया नंबर या बूथ से फोन किया है! ईश्वर से आगे कोई नहीं चल सकता है दोस्त! घबराओ मत, हम कोशिश तो कर ही सकते हैं। कल देखते हैं!''

अगले दिन जब चिराग ने अपने एक दोस्त से पायोनियर कोचिंग में फोन लगावाया तो रिसेप्शन पर बैठा व्यक्ति आज पहली बार ही वहां आया था। जो पिछली कोई भी जानकारी देने में असमर्थ था।

उस रात को चिराग ने कबीर से कहा ''तुम सही थे। वहां से कोई भी जानकारी नहीं मिल सकी।'' उस दिन की घटना के कुछ दिनों बाद रुबी ने कबीर को तलाक के कागज भेज दिए थे।

रूबी का बदलाव

रुबी जब कबीर से मिलकर जब लौट रही थी तो उसका मन बहुत उदास था। चिराग की बात ने उसे उसके पुराने दिन याद दिला दिए थे। वर्गिस, उसका बचपन का साथी जो आज उससे दूर हो चुका है।

मां, जिससे जुड़ी कुछ यादें उसे आज भी सालती हैं। वह रात को कमरे में डरती हुई, कैसे उसके पास बैठी रहती थी। रुबी ने उसे कई रातों तक जागते हुए देखा था। चिराग ने सच ही कहा था कि 'उसके मन में बहुत गहरे तक यह दोनों बसे हैं।' उन दोनों के बिना वह बहुत अकेलापन महसूस करती है।

अगली सुबह रुबी ने अपने पापा को कह दिया कि 'वह कबीर को तलाक देना चाहती है।' वह पापा के साथ गार्डन में बैठी सुबह की चाय पी रही थी। आज भी माली उनको फूल देने आए तो उनके हाथ से फूल लेते हुए रूबी ने उन्हें ''थैंक यू!'' कहा।

माली ने एक मुस्कान के साथ ''बिटिया!'' कहा और वह आगे बढ़ गए। रुबी की यह मुस्कुराहट उसके पापा को थोड़ी नई लगी। अपनी बेटी के दूसरे तलाक ने उनको दुखी कर दिया। पर अब इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा है।

यह बात वह जानते थे। कबीर और रुबी की शादी बहुत बेमेल शादी थी।

''अरे रुबी, ज़रा देखना इस बार कितने स्टूडेंट्स की फीस नहीं आई है। आज दस तारीख हो गई है। उनको वार्निंग दे दो, कल तक के लिए!'' एक लिस्ट देते हुए उन्होंने कहा।

''हां, पापा मैं बात कर लेती हूं। देख लेते हैं किसकी क्या मजबूरी है। उन्हें थोड़ा समय और दे देंगे।'' कहते हुए रुबी ने लिस्ट ले ली।

जो लड़की आज तक इस लिस्ट को देखकर कहती थी कि 'नाम काट दो इन

सबके। कोई बात करने की जरूरत नहीं है।' वही आज इतनी नर्म? वह कुछ बोले नहीं। अपनी बेटी में हुए इस बदलाव को देखकर उन्हें कबीर की याद आ गई।

उनके मन में सवाल उठा, यदि ऐसा ही बनना है तो फिर कबीर के साथ रहने में क्या बुराई है। इस अकेलेपन से तो अच्छा होता... यही सोचकर उन्होंने रुबी से पूछा, ''कबीर से तलाक लेने से पहले मैं एक बार जानना चाहता हूं कि तुम्हारी कल कबीर से क्या बात हुई? कैसा है वह? क्या सुलह का कोई रास्ता नहीं बचा है?''

''नहीं पापा, कोई रास्ता नहीं बचा है। उसे मुक्त करना ही होगा। वह किसी और को चाहता है। वह लड़की भी कबीर को ढूंढ रही है। वो दोनों कब मिल पाएंगे, पता नहीं। अब हमारे साथ का कोई मतलब नहीं है।''

''उसे किसी से प्यार है उसने बताया नहीं?'' मिस्टर शर्मा ने थोड़ा असहज होते हुए कहा।

''हमने तो शादी ही छुपा ली थी। उसने तो सिर्फ प्यार छुपाया। उसने छुपाया भी नहीं, वह तो अपने दुख और हमारे एहसान में सब भूल गया था। हमारे झूठ ने उसे याद दिलाया। एक झूठा इंसान, सच की उम्मीद कैसे कर सकता है?'' कहकर बुझे मन से रुबी उठी और फूल को अपने साथ लेकर आगे बढ़ गई।

ताऊ का दर्द

ताऊ अब शाम के समय कई बार कबीर के पास आ जाते थे। कभी घर के किस्से सुनाते तो कभी शास्त्री जी को याद करके रोते थे। ताई के भाई ने उन पर जुल्म की इंतहा कर रखी थी। घर में शराब पीकर हल्ला करना, गालियां देना उसकी आदत हो गई थी। ताऊ अभी तक यह नहीं समझ पाए थे कि ताई अपने भाई से क्या हासिल कर रही है?

उसके होने से सिर्फ एक बेटे के होने वाली शांति मिल रही थी। बाकी तो ऐसे बेटे के होने से बेऔलाद होना अच्छा है। ताऊ घर के माहौल से थकने लगे थे। एक बार तो उनके चेहरे पर मार के निशान देखकर कबीर घबरा गया।

''ताऊ, यह क्या हो गया? हम इस बात की पुलिस को शिकायत कर सकते हैं!''

''अरे, पुलिस भी क्या करेगी, कब तक बचाएगी? जब तेरी ताई ने ही उसे इतनी शह दे रखी है, तो कुछ नहीं हो सकता है!''

''ऐसे सोचने से नहीं चलेगा ताऊ। कुछ तो करना ही चाहिए!''

''अभी तो तू दो रोटी दे दे। सुबह से कुछ नहीं खाया है। बड़ी भूख लगी है बेटा।''

''ताऊ बस दो मिनट।'' इतना ही कह पाया था कबीर। उसने जल्दी से रोटी और सब्जी थाली में रखकर ताऊ को दी। उन्हें खाना खाता देख कबीर का मन बहुत दुखी हो गया था।

कबीर ने उनसे कहा, ''आज मेरे ही पास सो जाओ! घर मत जाओ! आपको आराम की जरूरत है।'' कहते हुए कबीर ने उनको पलंग पर बैठने को कहा तो वह बैठ गए।

थोड़ी देर बाद उन्हें नींद आ गई थी। उन्हें चादर ओढ़ाते हुए कबीर को अपने बाबूजी की याद आ गई। कोई सेवा नहीं कर पाया वह उनकी। वही हम सबकी जिम्मेदारी उठाते हुए इस दुनिया से चले गए।

रात में कबीर ने सूरज सिंह से पूछा था, ''घरेलू हिंसा के मामले में पुलिस का कितना सहयोग मिल सकता है?'' कबीर ने सोचा कोई भी कदम आगे बढ़ाने से पहले उससे जुड़ी जानकारी होनी चाहिए।

एक दिन ताऊ कबीर से मिलने उसके स्कूल आ गए। वह अब अपने आप को संभाल नहीं पा रहे थे। उस दिन कबीर भी बहुत परेशान था। जिस बच्चे को डस्टर से मारा गया था, उसकी एक आंख हमेशा के लिए खराब हो गई थी।

दूसरी आंख में घाव था। पर उसमें उसके विजन में कोई चिंता की बात नहीं थी। आज कबीर ने ताऊ से कहा ''बाबूजी और मां ने तो अपनी देह दान में दे दी थी। अब इस बच्चे के लिए आंख कब और कैसे मिल पाएगी?''

''यह देह-दान क्या होता है?''

''लोग मरने के बाद अपने शरीर को अस्पताल को दान में दे देते हैं। जिससे कई लोगों को फायदा मिल जाता है। आंख, चमड़ी, गुर्दा, दिल सब कुछ। तारा की चमड़ी आग में जल गई थी। उसकी जगह नई चमड़ी लगा देने पर जला हुआ हिस्सा ठीक लगने लगता है। बाबूजी ने तारा की हालत देखकर ही यह निर्णय लिया था। एक व्यक्ति के अंगदान से कई लोगों को जीवनदान मिल जाता है।'' कबीर ने उन्हें समझाते हुए कहा।

''शास्त्री जी ने जीते जी तो पुण्य कमाया ही था। मरने के बाद भी उनके मन में लोगों की भलाई की बात थी। हम तो जीते जी भी किसी को तो क्या, अपने भाई की इकलौती बेटी को भी नहीं संभाल पाए। किस काम का रहा यह जीवन? बस तेरी ताई के सामने कभी बोल ही नहीं पाए। उसने जैसा चाहा वैसा सबको सताया। हम आंखें मूंदे उसके पीछे खड़े रहे। अब तो लगता है बहुत देर हो गई। हमारी गलती हमें ही खा जाएगी।''

''ऐसे मत कहो ताऊ! आप पुलिस के पास जाने से इंकार क्यों करते हो? घर में इतना जुल्म सहना ठीक नहीं है। इसकी शिकायत होनी चाहिए!''

''अब इस उम्र में दुनिया को क्या तमाशा दिखाना?''

''यह तमाशा नहीं है ताऊ। बहुत से लोग आपकी तरह ही अपमान सहते रहते हैं। उनके लिए तो यह हिम्मत की बात होगी।''

''तुमसे अपनी बात कह कर ही हमें चैन मिल जाता है। अब तो यह भुगत कर ही एक दिन प्राण निकल जाएंगे।''

''ताऊ ऐसा मत कहो!'' उस दिन घर आकर ताऊ ने कबीर के साथ खाना बनवाया। उन्होंने सब्जी-रोटी सब बनाई। कबीर ने तो सिर्फ उनको आटा गूंथ कर दिया था।

पहले कबीर को खिला कर उन्होंने खाना खाया था। उस दिन वह पैदल रात में अपने घर चले गए। कबीर ने उनको रोकते हुए कहा था ''अब यहीं सो जाओ! क्या करोगे, रात में घर जाकर?''

''अरे, नहीं आज मन कह रहा है कि घर जाएं और संग्राम को घर से निकाल दें! तेरी ताई को भी रहना है तो रहे नहीं तो वह भी निकल जाए। शास्त्री जी को याद करके आज हमें भी लग रहा है कि हम जुल्म के खिलाफ आवाज़ उठाएं।''

''अगर कुछ करना है तो आप अकेले कुछ मत करना। हम पुलिस की मदद ले लेंगे।'' कबीर ने उनको बाहर तक छोड़ा और उनके पैर छुए।

''ठीक है बेटा। हम तुमको बहुत आशीष देते हैं!'' कहकर वह चले गए। कबीर उनको जाते हुए देखकर बहुत उदास था।

वसुधा को ममता

वसुधा को अस्पताल से तो अगले ही दिन छुट्टी मिल गई थी। नेगी आंटी ने उसे अपने पास रोक लिया था।

''अभी तुम कमजोर हो गई हो! कुछ दिन मेरे पास रहो!''

''आंटी वहां बहुत काम है, उसे कौन देखेगा?''

''सब हो जाएगा। यहां से किसी को भेज देते हैं। तुम सब समझा देना। बाकी मैं देख लूंगी।''

बच्चा जिंदा रहे या ना रहे मां को वह सब खाना ही चाहिए जो बच्चा होने पर खिलाया जाता है। नेगी आंटी ने वसुधा को बिल्कुल बेटी की तरह अपने पास रखा। उसे वही देखभाल दी। वह समझ रही थीं, कि इस वक्त वसुधा किस हाल में है?

उसने विपरीत परिस्थितियों में खुद को संभाला पर होनी को कौन टाल सकता है? इस समय भी यदि इस बच्ची को काम की चिंता है तो इससे ज्यादा मजबूत मन किसका हो सकता है?

पंद्रह दिन वसुधा नेगी आंटी के साथ रही। कल उसे लेने डॉक्टर देसाई आ रहे हैं। आज की रात वसुधा ने नेगी आंटी के पास जाकर उनसे कहा ''मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं!''

''क्या बात है?''

''आपने मेरे लिए जो किया, जितना मेरा साथ दिया; वह मेरी अपनी मां भी दे पाती या नहीं, मैं नहीं जानती हूँ। एक लड़की उस बच्चे को जन्म दे सके, जिसके पिता का नाम भी पता ना हो, यह तो खून के रिश्ते में भी आसान नहीं होता है। आपने एक

अनजान लड़की पर इतना विश्वास किया और उसे प्रेम दिया इस प्रेम के बदले आपके लिए मैं कभी कुछ कर सकी तो यह मेरा सौभाग्य होगा!''

''क्या कह रही हो तुम? हम सोचते हैं कि हमारी ज़िंदगी रिश्तों से शुरू होती है और वहीं खत्म भी हो जाती है। मगर सच तो यह है कि खून के रिश्ते के आगे भी दुनिया है। जिसमें इंसान एक-दूसरे का साथ देते हैं। रामायण में राम के साथ सीता और लक्ष्मण थे। सीता के जाने के बाद तो सिर्फ लक्ष्मण ही रहे। राम का अनगिनत लोगों से रिश्ता, प्रेम और आस्था की कहानी कहता है। बस वैसे ही हम सब की ज़िंदगी है। इसे एहसान से मत जोड़ो! यह तो मानवता के वो द्वीप हैं जो व्यथा के सागर में जीते और हर उस इंसान को मिल जाते हैं, जिनके इरादे मजबूत और नेक होते हैं। तुम मेरे लिए मेरी बेटी जैसी ही हो! मां अपने बच्चे पर क्या एहसान करेगी? वह तो जितना भी देती है, उसे अपना किया कम ही लगता है।''

''मुझे आपके गले लगना है!'' बाहें फैलाकर वसुधा ने कहा।

नेगी आंटी वसुधा की इस बात से चौंक गईं। वह बहुत प्रेम के साथ खड़ी हो गईं। अपनी बेटी को गले लगाने के लिए। उनके कंधे पर अपना सर रखकर वसुधा सिसक उठी। आंटी ने उसके सर पर अपना हाथ रख कर उसे सहलाया। उसे सीने से लगाकर खड़ी रही। जब तक वसुधा चाहती थी, तब तक।

आज मां-बेटी एक दूसरे की धड़कन को सुन रही थी। बिलकुल वैसे ही जैसे एक मां अपने बच्चे को अपने पेट में महसूस करती है।

अगली सुबह डॉक्टर देसाई के साथ वसुधा जाने लगी तो नेगी आंटी के आंसू बह निकले।

''अरे यह क्या, बहन जी आप रो रही हैं? आप भी हमारे साथ चलो! एक-दो दिन बाद आ जाना।''

''हां, चलो ना मां!''

जब वसुधा ने कहा तो नेगी आंटी ने कहा ''ठीक है। अब जब बेटी कह रही है फिर तो चलना ही पड़ेगा। आप रुको! मैं कुछ कपड़े रख कर आती हूं।'' डॉक्टर देसाई मां-बेटी के प्रेम से खुश हुए।

आज गाड़ी में बैठ कर वसुधा बहुत सुकून महसूस कर रही थी।

जीप गाडरवारा से कूचवाड़ा की तरफ जा रही थी। एक जगह इतनी भीड़ दिखी कि गाड़ी को रोकना पड़ा।

''यहां इतनी भीड़ क्यों जमा हो गई है?'' डॉक्टर देसाई ने पास खड़े एक व्यक्ति से पूछा।

''कोई साइकिल से गिर गया है। उसके माथे से खून बह रहा है।''

''मैं देख कर आता हूं!'' डॉक्टर देसाई को चिंता हुई और वह जीप से बाहर निकले।

''मैं भी आती हूं!'' कहकर वसुधा भी जीप से उतर गई।

''ध्यान से बेटा!'' नेगी आंटी ने उसे छूकर कहा।

उनके हाथ पर अपना हाथ रखकर वसुधा ने ''जी मां!'' कहा और आगे बढ़ गई।

भीड़ को चीर कर जब वह अंदर गई तो एकदम चिल्ला पड़ी ''ताऊ!''

ताऊ ने आंख खोलकर देखा पर वह कुछ बोल नहीं पाए। वसुधा ने उनके हाथ पर अपना हाथ रख दिया और जमीन पर बैठ गई। उनके सर पर चोट के निशान थे। एक हाथ से खून बह रहा था।

डॉक्टर देसाई ने कुछ लोगों से कहा ''इनको गाड़ी तक ले जाने के लिए मदद करो!'' कुछ लोग एकदम से आगे बढ़े। वसुधा भी उन्हें उठाने के लिए झुकने लगी तो नेगी आंटी ने उसके हाथ को रोकते हुए कहा, ''बेटा अभी भारी काम नहीं! लोग इनको रख देंगे। मैं आगे बैठ जाती हूं। तुम पीछे बैठकर इनका सर अपनी गोदी में रख लेना।''

वसुधा उनकी बात मान, आगे बढ़कर जीप में बैठ गई। ताऊ लगभग बेसुध थे। थोड़ी आंख खोलते फिर बंद कर लेते। अस्पताल पहुंच कर नेगी आंटी ने तत्परता दिखाई। वहां के लोग उनको जानते थे।

एक वार्ड बॉय उनको दिखा। उन्होंने उसी को आवाज लगाकर कहा ''जल्दी करो एक स्ट्रेचर लेकर आओ! साथ में ड्यूटी पर कौनसे डॉक्टर हैं? उनको भी लेकर आओ! कहना नेगी आंटी बाहर खड़ी है!''

''जी मैडम!'' कहकर वह लड़का भागता हुआ गया। थोड़ी देर में दो व्यक्ति एक स्ट्रैचर के साथ भागते हुए आ रहे थे। एक डॉक्टर और एक नर्स भी आ गए। उन सब ने नेगी आंटी को नमस्कार किया।

ताऊ को गाड़ी से बाहर निकालकर स्ट्रेचर पर रखा। वसुधा अभी भी ताऊ का हाथ पकड़े उनके पास खड़ी थी।

डॉक्टर ने नेगी आंटी से पूछा ''क्या हो गया? चोट कैसे आई?''

''इनको सड़क पर गिरे हुए देखा और उठा कर ले आए। इनकी हालत बात करने जैसी नहीं है। यह वसुधा के ताऊजी हैं।''

''इनका ड्रेसिंग करते हैं। साथ ही चेकअप कर लेते हैं। पता चल जाएगा कि चोट सिर्फ बाहरी है या कुछ अंदरूनी भी है।''

''आप लोग बैठें।'' कहते हुए डॉक्टर आगे बढ़ गए।

''मैं भी एक डॉक्टर हूं। यदि आप चाहें तो...'' डॉक्टर देसाई ने आगे बढ़कर कहा।

''हां, आप आइये ना!''

ताऊ को लेकर वह सब आगे बढ़ गए। वसुधा और नेगी आंटी एक जगह लगी कुर्सियों पर बैठ, उनके बाहर आने का इंतजार करने लगे। उनके घाव पर ड्रेसिंग और हाथ पर पट्टी बांध दी गई थी।

नेगी आंटी ने डॉक्टर से पूछा ''क्या हुआ?''

''इनके सर पर गहरी चोट लगी है। वह किसी भारी चीज से मारने से या टकराने से आई है। उसी चोट के कारण इनको होश में आने में समय लग सकता है। कुछ दवाइयां शुरू कर दी हैं। शाम तक इंतजार करते हैं। फिर आगे सोचते हैं। अभी सीटी स्केन करने वाला टेक्नीशियन बाहर गया है। जैसे ही आता है वो करवा लेते हैं। पता

चल जाएगा कि सर की चोट कैसी है। कुछ गंभीर बात हुई तो आपको जबलपूर जाना होगा। बस, थोड़ा इंतजार कर लीजिए!''

''ठीक है!'' इतना ही कह पाई थी वह। आगे की गंभीरता के बारे में अभी से कुछ भी नहीं कह सकते हैं। जो होगा देखा जायेगा। हां, जबलपूर जाना पड़ा तो सूरज की सहायता मिल जायेगी। यह सोचकर उन्हें संतोष मिला।

शहर में अपना कोई घर हो तो बेहतर होता है। वसुधा चुपचाप ताऊ का हाथ पकड़ कर उनके पास बैठ गई।

नेगी आंटी ने स्थिति को देखकर डॉक्टर देसाई से कहा, ''बहन जी, अब आज आप भी यहीं रुक जाइए!''

''मैं थोड़ी देर यहीं बैठी हूं फिर घर जाकर सबके खाने का इंतजाम करती हूं।''

''मां, मुझे खाना नहीं खाना है। पहले ताऊ को होश आ जाए...''

''उनको होश आ जाएगा। पर उसके लिए तुम्हें भूखा रहना जरूरी नहीं है। उनकी सेवा करनी है तो स्वस्थ रहकर ही कर पाओगी।'' थोड़ी देर बाद नेगी आंटी चली गईं। डॉक्टर देसाई उन्हें छोड़ने गए। वसुधा अकेली ताऊ के पास बैठी थी।

ताऊ की ख़बर ताई तक भी पहुंच गई। किसी ने घर जाकर बताया कि ''ताऊ सड़क पर गिर गए थे। कुछ लोग उनको अस्पताल ले गए हैं!'' आज पहली बार ताई घबराई।

संग्राम को अपने साथ लेकर वह अस्पताल के लिए निकली।

''जो आदमी ख़बर देने आया था, वह क्या कह रहा था?'' ताई ने संग्राम से पूछा।

''सर में किसी चीज से चोट आई है और सर से खून बह रहा था। उसने तो यही कहा।''

''कितनी बार मना किया है कि सवेरे-सवेरे पैसे की रार मत कर! पर तेरे भेजे में कोई बात नहीं आती है।'' ताई ने उसे गुस्से से कहा।

''मैंने कोई रार नहीं करी थी। सिर्फ पैसे मांगे थे। मना किया तो एक धक्का दे दिया था।''

अपने भाई से बहस करती ताई, ताऊ के बिस्तर तक पहुंच गई। ताऊ के पास बैठे वसुधा को देखा तो ताऊ को भूलकर उन्होंने वसुधा से गुस्से में पूछा ''तू यहां कैसे आ गई? अभी तेरा मन नहीं भरा क्या अपने घर को बर्बाद करके। जो फिर चली आई। पहले बाप, फिर मां सबको तो खा चुकी है। तू अब यहां क्यों आ गई है?'' वसुधा के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकल पाया।

वह क्या कहती, उसे ताऊ को देखकर याद आया कि उसका परिवार भी है। उनकी आवाज सुनकर एक डॉक्टर ने वहां आकर कहा ''यहां आप शोर मत कीजिए! मरीज को परेशानी होगी। इनका स्केन होना है। लड़का आ गया है। आप पैसे जमा कर दीजिए!''

''संग्राम, जा घर से पैसे लेकर आ।'' कहते हुए ताई ने अपनी अलमारी की चाबी, आज पहली बार उसे दे दी थी।

''अभी आता हूं!'' लपक कर चाबी लेते हुए उसने कहा।

सड़क पर ताऊ को उस हाल में देखकर उसका मन बहुत दुखी हो गया था। बस उन्हीं की देखभाल के नाम पर वसुधा यहीं रुक गई थी। उसे तो याद ही नहीं आया कि वह ताऊ से कुछ महीनों से दूर रह रही थी। उसे क्या पता था कि ताई आज भी वैसी ही हैं।

उसे उम्मीद थी कि ताई कहेगी 'तूने अच्छा किया जो ताऊ को अस्पताल ले आई।' पर उसकी जगह ताई को उसके होने से भी परेशानी है। भारी मन से वह कमरे से बाहर निकल निकल गई और अस्पताल के बाहर बनी सीढ़ियों पर बैठ गई।

वक्त की करवट

रात कितनी भी दर्द भरी हो, सवेरे को कौन रोक सकता है? जैसे सूरज और चांद हमें सुबह और रात देते हैं वैसे ही जीवन का चक्र है। सुख हो या दुख सबको घूमते रहना है।

आज कबीर स्कूल से आने के बाद बहुत बेचैन था। उसे रह-रहकर ताऊ की याद आ रही थी। वह बाहर टहल रहा था। उसे रेड्डी अंकल ने देख लिया। ''क्या बात है कबीर? आज इस समय बाहर क्यों टहल रहे हो?''

''अंकल, कल ताऊ आए थे। वह घर के झगड़े से बहुत परेशान थे। कह रहे थे कि आज तो संग्राम को घर से ही निकाल दूंगा। साथ में चाहे तेरी ताई भी घर से चली जाए। अब उन दोनों के जुल्म नहीं सहने हैं। आज वह आए नहीं, तो उनकी चिंता हो रही है। कहीं उन्होंने सचमुच घर में कोई झगड़ा तो नहीं कर लिया?''

''सोच क्या रहे हो? जाओ, जाकर देखो! पता चल जाएगा। वह कैसे हैं? यह लो गाड़ी की चाबी।'' रेड्डी अंकल ने अंदर से चाबी लाकर कबीर को देते हुए कहा।

''मैं पैदल ही चल जाता हूं।''

''अरे, नहीं उनका घर दूर है। गाड़ी से जाओ!'' कबीर उनके स्नेह के आगे क्या कहता? उसने गाड़ी की चाबी ली और वह ताऊ के घर गया। उसे बाहर ही बैठा हुआ संग्राम मिल गया। वह शराब पी रहा था।

''संग्राम, आज ताऊ घर नहीं आए तो उनसे मिलना...''

''उनसे मिलने के लिए अस्पताल जाना पड़ेगा। वहीं चले जाओ!''

''अरे, क्या हो गया उनको?'' कबीर सुनकर घबरा गया।

''घर से निकले थे। किसी से टकरा गए, तो गिर पड़े। अपना सर फोड़ लिया।'' लापरवाही से जवाब देते हुए उसने कहा।

''ताई कहां है?''

''अस्पताल में।'' किसी के अस्पताल में भर्ती होने पर क्या कोई इतने आराम से बात कर सकता है? संग्राम को बिना कुछ कहे कबीर आगे बढ़ गया। वह सोच रहा था कि यह इस समय अस्पताल में क्यों नहीं है? इसे तो ताऊ के पास होना था। यही सब सोचते-सोचते कबीर अस्पताल पहुंचा।

सीढ़ियों पर बैठी वसुधा को देखकर कबीर के पैर ठिठक गए। उसकी सांस ही रूक गई। सिर्फ उसके मुंह से निकल पाया ''वसु!''

आश्चर्य से उसे देखते हुए बोली ''कबीरा!'' आश्चर्य और खुशी से वसु एकदम से खड़ी हो गई! कबीर को देखकर उसकी समझने की शक्ति ही खतम हो गई।

''तू यहां कैसे?'' कबीर सपने में भी सोच नहीं सकता था कि आज उसे यहीं गाडरवारा में वसु मिल जायेगी।

''मैं कुचवाड़ा जा रही थी। रास्ते में ताऊ को गिरा हुआ देखा तो हम उन्हें अस्पताल में ले आए। उनके सर पर गहरी चोट आई है। अभी तो होश भी नहीं आया है। ताई अंदर आ गई हैं। उन्होंने मुझे बाहर निकाल दिया।''

''तुझे बाहर निकाला?'' कबीर ने गुस्से से पूछा।

''जो अपने मां-बाप को खा गई! अब ताऊ को खाने वाली है।'' वसु ने वही शब्द दोहरा दिए जो ताई ने कहे थे।

''पागल हो गई है क्या? क्या कह रही है? ताऊ तुझे रात-दिन याद करते हैं। तेरे जाने के बाद एक दिन भी चैन से नहीं रहे! ताई ने और उनके भाई ने ताऊ का बहुत बुरा हाल किया है। वह रोज मेरे पास आते थे।''

''तू यहीं रहता है क्या?''

''हां, मेरी सरकारी स्कूल में नौकरी लग गई है। मैं पिछले दो महीने से यहीं हूं।''

''तेरा परिवार?''

''मेरा काहे का परिवार?''

''क्यों वह रुबी?''

''तारा की बीमारी के समय उनकी कोचिंग में नौकरी की थी। उन लोगों ने मुझे पैसों से भी बहुत सहायता की थी। तारा, मां और बाबू जी के न रहने के बाद मैंने रुबी से शादी भी कर ली थी। अब तो मैं यहां अकेला रहता हूं। मैंने रुबी को तलाक दे दिया हैं!''

''कबीरा, मां-बाबूजी और तारा तीनों एक साथ?'' सुनकर एकबार फिर वहीं सीढ़ियों पर बैठ गई। उसकी आंखों में आंसू भर आए।

''हां, मैं किसी को भी नहीं बचा पाया। सब एक-एक करके मेरा साथ छोड़ कर चले गए। तारा के जाने के गम में पहले बाबूजी और फिर मां भी चली गईं।''

''मैं एक बार भी उनसे मिल न पाई, उनको देख न पाई! ऐसी कैसी हो गई मैं?'' बहते आंसूओं को पोंछते हुए उसने कहा।

''तुझ पर भी तो बहुत परेशानियां थीं। तू भी क्या करती? हम सब अपने-अपने दुखों और मजबूरियों से बंधे हुए थे। तू कहां रह रही है? क्या कर रही है?'' कबीर को ख्याल आया कि वह सबसे पहले यह जाने कि आज वह कहां है और क्या कर रही है?

''एक एनजीओ में काम करती हूं। मैं कुचवाड़ा में रहती हूं। अभी गाडरवाड़ा आई थी। अपने बच्चे की मौत का गम सीने में छुपाए जी रही हूं!''

''तेरी शादी हो गई? किससे, कौन है वह?'' कबीर ने दुखी होकर पूछा।

''शादी कहां हो पाई थी। कबीर की आंखों में देखते हुए वसु ने जवाब दिया।

''तो फिर...'' आगे के शब्द बोलना कबीर के लिए मुश्किल ही रहा। वह घबरा गया किसी ने उसके साथ कुछ... उसके कंधे को छूकर कबीर ने जवाब जानना चाहा था।

''हमारा गंधर्व विवाह हुआ था। राजा दुष्यंत को तो भूलना ही था। फिर ना वह

घर रहा, ना बाबूजी, ना कोई निशानी!'' वसुधा के आंसू और शब्द साथ-साथ निकल रहे थे।

''हमारा बच्चा?'' उसकी बात सुनकर कबीर तड़प कर रह गया। कितनी बड़ी भूल हो गई। उसे एक बार भी ख्याल नहीं आया कि वसु का क्या हाल होगा?

''हां, कबीरा अपना बच्चा! तूने कहा था ना कि तू उन्नीस सौ सत्तर की लड़की नहीं है। तुझे अपनी जिम्मेदारी खुद उठानी होगी। मैंने अपनी जिम्मेदारी उठाने की पूरी कोशिश की थी। उस घर में रहने की एक ही शर्त थी, ताई के भाई से शादी करना! तुम लोगों के जाने के बाद ताई का व्यवहार बहुत बदल गया था। संग्राम की बदतमीजी बढ़ने लगी थी। मैंने घर छोड़ दिया था। नेगी आंटी ने मेरा साथ दिया। बच्चा स्वस्थ पैदा हुआ था। बच्चे ने जन्म भी लिया मगर जन्म लेने के कुछ देर बाद ही वह मर गया! कहते हुए वसुधा ने अपना सिर अपने घुटनों पर टिका दिया और वह सिसक-सिसक कर रोने लगी।

''मैं हार गई कबीरा! ताई सच कह रही है-मैं अपने माता-पिता, हमारा बच्चा सबको खा...''

''पागल हो गई है क्या तू? तुझसे ज्यादा बहादुर तो दुनिया में कोई भी नहीं है। वसु, कैसे तूने अपने आप को संभाला होगा? मुझे माफ कर दे! एक के बाद एक मौत ने सब कुछ भुला दिया। मैं थक गया था। उसी थकान और एहसान में शादी भी हो गई। तुझे जब भी फोन लगाया तेरा फोन स्विच ऑफ आता था। बाद में नंबर ही सर्विस में नहीं था। तो मुझे लगा कि तेरी कहीं शादी हो गई है। तू अब मुझसे रिश्ता रखना पसंद नहीं करती है। मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हुआ! इसकी माफी भी बेकार ही ...''

कबीर की बात को बीच में रखते हुए वसुधा ने कहा ''कुछ मत बोल! मैं उन तीनों में से एक से भी नहीं मिल पाई। इसका अफसोस ज़िंदगी भर रहेगा। तुमने ही नहीं, मैंने भी अपना परिवार खो दिया। मेरे मां-बाबूजी, मैं आज जो भी हूं, उनके कारण ही बन पाई। जिन्होंने मुझे पाला, मैं उनके दुख में उनसे दूर रही। तारा, कितनी सुंदर, कितनी नाजुक थी? उसने आग की जलन को कैसे सहा होगा? इन सबके बीच कबीरा, तू कितना अकेला हो गया होगा। उस दिन तेरी बात सुनकर घर से निकल पड़ी थी। बस, एक ही बात मन में थी कि इस बच्चे को जन्म देना है। तुम सब के बारे में

सोचना शायद मैं भूल ही गई थी। मुझे तो तुम सबसे मिलने आना था। मुझे लग रहा था कि मेरा होना तुम्हारी परेशानी को बढ़ा देगा इसलिए मैंने अपने आप को तुम सबसे अलग कर लिया था। तारा के जलने के बाद कोई और बात सोच ही नहीं पाई। यह तो कभी मन में भी नहीं आया कि उनमें से एक भी जिंदा...''

कबीर ने वसुधा के सर पर हाथ रख कर कहा ''जब से पता चला कि तूने घर छोड़ दिया है। बहुत तरह के ख्याल मन में आते थे। बस एक ही बात का डर था कि मेरी खोज, तेरा कोई नुकसान ना कर दे। तेरा मिलना तो... ऐसा है जैसे मेरी सारी दुआएं कुबूल हो गई। चल उठ! पहले ताऊ को देखते हैं!''

कबीर ने आगे बढ़कर वसुधा का हाथ थामा। वसुधा इसी दिन के इंतजार में जी रही थी। उसने अपना हाथ कबीर के हाथ में दिया तो उसे ऐसा लगा कि आज उसके पैरों में पहली बार आगे बढ़ने की वह ताकत आ गई है, जिसका इंतजार भी वह नहीं करती थी।

अंदर एक बार फिर, वसुधा को देखकर ताई भड़क उठी।

''तू अभी तक यहीं है?'' जाती क्यों नहीं है? यहां तेरे ताऊ को देखने के लिए संग्राम है। वह सब संभाल लेगा! हमें तेरी कोई जरूरत नहीं है! वह पैसे लेकर आ रहा है! जो मुंह काला करके जा चुकी है। उससे हमारा कोई मतलब नहीं है।''

''पुलिस को इस बात से मतलब हो सकता है कि ताऊ के सर पर चोट कैसे आई? ताई, संग्राम तो घर में बैठा शराब पी रहा है। मुझे नहीं लगता कि वह आपके पास आएगा। किसी भी काम की जरूरत हुई तो हम दोनों ही ताऊ को...''

''पेशेंट को सीटी स्कैन के लिए ले जाना है। आप पैसे जमा कर रसीद लेकर आइये।'' नर्स ने एक पर्ची पकड़ाते हुए कहा।

''जी, मुझे दीजिए! मैं अभी पैसे जमा करके आता हूं!'' कबीर बाहर चला गया। वसुधा, ताऊ और नर्स के साथ आगे बढ़ गई।

कर्मफल

ताई वहीं खड़ी सोच रही थी कि वह किस दिशा में आगे बढ़े। थोड़ा रुक कर वह बाहर की ओर निकल गई। तेजी से अपने घर की ओर... घर खुला पड़ा था। संग्राम कहीं नहीं दिखाई दे रहा था। ताई ने कई बार आवाज लगाई पर कोई जवाब नहीं मिला। अपने कमरे में जाकर देखा तो उसका मुंह खुला का खुला ही रह गया।

जिस अलमारी की चाबी संग्राम को दी थी, वह खुली पड़ी थी। ताई अपनी अलमारी के पास पहुंची तो चिल्ला उठी ''सारा गहना ले भागा!'' वह वहीं जमीन पर बैठ गई।

ताऊ के सीटी स्कैन की रिपोर्ट नॉर्मल आई। जो सबके लिए बहुत खुशी की बात थी। थोड़ी देर बाद ताऊ को होश आ गया। उन्हें सर और चेहरे के घाव की वजह से बोलने में दिक्कत हो रही थी। पर वह वसुधा और कबीर को हाथ से आशीष देकर यह कहना चाह रहे थे कि उन दोनों को देखकर वह बहुत खुश हैं!

''ताऊ को इस समय सेवा की जरूरत है। मुझे नहीं लगता है कि ताई मुझे ताऊ के पास रहने देगी।''

''तू यहीं रह कर आराम से ताऊ की सेवा करेगी! ताई से डरने की कोई जरूरत नहीं है!''

''वो कैसे? तू ताई से झगड़ा करेगा?''

''नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं है।'' कबीर और वसुधा बात कर रहे थे कि कबीर का फोन बज उठा।

रेड्डी अंकल का फोन था।''कबीर तुम कहां हो?''

''मैं अस्पताल में हूं!''

‘‘अरे, अस्पताल में क्यों?’’

‘‘ताऊ को देखने उनके घर गया था तो पता चला उनका सड़क पर एक्सीडेंट हो गया है। वह अस्पताल में हैं, तो मैं यहां आ गया!’’

‘‘क्या हुआ उनको?’’

‘‘सर पर चोट आ गई है। अभी कुछ मिनट पहले ही होश आ गया है!’’

‘‘एक काम था बेटा।’’

‘‘जी, बोलिए ना क्या बात है?’’

‘‘तुम्हारी आंटी को बुखार आ गया है! ठंड लगकर! वह कांप रही है। मैं उसे लेकर डॉक्टर के...’’

‘‘अरे, आप घर पर ही रहें, आंटी के पास। मैं डॉक्टर को लेकर घर ही आ रहा हूं! बस, पांच मिनिट!’’

वसुधा अस्पताल की खिड़की में खड़ी थी। कबीर उसके पास गया और उसे बोला–‘‘वसु, मैं थोड़ी देर में आ रहा हूं!’’

उसकी आंखों में आसूं देखकर कबीर बोला –‘‘अरे, तू रो क्यों रही है?’’

‘‘कितने समय बाद तू मिला है कबीरा! अब कहां जा रहा है?’’ एक लंबी दर्द भरी जुदाई की छाप अभी वसु के मन में थी।

कबीर ने वसुधा के कंधे पर हाथ रख कर कहा –‘‘जिनके घर में किराए से रहता हूं। उन आंटी को बुखार आ गया है। उनके पास जा रहा हूं। दवाई और डॉक्टर का काम करके अभी आ जाता हूं तेरे पास! ताऊ अकेले हैं। नहीं तो तू भी मेरे साथ चलती। तुझे देखकर अंकल–आंटी बहुत खुश होते।’’

वसुधा की आंखों में देखते हुए उसने पूछा–‘‘मैं जाऊं?’’

वसुधा सिर्फ अपनी गर्दन ही हिला पाई। उसने कबीर के हाथ पर अपना हाथ रख दिया। कबीर बाहर निकल ही रहा था कि नेगी आंटी आ गईं।

‘‘कबीर तुम यहां?’’

‘‘जी आंटी, मेरे ताऊ का एक्सिडेंट...’’

‘‘यहां तो वसुधा के ताऊ एडमिट हैं...’’ नेगी आंटी को देखकर वसुधा उनके पास आ गई।

कबीर ने उनसे पूछा, ‘‘आंटी आप यहां कैसे?’’

‘‘वसुधा के ताऊ के कारण। पिछले कुछ महीनों से वसुधा मेरे एनजीओ में काम कर रही है।’’

‘‘मां, यह कबीर हैं। मेरे बच्चे के...’’

‘‘अरे, यह तो जिस दिन गाडरवाड़ा में आए थे, तब सबसे पहले हमारे घर पर ही आए थे। किसे पता था कि तुम इनका इंतजार कर रही थी। सब ईश्वर की मर्जी है! जिसे जब मिलना होता है, तब ही मिलता है।’’

‘‘आप कहीं जा रहे हो क्या?’’

‘‘हां, रेड्डी आंटी को बुखार आ गया है। उनकी गाड़ी मेरे पास है। डॉक्टर को लेकर घर जा रहा हूं। आप आ गए हो तो क्या मैं वसु को अपने साथ ले जाऊं! अंकल–आंटी इससे मिलकर बहुत खुश होंगे।’’ कबीर वसु को अपने साथ ही ले जाना चाहता था। नेगी आंटी के आने पर उसकी इच्छा पूरी हो गई।

‘‘हां, जरूर! मैं यहां ताऊ के पास बैठी हूं। आप उनसे मिल आओ!’’

छोटी जगह का अपनापन भी बड़ा गहरा होता है। कबीर ने डॉक्टर को अपने साथ चलने को कहा तो वह एक मिनिट में तैयार हो गए। रेड्डी आंटी को बहुत तेज़ बुखार आ गया था। डॉक्टर का घर जाना ही ठीक रहा।

इस हालत में वह पलंग से भी नहीं उठ सकती थीं। जरूरी दवाई लेने और डॉक्टर को छोड़ने के लिए कबीर बाहर निकलने से पहले इतना ही कह पाया – ‘‘अंकल यह वसुधा है। आपकी होने वाली बहू!’’ अंकल ने वसुधा के सर पर हाथ रख कर उसे आशीर्वाद दिया।

वसुधा जितनी देर उन दोनों के पास बैठी उनसे बात करती रही। वह ताऊ के बारे

में उनको बता रही थी। आंटी बुखार के कारण कांप रही थीं। वसुधा ने उनसे पूछा ''क्या मैं आपके लिए चाय बना दूं?''

''हां, बेटा चाय बना दे। तब तक इनकी दवा भी आ जाएगी।''

वसुधा ने उनके लिए चाय बनाई। तब तक कबीर भी दवाई लेकर आ गया था। आंटी ने पहले चाय पी और उसके बाद वसुधा ने ही उन्हें दवाई दी।

कबीर ने अंकल-आंटी को बताया कि ''ताऊ के पास रात रहने के लिए उन्हें वापस जाना पड़ेगा। रात में उनके पास ताई रहे, यह जरूरी नहीं है!''

रेड्डी आंटी ने अंकल से कहा ''अरे, मेरी अलमारी में से वह सिल्क की साड़ी तो ले आओ, जो चिराग लाया था। बहू पहली बार घर आई है। उसे कुछ तो देना होगा। बहु खाली हाथ कैसे जाएगी?''

''आंटी, अभी आपकी हालत ठीक नहीं है, परेशान ना हों! वसुधा कल आपसे मिलने आ जाएगी। तब आप उसे कुछ दे देना।'' कबीर ने कहा।

''अरे, नहीं! पहली बार का मिलना तो पहला ही होता है। मैं तो सोई हूं। तेरे अंकल दे देंगे।'' अंकल मुस्कुराते हुए अंदर गए और एक साड़ी ले आए। वह साड़ी उन्होंने आंटी के हाथ पर रख दी।

आंटी ने वसुधा को अपने पास बुलाया और उसे वह साड़ी दी। अपने कांपते हाथों से उसे आशीर्वाद देते हुए कहा ''सदा सुखी रहो बेटा!'' उसके सर पर हाथ रखते हुए उन्होंने कहा। वसुधा ने अंकल आंटी दोनों के पैर छुए और वह दोनों वहां से बाहर निकले।

अंकल के घर से बाहर निकलते हुए कबीर ने वसुधा से कहा ''वसु, एक मिनिट, कुछ पैसे लेकर चलते हैं।''

घर में घुसते ही वसुधा की नजर दीवार पर लगी तस्वीरों पर गई और वह उन तस्वीरों के पास जाकर खड़ी हो गई। एक तस्वीर जिसमें मां-बाबूजी का फोटो था और एक तारा का फोटो था। वसुधा को वहां खड़ा देख कबीर भी उसके पास चला गया। वसुधा ने वहां रखे दीए को उठाया। उसमें घी-बाती डालकर उसे जलाने लगी। दीया जलाते-जलाते उसकी आंखों से आंसू बह निकले।

''तू आखरी समय तक उनके पास तो था। मैं तो उनमें से एक को भी देख नहीं पाई, ना मिल पाई। कितनी बड़ी भूल हो गई मुझसे।'' कहते हुए वसुधा ने दीवार पर अपना सिर लगा दिया और सिसक उठी। उसे लगा, यहीं मां-बाबूजी के पैर हैं और वह उनको छू रही है।

कबीर ने उसके सर पर हाथ रखकर कहा ''सबसे बड़ी भूल तो किस्मत ने ही कर दी थी। किसे पता था कि तारा जल जाएगी। उसके जलने के बाद पूरा परिवार खत्म हो जाएगा। यह फोटो जो मैंने दीवार पर लगाई है, वो घर बेचने के बाद जब घर का सामान चाचा ने जबलपुर भिजवाया था। उसी में से यह फोटो मिल गई थी। वसु, तारा का यह फोटो दीवार पर तो लगा है मगर यह फोटो दिख कर भी नहीं दिखता है। मेरी आंखों में तारा का वही चेहरा रहता है जो जला हुआ था। मां-बाबूजी भी इतने जवान और खूबसूरत नहीं दिखते। तारा के जलने के बाद उनका बुझा चेहरा, मायूस आंखें ही मुझे याद आती है। इन सब के जाने के बाद जो गुनाह मुझसे हुआ उसके लिए वसु मैं तुझसे माफी मांगता हूं। मुझे माफ कर दे! तूने बहुत दुख देखे हैं। उसकी जिम्मेदारी भी कहीं ना कहीं मेरी ही है।''

''कबीरा, तू माफी मांग कर मुझे मेरे अपने परिवार से अलग कर रहा है। हम सब एक परिवार ही हैं। तुझे माफी मांगने की जरूरत नहीं है। इतने दुख और मजबूरी के चलते हैं जो भी हो जाता, कम ही था। यह भी क्या कम है कि हम दोनों आज फिर मिल पाए। इससे बड़ी खुशी क्या हो सकती है?''

''वसु तुझसे एक बात पूछनी है?''

''बोल ना, क्या हुआ?''

''मेरे लिए मां-बाबूजी की तस्वीर के सामने की इस जगह से ज्यादा पवित्र और बड़ी जगह कोई नहीं है। मेरा मंदिर, मेरी दुनिया सब कुछ यहीं है। हर पल शुभ है। मैं किसी मुहूर्त को भी नहीं मानता। बहुत देर हो गई पर अब और देर करना नहीं चाहता हूं। तूने पूछा था ना कि तू ताऊ की सेवा कैसे कर पाएगी?''

''हां! तो?''

''उसका जवाब है कि तू मेरी पत्नी बन कर ताऊ की सेवा करेगी। हम ताऊ को इस घर में रखेंगे। अपने साथ, अपने पास!''

''कबीरा तेरा दिल ...''

''क्या इसी जगह, इसी समय मैं तेरी मांग में सिंदूर भर सकता हूं?''

''कबीरा!'' कहकर वसुधा कबीर की बाहों में समा गई। उसकी आंखों से वह सारे आंसू बह निकले जो उसने इतने महीनों से अपने अंदर जमा किए थे। एक गहरा आलिंगन युगों के दर्द को एक पल में गायब कर देता है। मिलन का एक पल, लंबी जुदाई पर भी भारी पड़ता है।

कबीर को छूते हुए वसुधा ने कहा ''मन की शादी हो चुकी कबीरा। अब संसार के लिए जो शादी होनी है वह इसी कमरे में इसी जगह, किसी भी दिन और किसी भी समय हो जाएगी। उस शादी में नेगी आंटी, जो मुझे अपनी बेटी मानती हैं और ताऊ का होना जरूरी है। ताऊ को ठीक हो जाने दे फिर कभी भी...?''

कबीर ने एक बार फिर वसुधा को अपनी बाहों में ले लिया।

अस्पताल पहुंचने पर ताई सीढ़ियों पर बैठी हुई दिख गईं। वसुधा ठिठक कर रुक गई।

''क्या हुआ ताई?''

''संग्राम, घर का सारा सोना लेकर भाग गया!''

''क्या? कबीरा रूक! अब हम क्या करें?''

''जो करना है वह तो ताई ही करेंगी। हमारा इनसे कोई मतलब नहीं है। अब ताऊ की सेवा करें या इनके भाई के साथ चोर-पुलिस का खेल खेलें?''

''तू कैसे बात कर रहा है? उनका सामान चोरी...''

''तुझे सोने की चिंता है? ताऊ को दुख देते समय और तुझे घर से निकालते समय इन्होंने किसका ध्यान किया था? तू कहां गई, तेरे साथ क्या हो सकता था? इनको किसी से मतलब नहीं है। तो अब मुझे भी इनसे कोई मतलब नहीं है।'' कहता हुआ कबीर गुस्से से आगे बढ़ गया।

वसुधा उन दोनों के बीच खड़ी सोच रही थी कि वह अब क्या करे?

''तू अपने ताऊ के पास जा। मुझे यहीं...'' ताई की दर्द भारी आवाज़ ने उसको दुखी कर दिया।

''ताई तुम भी अंदर तो चलो! यहां अकेली मत बैठो! उठो!'' कहते हुए वसुधा उन्हें अपने साथ अंदर ले गई।

अंदर ताऊ के पास नेगी आंटी बैठी हुई थीं। अब ताऊ आंखें खोले वसुधा और कबीर को देख रहे थे। उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ाया और वसुधा उनका हाथ पकड़ कर वहीं बैठ गई। जैसे ही ताऊ की नजर ताई पर गई उन्होंने सामने पड़ा गिलास उठाया और ताई के ऊपर के ऊपर फेंक दिया।

वह बहुत जोर से चिल्लाए ''निकल!'' चेहरे के घाव के कारण उनके बोलते ही उनके टांकों में से खून निकलने लगा। खून को देखकर वसुधा घबरा गई। उसने ताऊ के चेहरे पर हाथ रख दिया और कहा ''तुम कुछ मत बोलो ताऊ!''

कबीर नर्स को बुलाने के लिए भागा और ताई डर कर बाहर चली गई। ताऊ का ड्रेसिंग दोबारा करना पड़ा। उनके टांकों में से खून आने लगा था। थोड़ी देर नेगी आंटी वहां बैठी और वह चली गईं। रात को वसुधा और कबीर ताऊ के पास रुके थे।

ताई अभी भी अस्पताल के बाहर वहीं सीढ़ियों पर बैठी थी, जहां कुछ घंटे पहले वसुधा बैठी थी। जिसने ज़िंदगी भर चालें चल चलकर सबको हराया आज वह खुद अपनी ही गोटी से मात खा गईं थीं। दूसरों को हराना आसान है पर अपने आपसे हार जाना सबसे दुखद है।

वही दुख आज ताई भोग रही थी। वसुधा ने उनसे कहा भी, ''ताई, घर जाकर आराम कर लो! हम ताऊ के पास हैं। आप चिंता मत करो!''

''चिंता नहीं कर पाई उसी का फल भुगत रही हूं। मैंने तुझे तेरे ताऊ के पास बैठने नहीं दिया तो उसका फल तो मिलना ही है। मैं यहीं अच्छी हूं! तू मेरी चिंता मत कर! जा, अपने ताऊ के पास जा। जबसे तू गई है वह तुझे बहुत याद करते थे।''

''ताई!'' वसुधा उनके हाथ को छूकर सिर्फ इतना ही कह पाई थी।

अंदर आकर वसुधा ने कबीर से कहा ''ताई की हालत देखकर बहुत दुख हो रहा है।''

''उन जैसे लोगों के लिए क्या दुखी होना !''

''कबीरा, इतनी नफरत ठीक नहीं ! तुझे क्या हो गया है? ताई अपनी ग़लती की सजा खुद ही भुगत रही हैं। ताऊ का सड़क पर गिरना, हमारा मिलना यह सब क्या है? एक पल भी आगे-पीछे होता तो मैं ताऊ को नहीं देख पाती। मैं बुराई की हिमायत नहीं कर रही हूं। जीवन जिन रास्तों से होकर गुजरता है उसे समझने की कोशिश कर रही हूं। कितना कुछ हुआ, हमारे हाथ में क्या था? सिर्फ हमारे दिल में बसी नेकी ही हमारी दौलत है। बाकी सब कुछ किसी अदृश्य शक्ति से चल रहा है। कितने दुख सहने के बाद भी बाबूजी भी तो अच्छाई का हाथ थामे चलते रहे। आज हमको भी चलना होगा ! हम अपने पिता को क्या जवाब देंगे? जब हम नफरत का दामन थामे चल रहे हैं। क्या हम नफरत को छोड़ नहीं सकते हैं...?''

वसुधा की बात को बीच में रोककर कबीर ने कहा ''तू सच ही कहती है कि बाबूजी मुझसे ज्यादा तेरे ही हैं। तूने उनको मुझसे ज्यादा समझा है।''

एक चादर उठा कर कबीर ने कहा ''ताई को ओढ़ा कर आता हूं !''

''रुको !'' कहते हुए वसुधा ने उसके हाथ में एक चादर और देते हुए कहा ''इसे सर के नीचे रख देना।''

कबीर की आंखों में भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। उसने वसुधा को छूते हुए कहा ''कहां से ले आई ऐसा दिल? जिसने घर में कभी चैन से जीने नहीं दिया... उसके लिए भी ...''

वसुधा कुछ नहीं कह पाई। क्या कहती कि उसे जो मिल गया है उसके आगे वह ताई तो क्या पूरी दुनिया को प्रेम करने लगी है। कबीर को बाहर जाते हुए वसुधा देख रही थी।

ताई एक दीवार से पीठ लगाकर बैठे-बैठे ही सो रहीं थीं। कबीर ने ताई को चादर ओढ़ा दी। उन्होंने आंख खोलकर कबीर को देखा। आज पहली बार उसे 'बेटा' कहा। कबीर ने उनके सिर के नीचे मुड़ा हुआ चादर लगाया और आगे बढ़ा।

जब वह वापस आ रहा था तो उसने देखा वसुधा दूर से खड़ी उसको देख रही थी। उसके पास आते ही उसने देखा वसुधा की आंखों से आँसू बह रहे थे। उसे देख कबीर की भी आँखें भर आईं।

''अब तो तेरे बाबूजी खुश होंगे ना?'' कबीर ने वसुधा को देखते हुए पूछा।

''हमारे मां-बाबूजी बहुत खुश हो रहे हैं।'' कहकर वसुधा सिसक उठी। उसके कंधे पर हाथ रखकर कबीर भी सिसक उठा। उन्होंने एक-दूसरे का हाथ थाम लिया। आज रात के अंधेरे भी उजालों से भरे हुए थे।

■ ■ ■